

૩૩૩૩

ગુજરાતી પ્રાદ્યમરી નિશાળના ખીજ
ધોરણની સઘળી બાબતોની
ખુલાસાવાર નોટ.

કાઠિઆવાડ ઇલાકાના નકશા સહિત.

છપાવી પ્રસિદ્ધ કરનાર.

કુંવરજી ગગજી ભટ્ટ. (પાણશીયાવાળા)

સ. વનોડપુલર સ્કૂલ ખાતર ઝોફ મોણપુર.

તાબે ચિતલ-કાઠિઆવાડ.

આવૃત્તિ પહેલી.

અમદાવાદ

આયોદય પ્રેસમાં છાપી.

સંવત ૧૯૪૪ ઈ. સ. ૧૮૮૮

કિમત ૮-૬-૬

૩૩૩૩

ગુજરાતી પ્રાદ્યમરી નિશાળના બીજી

સઘળી બાબતોની ખુલાસા:

કાઠિઆવાડ ઇલાકાના નક ... ૧૮૮૬

છપાવી પ્રસિદ્ધ કરનાર.

દુવરજી ગગજી ભટ્ટ. (પાણીશીલાવાળા)

સ. વર્નાક્યુલર સ્કૂલ ભારતર ઓફ મોણપુર.

તાબે ચિતલ—કાઠિઆવાડ.

આવૃત્તિ પહેલી.

અમદાવાદ

આર્યાદય પ્રેસમાં છાપી.

સંવત ૧૯૪૪ ઈ. સ. ૧૮૮૮.

કિંમત ૦—૬—૬

આ યુક સને ૧૮૬૭ ના ૨૫ ગા આકટ મુજબ સરકારમાં રજીસ્ટર
કરાવી ગ્રંથકર્તાએ સર્વ હક સ્વાધિન રાખેલા છે; માટે આ યુક
માંહેલી કાંઈ બાબત, અગર આ યુક માંહેલો ઉતારો
કરી લેવો એ બાબત જોખમ ભરેલું છે.

પ્રસ્તાવના.

આ નોટ બતાવવાનો હેતુ એ છે કે, હાલમાં જૂદા જૂદા વિ-
ષયોપર ધણાંક પુસ્તકો રચાયેલાં છે; પરંતુ ભણનારાઓનો તે બુ-
કોનો જાહે ખર્ચ, મહેનત ને રોકાતો વખત મુંઝવણમાં નાંખી દે છે,
તોપણ જોઈએ તેવો હેતુ પાર પડતો નથી; તે પાર પાડવાના ઈરા-
દાથી આવાં પુસ્તકોની જરૂર જાણી આ પુસ્તક સેવામાં મૂકું છું.

આ પુસ્તક રચવામાં અહીંના પટેલ વધાશીઆ કાનજી પ્રેમજી-
એ નાણાં સંબંધી મદદ આપી છે તેથી તેમનો ઉપકાર માનું છું.

આ મારો પહેલો પ્રયત્ન છે; મારે તેમાં કાંઈ ચૂક જણાય તો
વાંચનારી આલમ દરગૂજર કરશે; તેમજ તથા કાંઈ સુધારવા જેવું
જણાય, તે મહેરબાની કરી લખશે, તો બીજી આવૃત્તિમાં ઉપકાર સા-
થે સુધારીશું.

અચકરાં.



અનુક્રમણિકા.

| ખાખત. | પૃષ્ઠ. |
|--|--------|
| ૧ આંક તથા સંખ્યા | ૧ |
| ૨ પરિમાણ... .. | ૬ |
| ૩ અંકગણિત. | ૧૦ |
| ૪ ધાતો. | ૧૧ |
| ૫ હિંદુના તહેવારો. | ૧૩ |
| ૬ ઋતુ. | ૧૪ |
| ૭ ઇંગ્રેજી મહિના. | ૧૫ |
| ૮ ધાતુ | ૧૬ |
| ૯ ગુ. બીજી ચોપડીના પાઠોની સમજ્યુતી. ... | ૧૭ |
| ૧૦ ગુ. ત્રીજી ચોપડીના પાઠોની સમજ્યુતી. ... | ૨૮ |
| ૧૧ કવિતા.... .. | ૪૬ |
| ૧૨ ડિક્ટેશન વિગેરેના કઠ્ઠીન શબ્દાર્થ. | ૫૧ |
| ૧૩ કાઠિઆવાડ ઇલાકાની ભૂગોળ. | ૬૩ |
| ૧૪ કાઠિઆવાડ ઇલાકાનો નકશો. | ... |
| ૧૫ પરીક્ષાના સવાલો; શીખામણો; જાહેરખબર: ... | ૬૫ |
| ૧૬ અભ્યાસ પત્રક. | ૧૦૦ |



બાણી સંબંધી ફાઈલ.

“આંક લાગે આરંભમાં, પછીથી પુસ્તક અન્ય;”
 “તો વેળા તેની વળે, થાય જીવિત ધન્ય ધન્ય. ૧”
 “બાળકનાં માખાપ સૌ, ધરન્યો શિક્ષા ધ્યાન;”
 “સુધારો નિજ સંતતી, ફર વિદ્યાનું દાન. ૨”

| | | |
|-------------------|-------------------|-------------------|
| ૧ ૧૧ ૧૧ ૧૧ ૧૧ ૧૧ | ૨૧ ૧૧ ૩૧ ૧૧ ૪૧ ૧૧ | ૩૧ ૧૧ ૪૧ ૧૧ ૫૧ ૧૧ |
| ૨ ૧૧ ૩ ૧૨ ૧૧ ૧૮ | ૨૨ ૧૧ ૩૩ ૩૨ ૧૧ ૪૮ | ૩૨ ૧૧ ૪૮ ૩૩ ૧૧ ૪૮ |
| ૩ ૧૧ ૪ ૧૩ ૧૧ ૧૯ | ૨૩ ૧૧ ૩૪ ૩૩ ૧૧ ૪૯ | ૩૩ ૧૧ ૪૯ ૩૪ ૧૧ ૫૦ |
| ૪ ૧૧ ૫ ૧૪ ૧૧ ૨૦ | ૨૪ ૧૧ ૩૫ ૩૪ ૧૧ ૫૦ | ૩૪ ૧૧ ૫૦ ૩૫ ૧૧ ૫૧ |
| ૫ ૧૧ ૬ ૧૫ ૧૧ ૨૧ | ૨૫ ૧૧ ૩૬ ૩૫ ૧૧ ૫૧ | ૩૫ ૧૧ ૫૧ ૩૬ ૧૧ ૫૨ |
| ૬ ૧૧ ૭ ૧૬ ૧૧ ૨૨ | ૨૬ ૧૧ ૩૭ ૩૬ ૧૧ ૫૨ | ૩૬ ૧૧ ૫૨ ૩૭ ૧૧ ૫૩ |
| ૭ ૧૧ ૮ ૧૭ ૧૧ ૨૩ | ૨૭ ૧૧ ૩૮ ૩૭ ૧૧ ૫૩ | ૩૭ ૧૧ ૫૩ ૩૮ ૧૧ ૫૪ |
| ૮ ૧૧ ૯ ૧૮ ૧૧ ૨૪ | ૨૮ ૧૧ ૩૯ ૩૮ ૧૧ ૫૪ | ૩૮ ૧૧ ૫૪ ૩૯ ૧૧ ૫૫ |
| ૯ ૧૧ ૧૦ ૧૯ ૧૧ ૨૫ | ૨૯ ૧૧ ૪૦ ૩૯ ૧૧ ૫૫ | ૩૯ ૧૧ ૫૫ ૪૦ ૧૧ ૫૬ |
| ૧૦ ૧૧ ૧૧ ૨૦ ૧૧ ૨૬ | ૩૦ ૧૧ ૪૧ ૪૦ ૧૧ ૫૬ | ૪૦ ૧૧ ૫૬ ૪૧ ૧૧ ૫૭ |
| ૧૦ ૧૧ ૧૫ ૨૦ ૧૧ ૩૦ | ૩૦ ૧૧ ૪૫ ૪૦ ૧૧ ૬૦ | |
| ૧૨ ૧૧ | ૨૩૨ ૧૧ | ૩૮૨ ૧૧ |
| ૬૧ ૧૧ ૬૧ ૧૧ ૭૧ ૧૧ | ૬૧ ૧૧ ૬૧ ૧૧ ૭૧ ૧૧ | ૭૧ ૧૧ ૭૧ ૧૧ ૮૧ ૧૧ |
| ૪૨ ૧૧ ૬૩ ૫૨ ૧૧ ૭૮ | ૬૨ ૧૧ ૬૩ ૫૨ ૧૧ ૭૮ | ૭૨ ૧૧ ૭૮ ૫૩ ૧૧ ૮૦ |
| ૪૩ ૧૧ ૬૪ ૫૩ ૧૧ ૭૯ | ૬૩ ૧૧ ૬૪ ૫૩ ૧૧ ૭૯ | ૭૩ ૧૧ ૮૦ ૫૪ ૧૧ ૮૧ |
| ૪૪ ૧૧ ૬૫ ૫૪ ૧૧ ૮૦ | ૬૪ ૧૧ ૬૫ ૫૪ ૧૧ ૮૦ | ૭૪ ૧૧ ૮૧ ૫૫ ૧૧ ૮૨ |
| ૪૫ ૧૧ ૬૬ ૫૫ ૧૧ ૮૧ | ૬૫ ૧૧ ૬૬ ૫૫ ૧૧ ૮૧ | ૭૫ ૧૧ ૮૨ ૫૬ ૧૧ ૮૩ |
| ૪૬ ૧૧ ૬૭ ૫૬ ૧૧ ૮૨ | ૬૬ ૧૧ ૬૭ ૫૬ ૧૧ ૮૨ | ૭૬ ૧૧ ૮૩ ૫૭ ૧૧ ૮૪ |
| ૪૭ ૧૧ ૬૮ ૫૭ ૧૧ ૮૩ | ૬૭ ૧૧ ૬૮ ૫૭ ૧૧ ૮૩ | ૭૭ ૧૧ ૮૪ ૫૮ ૧૧ ૮૫ |
| ૪૮ ૧૧ ૬૯ ૫૮ ૧૧ ૮૪ | ૬૮ ૧૧ ૬૯ ૫૮ ૧૧ ૮૪ | ૭૮ ૧૧ ૮૫ ૫૯ ૧૧ ૮૬ |
| ૪૯ ૧૧ ૭૦ ૫૯ ૧૧ ૮૫ | ૬૯ ૧૧ ૭૦ ૫૯ ૧૧ ૮૫ | ૭૯ ૧૧ ૮૬ ૬૦ ૧૧ ૮૭ |
| ૫૦ ૧૧ ૭૧ ૬૦ ૧૧ ૮૬ | ૭૦ ૧૧ ૭૧ ૬૦ ૧૧ ૮૬ | ૮૦ ૧૧ ૮૭ ૬૦ ૧૧ ૮૭ |
| ૬૮૨ ૧૧ | ૮૩૨ ૧૧ | ૬૮૨ ૧૧ |
| | | ૧૧૩૨ ૧૧ |

(୨)

| | | | |
|------------|------------|------------|------------|
| ୮୧ ୧॥ ୧୨୧॥ | ୮୧ ୧॥ ୧୩୬॥ | ୧ ୨॥ ୨॥ | ୧୧ ୨॥ ୨୭॥ |
| ୮୨ ୧॥ ୧୨୩ | ୮୨ ୧॥ ୧୩୮ | ୨ ୨॥ ୩ | ୧୨ ୨॥ ୩୦ |
| ୮୩ ୧॥ ୧୨୪॥ | ୮୩ ୧॥ ୧୩୯॥ | ୩ ୨॥ ୭॥ | ୧୩ ୨॥ ୩୧॥ |
| ୮୪ ୧॥ ୧୨୫ | ୮୪ ୧॥ ୧୪୧ | ୪ ୨॥ ୧୦ | ୧୪ ୨॥ ୩୩ |
| ୮୫ ୧॥ ୧୨୬॥ | ୮୫ ୧॥ ୧୪୨॥ | ୫ ୨॥ ୧୨॥ | ୧୫ ୨॥ ୩୫॥ |
| ୮୬ ୧॥ ୧୨୭ | ୮୬ ୧॥ ୧୪୪ | ୬ ୨॥ ୧୩ | ୧୬ ୨॥ ୪୦ |
| ୮୭ ୧॥ ୧୩୦॥ | ୮୭ ୧॥ ୧୪୫॥ | ୭ ୨॥ ୧୪॥ | ୧୭ ୨॥ ୪୨॥ |
| ୮୮ ୧॥ ୧୩୨ | ୮୮ ୧॥ ୧୪୭ | ୮ ୨॥ ୧୫ | ୧୮ ୨॥ ୪୪ |
| ୮୯ ୧॥ ୧୩୩॥ | ୮୯ ୧॥ ୧୪୮॥ | ୯ ୨॥ ୧୬॥ | ୧୯ ୨॥ ୪୬ |
| ୯୦ ୧॥ ୧୩୪ | ୧୦୦୧॥ ୧୪୦ | ୧୦ ୨॥ ୧୭ | ୨୦ ୨॥ ୪୮ |
| ୧୨୮୨॥ | ୧୪୩୦॥ | ୧୩୭॥ | ୩୮୮॥ |
| ୨୧ ୨॥ ୩୮॥ | ୨୧ ୨॥ ୭ ॥ | ୪୧ ୨॥ ୧୦୨॥ | ୩୧ ୨॥ ୧୨୭॥ |
| ୨୨ ୨॥ ୩୯ | ୩୨ ୨॥ ୮୦ | ୪୨ ୨॥ ୧୦୩ | ୩୨ ୨॥ ୧୩୦ |
| ୨୩ ୨॥ ୩୯॥ | ୩୩ ୨॥ ୮୧॥ | ୪୩ ୨॥ ୧୦୪॥ | ୩୩ ୨॥ ୧୩୨॥ |
| ୨୪ ୨॥ ୪୦ | ୩୪ ୨॥ ୮୨ | ୪୪ ୨॥ ୧୦୫ | ୩୪ ୨॥ ୧୩୪ |
| ୨୫ ୨॥ ୪୧ | ୩୫ ୨॥ ୮୩ | ୪୫ ୨॥ ୧୦୬ | ୩୫ ୨॥ ୧୩୬ |
| ୨୬ ୨॥ ୪୨ | ୩୬ ୨॥ ୮୪ | ୪୬ ୨॥ ୧୦୭ | ୩୬ ୨॥ ୧୩୮ |
| ୨୭ ୨॥ ୪୩ | ୩୭ ୨॥ ୮୫ | ୪୭ ୨॥ ୧୦୮ | ୩୭ ୨॥ ୧୪୦ |
| ୨୮ ୨॥ ୪୪ | ୩୮ ୨॥ ୮୬ | ୪୮ ୨॥ ୧୦୯ | ୩୮ ୨॥ ୧୪୨ |
| ୨୯ ୨॥ ୪୫ | ୩୯ ୨॥ ୮୭ | ୪୯ ୨॥ ୧୧୦ | ୩୯ ୨॥ ୧୪୪ |
| ୩୦ ୨॥ ୪୬ | ୪୦ ୨॥ ୧୦୦ | ୫୦ ୨॥ ୧୧୧ | ୪୦ ୨॥ ୧୪୬ |
| ୬୩୭॥ | ୮୮୭॥ | ୧୧୩୭॥ | ୧୩୮୭॥ |

| | | | |
|------------|------------|------------|------------|
| ୧୧ ୨॥ ୧୫୨॥ | ୬୧ ୨॥ ୧୭୭॥ | ୮୧ ୨॥ ୨୦୨॥ | ୯୧ ୨॥ ୨୨୭॥ |
| ୧୨ ୨॥ ୧୫୫ | ୬୨ ୨॥ ୧୮୦ | ୮୨ ୨॥ ୨୦୫ | ୯୨ ୨॥ ୨୩୦ |
| ୧୩ ୨॥ ୧୫୭॥ | ୬୩ ୨॥ ୧୮୨॥ | ୮୩ ୨॥ ୨୦୭॥ | ୯୩ ୨॥ ୨୩୨॥ |
| ୧୪ ୨॥ ୧୬୦ | ୬୪ ୨॥ ୧୮୫ | ୮୪ ୨॥ ୨୧୦ | ୯୪ ୨॥ ୨୩୫ |
| ୧୫ ୨॥ ୧୬୨॥ | ୬୫ ୨॥ ୧୮୭॥ | ୮୫ ୨॥ ୨୧୨॥ | ୯୫ ୨॥ ୨୩୭॥ |
| ୧୬ ୨॥ ୧୬୫ | ୬୬ ୨॥ ୧୯୦ | ୮୬ ୨॥ ୨୧୫ | ୯୬ ୨॥ ୨୪୦ |
| ୧୭ ୨॥ ୧୬୭॥ | ୬୭ ୨॥ ୧୯୨॥ | ୮୭ ୨॥ ୨୧୭॥ | ୯୭ ୨॥ ୨୪୨॥ |
| ୧୮ ୨॥ ୧୭୦ | ୬୮ ୨॥ ୧୯୫ | ୮୮ ୨॥ ୨୨୦ | ୯୮ ୨॥ ୨୪୫ |
| ୧୯ ୨॥ ୧୭୨॥ | ୬୯ ୨॥ ୧୯୭॥ | ୮୯ ୨॥ ୨୨୨॥ | ୯୯ ୨॥ ୨୪୭॥ |
| ୭୦ ୨॥ ୧୭୫ | ୭୦ ୨॥ ୨୦୦ | ୯୦ ୨॥ ୨୨୫ | ୧୦୦୨॥ ୨୫୦ |
| ୧୬୩୭॥ | ୧୮୮୭॥ | ୨୧୩୭॥ | ୨୩୮୭॥ |
| ୧ ୩॥ ୩॥ | ୧୧ ୩॥ ୩୮॥ | ୨୧ ୩॥ ୭୩॥ | ୩୧ ୩॥ ୧୦୮॥ |
| ୨ ୩॥ ୭ | ୧୨ ୩॥ ୪୨ | ୨୨ ୩॥ ୭୭ | ୩୨ ୩॥ ୧୧୨ |
| ୩ ୩॥ ୧୦॥ | ୧୩ ୩॥ ୪୩॥ | ୨୩ ୩॥ ୮୦॥ | ୩୩ ୩॥ ୧୧୫॥ |
| ୪ ୩॥ ୧୪ | ୧୪ ୩॥ ୪୯ | ୨୪ ୩॥ ୮୪ | ୩୪ ୩॥ ୧୧୯ |
| ୫ ୩॥ ୧୭॥ | ୧୫ ୩॥ ୫୨॥ | ୨୫ ୩॥ ୮୭॥ | ୩୫ ୩॥ ୧୨୨॥ |
| ୬ ୩॥ ୨୧ | ୧୬ ୩॥ ୫୫ | ୨୬ ୩॥ ୯୧ | ୩୬ ୩॥ ୧୨୬ |
| ୭ ୩॥ ୨୪॥ | ୧୭ ୩॥ ୫୮॥ | ୨୭ ୩॥ ୯୪॥ | ୩୭ ୩॥ ୧୨୯॥ |
| ୮ ୩॥ ୨୮ | ୧୮ ୩॥ ୬୩ | ୨୮ ୩॥ ୯୮ | ୩୮ ୩॥ ୧୩୩ |
| ୯ ୩॥ ୩୧॥ | ୧୯ ୩॥ ୬୬॥ | ୨୯ ୩॥ ୧୦୧॥ | ୩୯ ୩॥ ୧୩୬॥ |
| ୧୦ ୩॥ ୩୫ | ୨୦ ୩॥ ୭୦ | ୩୦ ୩॥ ୧୦୫ | ୪୦ ୩॥ ୧୪୦ |
| ୧୯୨॥ | ୫୪୨॥ | ୮୯୨॥ | ୧୨୪୨॥ |

| | | | |
|------------|------------|-------------|------------|
| ४१ ३॥ १४३॥ | ४१ ३॥ १७८॥ | ४१ ३॥ २१३॥ | ४१ ३॥ २४८॥ |
| ४२ ३॥ १४७ | ४२ ३॥ १८२ | ४२ ३॥ २१७ | ४२ ३॥ २४२ |
| ४३ ३॥ १४०॥ | ४३ ३॥ १८५॥ | ४३ ३॥ २२०॥ | ४३ ३॥ २४५॥ |
| ४४ ३॥ १४४ | ४४ ३॥ १८८ | ४४ ३॥ २२४ | ४४ ३॥ २४६ |
| ४५ ३॥ १४५॥ | ४५ ३॥ १८२॥ | ४५ ३॥ २२७॥ | ४५ ३॥ २४२॥ |
| ४६ ३॥ १६१ | ४६ ३॥ १८६ | ४६ ३॥ २३१ | ४६ ३॥ २६६ |
| ४७ ३॥ १६४॥ | ४७ ३॥ १८६॥ | ४७ ३॥ २३४॥ | ४७ ३॥ २६६॥ |
| ४८ ३॥ १६८ | ४८ ३॥ २०३ | ४८ ३॥ २३८ | ४८ ३॥ २७३ |
| ४९ ३॥ १७१॥ | ४९ ३॥ २०६॥ | ४९ ३॥ २४१॥ | ४९ ३॥ २७६॥ |
| ५० ३॥ १७५ | ५० ३॥ २१० | ५० ३॥ २४५ | ५० ३॥ २८० |
| १५६२॥ | १६४२॥ | २२६८॥ | २६४२॥ |
| ८१ ३॥ २८३॥ | ८१ ३॥ ३१८॥ | १०० ३॥ ३५० | ११ ११ १२१ |
| ८२ ३॥ २८७ | ८२ ३॥ ३२२ | २०० ३॥ ७०० | ११ १२ १३२ |
| ८३ ३॥ २८०॥ | ८३ ३॥ ३२५॥ | ३०० ३॥ १०५० | ११ १३ १४३ |
| ८४ ३॥ २८४ | ८४ ३॥ ३२६ | ४०० ३॥ १४०० | ११ १४ १५४ |
| ८५ ३॥ २८७॥ | ८५ ३॥ ३३२॥ | ५०० ३॥ १७५० | ११ १५ १६५ |
| ८६ ३॥ ३०१ | ८६ ३॥ ३३६ | ६०० ३॥ २१०० | ११ १६ १७६ |
| ८७ ३॥ ३०४॥ | ८७ ३॥ ३३६॥ | ७०० ३॥ २४५० | ११ १७ १८७ |
| ८८ ३॥ ३०८ | ८८ ३॥ ३४३ | ८०० ३॥ २८०० | ११ १८ १९८ |
| ८९ ३॥ ३११॥ | ८९ ३॥ ३४६॥ | ९०० ३॥ ३१५० | ११ १९ २०९ |
| ९० ३॥ ३१५ | १००३॥ ३५० | १०००३॥ ३५०० | ११ २० २२० |
| २८६२॥ | ३३४२॥ | १६२५० | " १७०५ |

(4)

| | | | |
|-----------|-----------|-----------|-----------|
| 12 11 132 | 13 11 143 | 14 11 154 | 14 11 164 |
| 12 12 144 | 13 12 155 | 14 12 166 | 14 12 176 |
| 12 13 155 | 13 13 166 | 14 13 177 | 14 13 187 |
| 12 14 166 | 13 14 177 | 14 14 188 | 14 14 198 |
| 12 15 177 | 13 15 188 | 14 15 199 | 14 15 209 |
| 12 16 188 | 13 16 199 | 14 16 210 | 14 16 220 |
| 12 17 199 | 13 17 210 | 14 17 221 | 14 17 231 |
| 12 18 210 | 13 18 221 | 14 18 232 | 14 18 242 |
| 12 19 221 | 13 19 232 | 14 19 243 | 14 19 253 |
| 12 20 232 | 13 20 243 | 14 20 254 | 14 20 264 |
| 12 20 240 | 13 20 250 | 14 20 260 | 14 20 270 |
| 1450 | 2094 | 2190 | 2324 |
| 15 11 165 | 16 11 176 | 17 11 187 | 16 11 206 |
| 15 12 176 | 16 12 187 | 17 12 198 | 16 12 217 |
| 15 13 187 | 16 13 198 | 17 13 209 | 16 13 228 |
| 15 14 198 | 16 14 209 | 17 14 220 | 16 14 239 |
| 15 15 209 | 16 15 220 | 17 15 231 | 16 15 250 |
| 15 16 220 | 16 16 231 | 17 16 242 | 16 16 261 |
| 15 17 231 | 16 17 242 | 17 17 253 | 16 17 272 |
| 15 18 242 | 16 18 253 | 17 18 264 | 16 18 283 |
| 15 19 253 | 16 19 264 | 17 19 275 | 16 19 294 |
| 15 20 264 | 16 20 275 | 17 20 286 | 16 20 306 |
| 2460 | 2634 | 2960 | 2684 |

(9)

| | | | |
|------------|------------|------------|------------|
| 20 11 220 | 1 1 1 | 11 11 121 | 21 21 441 |
| 20 12 240 | 2 2 4 | 12 12 144 | 22 22 484 |
| 20 13 260 | 3 3 6 | 13 13 169 | 23 23 529 |
| 20 14 280 | 4 4 16 | 14 14 196 | 24 24 576 |
| 20 15 300 | 5 5 25 | 15 15 225 | 25 25 625 |
| 20 16 320 | 6 6 36 | 16 16 256 | 26 26 676 |
| 20 17 340 | 7 7 49 | 17 17 289 | 27 27 729 |
| 20 18 360 | 8 8 64 | 18 18 324 | 28 28 784 |
| 20 19 380 | 9 9 81 | 19 19 361 | 29 29 841 |
| 20 20 400 | 10 10 100 | 20 20 400 | 30 30 900 |
| 3900 | 364 | 2864 | 5464 |
| 31 31 671 | 41 41 1681 | 41 41 1681 | 51 51 2601 |
| 32 32 1024 | 42 42 1764 | 42 42 1764 | 52 52 2704 |
| 33 33 1089 | 43 43 1849 | 43 43 1849 | 53 53 2809 |
| 34 34 1156 | 44 44 1936 | 44 44 1936 | 54 54 2916 |
| 35 35 1225 | 45 45 2025 | 45 45 2025 | 55 55 3025 |
| 36 36 1296 | 46 46 2116 | 46 46 2116 | 56 56 3136 |
| 37 37 1369 | 47 47 2209 | 47 47 2209 | 57 57 3249 |
| 38 38 1444 | 48 48 2304 | 48 48 2304 | 58 58 3364 |
| 39 39 1521 | 49 49 2401 | 49 49 2401 | 59 59 3481 |
| 40 40 1600 | 50 50 2500 | 50 50 2500 | 60 60 3600 |
| 12554 | 20964 | 30664 | 40664 |

| | | | |
|------------|------------|--------------|-------------|
| ୨୧ ୭୧ ୪୦୪୧ | ୮୧ ୮୧ ୧୪୧୧ | ୯୧ ୯୧ ୮୧୧୧ | ୧୦୧ ୦୧ ୦୧ |
| ୨୨ ୭୨ ୪୧୮୪ | ୮୨ ୮୨ ୧୫୨୪ | ୯୨ ୯୨ ୮୧୧୪ | ୧୦୨ ୦୧ ୦୧୧ |
| ୨୩ ୭୩ ୪୩୨୮ | ୮୩ ୮୩ ୧୬୮୮ | ୯୩ ୯୩ ୮୧୧୮ | ୧୦୩ ୦୧ ୦୧୧୧ |
| ୨୪ ୭୪ ୪୪୭୨ | ୮୪ ୮୪ ୧୭୪୨ | ୯୪ ୯୪ ୮୮୩୨ | ୧୦୪ ୦୧ ୧ |
| ୨୫ ୭୫ ୪୫୨୫ | ୮୫ ୮୫ ୧୮୨୫ | ୯୫ ୯୫ ୮୯୨୫ | ୧୦୫ ୦୧ ୧୧ |
| ୨୬ ୭୬ ୪୬୭୬ | ୮୬ ୮୬ ୧୯୭୬ | ୯୬ ୯୬ ୯୦୭୬ | ୧୦୬ ୦୧ ୧୧୧ |
| ୨୭ ୭୭ ୪୭୮୭ | ୮୭ ୮୭ ୧୯୮୭ | ୯୭ ୯୭ ୯୧୦୮ | ୧୦୭ ୦୧ ୨ |
| ୨୮ ୭୮ ୪୮୮୮ | ୮୮ ୮୮ ୧୯୮୮ | ୯୮ ୯୮ ୯୧୦୮ | ୧୦୮ ୦୧ ୨୧ |
| ୨୯ ୭୯ ୪୯୮୯ | ୮୯ ୮୯ ୧୯୮୯ | ୯୯ ୯୯ ୯୧୦୯ | ୧୦୯ ୦୧ ୨୧୧ |
| ୩୦ ୮୦ ୫୦୦୦ | ୯୦ ୯୦ ୮୧୦୦ | ୧୦୦ ୧୦୦ ୧୦୦୦ | ୧୦୦ ୦୧ ୨୧୧୧ |
| ୪୦୦୮ | ୭୩୮୮ | ୯୧୨୮ | ୧୩୧୧ |
| ୧୧ ୦୧ ୨୧୧୧ | ୨୧ ୦୧ ୪୧ | ୩୧ ୦୧ ୭୧୧୧ | ୪୧ ୦୧ ୧୦୧ |
| ୧୨ ୦୧ ୩ | ୨୨ ୦୧ ୪୧୧ | ୩୨ ୦୧ ୮ | ୪୨ ୦୧ ୧୦୧୧ |
| ୧୩ ୦୧ ୩୧ | ୨୩ ୦୧ ୪୧୧୧ | ୩୩ ୦୧ ୮୧ | ୪୩ ୦୧ ୧୦୧୧୧ |
| ୧୪ ୦୧ ୩୧୧ | ୨୪ ୦୧ ୫ | ୩୪ ୦୧ ୮୧୧ | ୪୪ ୦୧ ୧୧ |
| ୧୫ ୦୧ ୩୧୧୧ | ୨୫ ୦୧ ୫୧ | ୩୫ ୦୧ ୮୧୧୧ | ୪୫ ୦୧ ୧୧୧ |
| ୧୬ ୦୧ ୪ | ୨୬ ୦୧ ୫୧୧ | ୩୬ ୦୧ ୯ | ୪୬ ୦୧ ୧୧୧୧ |
| ୧୭ ୦୧ ୪୧ | ୨୭ ୦୧ ୫୧୧୧ | ୩୭ ୦୧ ୯୧ | ୪୭ ୦୧ ୧୧୧୧୧ |
| ୧୮ ୦୧ ୪୧୧ | ୨୮ ୦୧ ୭ | ୩୮ ୦୧ ୯୧୧ | ୪୮ ୦୧ ୧୨ |
| ୧୯ ୦୧ ୪୧୧୧ | ୨୯ ୦୧ ୭୧ | ୩୯ ୦୧ ୯୧୧୧ | ୪୯ ୦୧ ୧୨୧ |
| ୨୦ ୦୧ ୪ | ୩୦ ୦୧ ୭୧୧ | ୪୦ ୦୧ ୧୦ | ୫୦ ୦୧ ୧୨୧୧ |
| ୩୮୧୧ | ୫୩୧୧ | ୮୮୧୧ | ୧୧୩୧୧ |

(૯)

| | | | |
|------------|-------------|--------------|------------|
| ૫૧ ૦૧ ૧૨૥૥ | ૬૧ ૦૧ ૧૫૧ | ૭૧ ૦૧ ૧૭૥૥ | ૮૧ ૦૧ ૨૦૧ |
| ૫૨ ૦૧ ૧૩ | ૬૨ ૦૧ ૧૫૥૥ | ૭૨ ૦૧ ૧૮ | ૮૨ ૦૧ ૨૦૥૥ |
| ૫૩ ૦૧ ૧૩૧ | ૬૩ ૦૧ ૧૫૥૥ | ૭૩ ૦૧ ૧૮૧ | ૮૩ ૦૧ ૨૦૥૥ |
| ૫૪ ૦૧ ૧૩૥૥ | ૬૪ ૦૧ ૧૬ | ૭૪ ૦૧ ૧૮૥૥ | ૮૪ ૦૧ ૨૧ |
| ૫૫ ૦૧ ૧૩૥૥ | ૬૫ ૦૧ ૧૬૧ | ૭૫ ૦૧ ૧૮૥૥ | ૮૫ ૦૧ ૨૧૧ |
| ૫૬ ૦૧ ૧૪ | ૬૬ ૦૧ ૧૬૥૥ | ૭૬ ૦૧ ૧૯ | ૮૬ ૦૧ ૨૧૥૥ |
| ૫૭ ૦૧ ૧૪૧ | ૬૭ ૦૧ ૧૬૥૥ | ૭૭ ૦૧ ૧૯૧ | ૮૭ ૦૧ ૨૧૥૥ |
| ૫૮ ૦૧ ૧૪૥૥ | ૬૮ ૦૧ ૧૭ | ૭૮ ૦૧ ૧૯૥૥ | ૮૮ ૦૧ ૨૨ |
| ૫૯ ૦૧ ૧૪૥૥ | ૬૯ ૦૧ ૧૭૧ | ૭૯ ૦૧ ૧૯૥૥ | ૮૯ ૦૧ ૨૨૧ |
| ૬૦ ૦૧ ૧૫ | ૭૦ ૦૧ ૧૭૥૥ | ૮૦ ૦૧ ૨૦ | ૯૦ ૦૧ ૨૨૥૥ |
| ૧૩૮૥૥ | ૧૬૩૥૥ | ૧૮૮૥૥ | ૨૧૩૥૥ |
| ૬૧ ૦૧ ૨૨૥૥ | ૧૦૦ ૦૧ ૨૫ | એક | ૧ |
| ૬૨ ૦૧ ૨૩ | ૨૦૦ ૦૧ ૫૦ | દશ..... | ૧૦ |
| ૬૩ ૦૧ ૨૩૧ | ૩૦૦ ૦૧ ૭૫ | સો..... | ૧૦૦ |
| ૬૪ ૦૧ ૨૩૥૥ | ૪૦૦ ૦૧ ૧૦૦ | હજાર..... | ૧૦૦૦ |
| ૬૫ ૦૧ ૨૩૥૥ | ૫૦૦ ૦૧ ૧૨૫ | દશ હજાર..... | ૧૦૦૦૦ |
| ૬૬ ૦૧ ૨૪ | ૬૦૦ ૦૧ ૧૫૦ | લાખ..... | ૧૦૦૦૦૦ |
| ૬૭ ૦૧ ૨૪૧ | ૭૦૦ ૦૧ ૧૭૫ | દશ લાખ..... | ૧૦૦૦૦૦૦ |
| ૬૮ ૦૧ ૨૪૥૥ | ૮૦૦ ૦૧ ૨૦૦ | કરોડ..... | ૧૦૦૦૦૦૦ |
| ૬૯ ૦૧ ૨૪૥૥ | ૯૦૦ ૦૧ ૨૨૫ | દશ કરોડ..... | ૧૦૦૦૦૦૦૦ |
| ૧૦૦ ૦૧ ૨૫ | ૧૦૦૦ ૦૧ ૨૫૦ | અબજ..... | ૧૦૦૦૦૦૦૦૦ |
| ૨૩૮૥૥ | ૧૩૭૫ | | |

(૯)

પરિણામ.

| | | | |
|---|---------|------|-----|
| પંચાવન..... | ૫૫ | | |
| એકસો સોળ..... | ૧૧૬ | | |
| બસેં પંદર..... | ૨૧૫ | | |
| ત્રણસેં નવ..... | ૩૦૬ | | |
| ચારસેં વીશ..... | ૪૨૦ | | |
| પાંચસેં ઓગણત્રીસ..... | ૫૨૯ | | |
| છસો સતર..... | ૬૧૭ | | |
| સાતસો બાળું..... | ૭૨૨ | | |
| આઠસો નવાળું..... | ૮૩૬ | | |
| નવસો પાંચીસ..... | ૯૩૫ | | |
| એક હજાર ચારસેં આઠ..... | ૧૪૦૮ | | |
| બારસેં ચૈદ..... | ૧૨૧૪ | | |
| પંદરસેં તેર..... | ૧૫૧૩ | | |
| સતરસેં દશ..... | ૧૭૧૦ | | |
| બેહજાર આઠાવીસ..... | ૨૦૨૮ | | |
| આઠહજાર સત્તાવન..... | ૧૮૦૫૭ | | |
| દસ હજાર નવસેં બાર..... | ૧૦૯૧૨ | | |
| સોળહજાર એકસો પંદર..... | ૧૬૧૧૫ | | |
| વીસહજાર બસેં અગીયાર..... | ૨૦૨૧૧ | | |
| પચીસહજાર છસેં નવ..... | ૨૫૬૦૯ | | |
| સાઠ હજાર ચારસેં છતું..... | ૬૦૪૯૬ | | |
| પાંચ લાખ પંદર હજાર વીસ..... | ૫૧૫૦૨૦ | | |
| ત્રેવીસ લાખ સાત હજાર ત્રણસેં ઓગણીસ..... | ૨૩૦૭૩૧૯ | | |
| પા | ૦૧ | પોણો | ૦૧૧ |
| અરધો | ૦૧ | એક | ૧ |
| પા સો | ૨૫ | | |

(૧૦)

| | | | |
|-----------|------|-----------|----------|
| અરધો સો | ૫૭ | પા લાખ | ૨૫૦૦૦ |
| પોણો સો | ૭૫ | અરધો લાખ | ૫૦૦૦૦ |
| પોણી સો | ૯૯૧૧ | પોણો લાખ | ૭૫૦૦૦ |
| સો | ૧૦૦ | એક લાખ | ૧૦૦૦૦૦ |
| પા હજાર | ૨૫૦ | પા કરોડ | ૨૫૦૦૦૦૦ |
| અરધો હજાર | ૫૦૦ | અરધો કરોડ | ૫૦૦૦૦૦૦ |
| પોણો હજાર | ૭૫૦ | પોણો કરોડ | ૭૫૦૦૦૦૦ |
| એક હજાર | ૧૦૦૦ | એક કરોડ | ૧૦૦૦૦૦૦૦ |

સરવાળા. ૩૫૮૦

૨૮૦૮

૬૩૮૮

આદ્યાકી ૯૮૧૪

૭૯૩૯

૧૮૭૫

ગુણાકાર ૩૭૧૫

૮૭

૨૬૦૦૫

૨૯૭૨૦

૩૨૩૨૦૫

ભાગાકાર ૧૩)૨૧૯૪(૧૬૮

૧૩

૦૮૬

૭૮

૧૧૪

૧૦૪

૦૧૦

૩૬૦૫

૭૧૦

૫૮૧૯

૧૦૦૩૪

૫૦૩૦

૩૯૦૯

૧૧૨૧

૨૦૮૦

૭૦૯

૧૮૭૨૦

૧૪૫૬૦

૧૪૭૪૭૨૦

૧૦૯)૫૯૮૬

૫૪+૧૦૦

(૧૧)
ધાતો.

શેરની ધાત

| | | |
|---------------------|-----------------------|----------------------|
| શેરના અછેરા ... ૨ | અચ્છેરના..... ૨૦ | પોણોશેરના ટાંકભાર ૫૪ |
| શેરના પાશેરા... ૪ | પાશેરના..... ૧૦ | અચ્છેરના ૭૬ |
| શેરના નવટાંકાં... ૮ | નવટાંકનાં..... ૫ | પાશેરના..... ૧૮ |
| શેરનાંઅધોળ... ૧૬ | અધોળના..... ૨૫ | નવટાંકના ૯ |
| શેરના૩પીઆભાર૪૦ | ૧ ટાંક એટલે ૧ પૈસાભાર | અધોળના..... ૪૫ |
| પોણાશેરના૩ ભાર૩૦ | એક શેરના ટાંકભાર૯૨ | |

ઉપલી ધાતની ઉલટ નીચે મુજબ શીખવવી; તથા બીજી પાણુ સવળી ધાતોને કિલટ પાલટ શીખવવાનો મહત્વનો કરાવવો.

મણુની ધાત

| | | |
|------------------|------------------|---------------|
| મણુનાં અધમણીઆં ૨ | મણુનીઅઢીશેરી ૧૬ | પોણા મણુના ૩૦ |
| મણુનાં દસશેરા ૪ | મણુની સવાશેરી ૩૨ | અધમણુના ૨૦ |
| મણુની પાંચશેરી ૮ | મણુના શેર ૪૦ | પા મણુના ૧૦ |

ખાડીના મણુના તોલથી

તોલાની ધાતો

થતુ તોલ.

| | |
|-----------------------|--|
| માણી એકના મણુ..... ૧૨ | |
| કળશીના..... ૧૬ | |
| ખાંડી..... ૨૦ | |
| ભાર..... ૨૪ | |
| કોથળા..... ૫ | |
| એડીઆના..... ૩૨ | |
| ગાફી..... ૩૦ | |
| પહાના..... ૬૫ | |
| મોટા હારાના... .. ૨૧ | |
| નાના હારાના... .. ૭ | |
| મૂડા ૪૦ | |
| મોટા મૂડા ૧૦૦ | |

| | |
|-----------------------------|--|
| તોલા... એકના... ગદીઆણુ... ૨ | |
| તોલા..... માસા ૧૨ | |
| તોલાવાલ ૩૨ | |
| તોલારતી ૬૬ | |
| ગદીઆણુવાલ ૧૬ | |
| વાલરતી ૩ | |
| રતીમગ ૪ | |
| રતીચોખા ૬ | |

ચલણી નાણાનું પ્રમાણુ

| | |
|-------------------------|--|
| ૩ પીઆ એકના દોકડા... ૧૦૦ | |
| દોકડાફોકડા ૧૦૦ | |
| દોકડાબદામ ૧૬ | |
| બદામ એકની વીશવાસી ૧૬ | |

આનાની ધાત

દો. બ.

એક આનાના ઊપઆના અથવા
કાચાઆના સોળ
૩પિઆ...એકના...આના... ૧૬
આના...એકની... પાછ ... ૧૨
આના...એકના... પૈસા ... ૪
આના..." શૂરતી પૈસા ... ૫
દોડકડા.

દો. બ.

પા આનાનો ૧૫ ૧
અરધા ... " ૩ ૨
પોણા ... " ૪૫ ૩

એક આનાના... ...૬૧
સવા આનાના... ...૭૫ ૧
દોઢઆનાના... ... ૯ ૨
પોણા બે આનાના... ૧૦૫ ૩
બે આનાના... ... ૧૨૫
ત્રણ આનાના ... ૧૮૫
ચાર આનાના અથવા પા ૩૦ ૨૫
આઠ આના અથવા ૦૫ ૩૦ ૫૦
બાર આના અથવા ૦૫ ૩૦ ૭૫
સોળ આના અથવા ૧૩૦ ૧૦૦

શૂરતી પૈસાની ધાત

પૈસા એકની નાસરી ૪
પૈસા " દમડી ૮
પૈસા " બદામ ૨૦
૦૫ પૈસા નો એક સવાયો
૦૫ પૈસા " મોટો સવાયો
૧૫ પૈસા " મોટો પૈસો.
૩ પૈસા " ટકો
૧૫ પૈસા " ૧૬દીયું, સવાયો
૮૦ પૈસા " ૧ ૩પિઓ
સવાયો દોડકડાનો " સવાયો

(૧૫) ફદીડો એટલે ઇચ્છેજ સર
કાર નો પાડેજો પૈસો. એને કાઠિ
આવાડમાં કાવડીડો કહેછે. મુંબઈમાં
દોઢીડો કહેછે. સરતમાં સવાકો કહે
છે. મુંબઈમાં ફદીડો ચાર પાછને
કહેછે.
હિંદુના બાર માસનાં નામ
શિઆળાના—કારતક. માગસર પો
સ. માહ. ઉનાળાના—ફાગણ. ચૈત્ર
વૈશાક જેઠ. ચોમાસાના—અશાઢ.
શ્રાવણ. બાદરવો. આસો.

| હિંદુની તિથિઓ. | | તેરસ. | |
|----------------|----|-------------------|---------------|
| પડવો. | ૧ | ચૈત્રદસ, | ૧૩ |
| બીજ. | ૨ | પૂનમ. | ૧૪ |
| ત્રિજ. | ૩ | અમાસ. | ૧૫ |
| ચોથ. | ૪ | | ૩૦ |
| પાંચમ. | ૫ | હિંદુના સાતવાર | |
| છઠ. | ૬ | બોલવામાં | લખવામાં |
| સાતમ. | ૭ | રવિવાર | સૂરજનો વાર |
| આઠમ. | ૮ | સોમવાર | ચંદ્રનો વાર |
| નોમ. | ૯ | બોમવાર | (મંગળવાર |
| દશમ | ૧૦ | બુધવાર | (બુધે) |
| અગીઆરસ | ૧૧ | ગુરુવાર | (બ્રહ્મપતવાર. |
| બારસ | ૧૨ | શુક્રવાર | (શુક્રે) |
| | | શનીવાર (સનેઉ) શનૈ | |

હિંદુના બાર માસોમાં દરેકના ત્રીસ ત્રીસ દીવસો છે, પરંતુ કોઈ કોઈ વખત ક્ષય તિથી થાય છે. એમ ત્રણ વરસે ફરતાં ચોથે વરસે તેનો અધિકમાસ એક વધારાનો માસ થાય છે.

શુક્રવાર તે દીવસે મુસલમાનોગાં ચણા ખાવાનો ચાલ છે. આ બધા વારો આકાશના ગ્રહોના નામ પરથી પડ્યા છે.

હિંદુના તેહેવારો

કારતક સુદી ૧ બેસતું નવું વર્ષ. અનકોટનો ઓગસ્ટ.

” શુદી ૨ બાઈ બીજ. બાઈ બેનને ત્યાં જન્મવા જાય છે ને કાંઈ લઈ દેછે. તેને વીર પસલી કહે છે.

| | |
|-------------------------------|-------------------------------|
| ” ” ૧૧ ગુજરાતમાં દેવદીવાળી | આવણુ વદી ૬ રાંધણુ છઠં. |
| ” ” ૧૫ કાઠિયાવાડમાં દેવદીવાળી | ” ” ૭ શીળી સાતેમ. |
| પોસ સુદીમાં અમુક તિથીએ મ | ” ” ૮ જન્મ આષ્ટમી. |
| કર સંક્રાન્તી | ” ” ૩૦ ભાદરવી આઠાસ. |
| માહા શુદી ૫ વસંત પંચમી. | (કાઠિયાવાડમાં.) |
| ” વદી ૧૪ શીવરાત્રી. | ભાદરવાની શરૂઆતમાં આવકોનાં ૫- |
| શાગણુ શુદી ૧૪ કમળા હોળી. | ચુસણુ. |
| ” ” ૧૫ હોળી. | ” શુદી ૧૫ થી દિ. ૧૬ ના શ- |
| ” વદી ૧ ધુળી પડવો. | રાધ બેસે. |
| ચૈત્ર શુદી ૯ રાગનવમી. | આસો શુદી ૧ થી દિ. ૯ નવરાત્રી. |
| વર્ષસાખ શુદી ૩ અખાત્રીજ. | ” ” ૧૦ દસેર સમીપુજવી. |
| ” ” ૪ ગણેસ ચોથ. | ” ” ૧૫ માણેકઠારી પુતેમ. |
| જેઠ શુદી ૧૧ ભીમ અગીઆરશ. | ” વદી ૧૨ પોડા પારસ. |
| અસાડ શુદી ૨ અસાડી ખીજ. | ” ” ૧૩ ધન તેરસ. |
| આવણુ શુદી ૧૫ બળેવ. | ” ” ૧૪ કાળી ચૌદસ. |
| ” વદી ૫ નાગપાંચેમ. | ” ” ૩૦ દીવાળી. |

મુખ્ય રૂતુ છ છે-૧ વસંત—ચૈત્ર તથા વૈશાખમાં. ૨ ગ્રીષ્મ
જેઠ તથા અસાડ. ૩ વર્ષા—આવણુ તથા ભાદરવામાં. ૪ શરદ—
આસો તથા કારતક. ૫ હેમત.—માગશર તથા પોસ. ૬ શશીર અ-
થવા પાનખર—માહ તથા શાગણુ. મુખ્ય ત્રણ. ૧શિયાળો ૨ ઉનાળો
૩ ચોમાસું. ફક્ત ભૂમધ્યસમુદ્રના કીનારાના દેશોમાંજ આરૂતું પરી-
બળ વિશેષ છે. હિંદુઓમાં એક સંવારથી ખીજ સવાર સુધીને દ-
હાડો કહે છે. ને ઇંગ્રેજ લોકો એક રાતના પાર વાગતાથી ખીજ
રાતના પાર વાગતા સુધીને દહાડો કહે છે.

પૃથ્વી ગોળ લાકુ કે દડા જેવી છે. પૃથ્વીના ફરવાથી રાતને દ-

હાડો થાયછે. સુરજ, ચંદ્ર ને પૃથ્વી એ ત્રણે જ્યારે એક સિધી લીટી-
માં આવે ત્યારે ચંદ્ર અગર સૂરજ મહણ થાયછે. ૧૦ વિપળની ૧
પળ. ૬૦ પળની ૧ ધડી. ૭૫ ધડીનો ૧ પહોર. એવા ૪ પ-
હોરનો એક દિવસ અને આઠ પહોરનો એક રાત્રી દિવસ. એટલે અ-
ઠી ધડીનો એક કલાક ને ૧૨ કલાકનો એક દિવસ ને ચોવીસ કલા-
ક એટલે સાઠ ધડીનો એક રાત્રી દિવસ થાય છે.

ઇંગ્રેજના મહીના

જાન્યુઆરી, ૩૧. ફેબ્રુઆરી, ૨૮. માર્ચ, ૩૧. એપ્રિલ, ૩૦. મે, ૩૧.
જુન, ૩૦. જુલાઇ, ૩૧. અગષ્ટ, ૩૧. સપ્ટેમ્બર, ૩૦. અક્ટોબર, ૩૧.
નવેમ્બર, ૩૦. ડિસેમ્બર, ૩૧. ફેબ્રુઆરી મહીનો—અઠાવીસ દિવસનો
છે પરંતુ તેની સાલને ચારે ભાગનાં કાંઇ ગાફી ન વધેતો તે સાલમાં
આગણત્રીસ દિવસનો ગણવો. એવીરીતે તેઓનું ૩૬૫ દિવસનું વર્ષ છે.

ઇંગ્રેજના તેહેવાર—જાન્યુઆરી તા. ૧ નવું વરસ. એ દને
ઈસ્વીસન બદલાયછે.

સને ૧૮૮૭ ફેબ્રુઆરી તા. ૧૬—૧૭ હિંદુસ્તાન વગેરેમાં જીનિલી.

માર્ચ—શુક્ર ક્રાઇડે —કોઇ વખત એપ્રિલમાં પણ પળાય છે. એ
લોકોનાં પેગંબર હજરત ઇસાનું પવિત્ર શય (મુડદું) તેને મારી નાં-
ખ્યા પછીના પેહેલા શુક્રવારે હાથ લાગ્યું તેની યાદ ગીરીમાં એ
તહેવાર પાળેછે.

મે—તા. ૨૪—આપણા માનવંતાં શહેનશાહ્યાનું મહારાણી
વીઝેટારીયા દયાળુ માયનો જન્મ એજ તારીખે ઈ. સ. ૧૮૧૬ માં

થયો તેનું શુભ પરવ.

જુન—૬૦ સં ૧૮૮૭ તાં ૨૦ વિલાયતમાં જુલિલીનો તેહે વાર ઠયો.

ડીસેમ્બર—તાં ૨૫ મી થી તાં ૩૧ મી સુધી નાતાળ કહે છે એ તેહેવાર તેઓના પેગમ્બર હજરત ઈશાનો જન્મ આગલી તારીખની રાત્રીના કલાક બારને અમત્રે થયો તેની ખુશાલીમાં એક પરવ ઠરાવી. દિ. ૭ સાત સુધી તેઓ આત્રુ રાખે છે. આ લોકોના વારની અહીં કંઈ જરૂર ન જણાયથી દાખલ કર્યા નથી.

ધાતુ—મુખ્ય ૭ સાત છે. ૧ સોનું, ૨ રૂપું, ૩ ત્રાંચું, ૪ લોહું, ૫ સીસું, ૬ જસત, ૭ કલાઇ. ત્રાંચુ ને કલાઇ મળીને કાંસું થાય તે ઉપધાતુ કહેવાય. અને તાંચુ ને જસત મળીને ખીતળ થાય. આ પાણુ ઉપધાતુ કહેવાય છે. એ ધાતુઓ જમીનમાંથી ખોદી કાઢે છે. તે વખત ધુળ વિગેરે સાથે મળેલી હોય છે. તેને ગાળી સાફ કરે છે. એમાંની કેટલીક કાઠિઆવાડ—હિંદુસ્તાન—આસ્ટ્રેલિઆ—યુરોપ અને અમેરીકાની ખાણોમાંથી નીકળે છે. તેથી તેને ખનીજ પદાર્થ કહે છે. સોનું તથા રૂપું જવલેજ નીકળે છે. વળી તે રૂપાળી ધાતુ છે. એને કાટ પણ ચડતો નથી. તે મોંધી મળે છે. તેના લોકો ધરેણું ધડાવી પહેરે છે. તેના સિક્કા પાડી નાણાને ઠેકાણે ચલવે છે. આપણે અહીં રૂપાના સિક્કા ચાલે છે તેને રૂપિઆ, અરધા, પાવલી, બેઆની કહે છે. વિલાયતમાં આવા સિક્કા જુજ ચાલે છે. ત્યાંતો સોનાના સિક્કા ચાલે છે. તેને ગીની, પાંઉડ વિગેરે કહે છે.

સિલ્હીંગતે અરધો રૂપીઓ, પાછાંડ તે દસ રૂપીઆ, ગીની તે સાડા દસ રૂપીઆ, ગણી શકાય છે. તાંબાના પૈસા અને પાછાંઓ પાડે છે. તે હલકી ચીજો લેવાના ઊપયોગમાં હીક પડે છે, સિંકા આ પ્રમાણે થવાથી લોકોને યહુ સગવડતા થઈ છે. લોદું ઘણું નીકળે છે. તે બીજી ધાતુથી સસ્તુ છે. ખેતી વિગરે તમામ કામના તથા લડવાના હથીઆરો લોદાનાં થાય છે. સોનુ, રૂપુ, લોદુ ને ત્રાંચુ તેઓના તાર પાણી થાય છે. આથી લોકોને પૂર સુખ છે. તાંબાના કાટને જંગાલ કહે છે, તે યહુ ઝેરી છે. તે ખાવાથી જીવ જાય છે. તેનું સિંદુર બને છે. તાંબા, પીત્તલ ને કાંસાનાં વાસણો થાય છે. તે લોકોના ઊપયોગમાં પુષ્કળ આવે છે. હળદરને ખારો મળીને કંકુ થાય છે. આ સિવાયના બીજા પાઠોની સમજૂતી આગળ પાનામાં આપવામાં આવશે. તેમજ આવેલી કવિતાની સમજૂતી આગળ પાનામાં આવશે.

ગુજરાતી બીજી ચોપડીમાં આવેલા પાઠોની અનુક્રમ સમજૂતી તથા તે પરથી લેવાની શિખામણ નીચે મુજબ.

પાઠ ૧ વાંચનારને શિખામણ જે—ધરમાં જેમ વાતો કરતા હોઈએ તેમ રાગ કાઢ્યા વિના ધીમે ધીમે વાચવું.

પાઠ ૨ જે કવિતાની સમજૂતી. આગળ પાને આપવામાં આવી છે.

પાઠ ૩—૪—૫—૬—ચક્રાની પેઠે જે જુદું જોલી જોડું કામ કરે તેને વાંકનુ રૂળ મળે માટે તેમ કરવું નહીં.

પાઠ ૭—ઘણું ખાધાથી પેટમાં રોગ થાય, જેથી કડવાં કડ-

વાં ઝોસડ ખાવા પડે માટે આપણને રૂએ તેથી તથા મા ખાપ કહે તેથી વધારે ખાવું નહીં.

પાઠ ૮—વરસાદને ઘેળરીઝો પ્રસાદ સમજવા વિશે છે.

પાઠ ૯—નાનો ઘોડો તે ટટુ, ને મોટો ઘોડો તે ઘોડો. તેમાં પારકા ઘોડાપર જેમ ન ઝેસાય, તેમ પારકી જણસ પણ ન લેવાય.

પાઠ ૧૦ મો—૧૧ મો—૧૨ મો—એક પાકું ધણીના કહ્લા પ્રમાણે ન આલવાથી જંગલમાં વાધથી મરાયું. તેમ છોકરાંએ મા ખાપના કહ્લામાં રહેવું તો તેથી દુઃખ ન પામતાં સૌ ડાહ્યા કહેશે.

પાઠ ૧૩ કવિતાની સમજુતી આગળ દાખલ.

પાઠ ૧૪ આપણે જેનાપર ચાલીએ, રહીએ, દોડીએ છીએ તે પૃથ્વી છે તે માટીની છે. તે માટીનાં પાણી ભરવાના ગોળા, ગોળીઓ, બેડાં, ઘડા વીગેરે થાય છે. ને તે કુંભાર બનાવે છે.

પાઠ ૧૫— છોકરાંએ સંભાળીને રમવું; કે જેથી દેડકાની પેઠે ખીન્નને અડચણ થાય નહીં.

પાઠ ૧૬—૧૭—૧૮—૧૯—જમની ને કાશી બે બેનપણીઓની વાત છે—તેણે જેવી બિપયોગી રમત શોધી તેમ રમત રમવી ને તેમાં ભણવા સખધી હેત જણાવ્યું તેવું હેત ભણવામાં રાખવું.

પાઠ ૨૦— છોકરો જેમ ગાગરના સાંકડા મોંમાંથી એકે એકે બોર કાઢવાને બદલે સામટાં બોર મૂકો ભરી કાઢવા ગયો તો હાથ સલવાઈ રહ્યો તેમ ભણવાના તથા ખીન્ન કોઈ કામ કરવામાં ઉતાવળ કરી એક સામટુ કરીએ તો શાયદો ન થતાં ઉલટુ નુકશાન થાય.

પાઠ ૨૧ એક ઊંદર સાત પુછડીઓ હતો તેને જેમ જેમ કોઇ કહે તેમ ખીજવાતો તેથી એક એક પૂછડી કમી કરતાં છેવટ કાંઇ ન રહી ત્યારે આંડો કહેવા લાગ્યા. તેવી રીતે કોઇ દીવસ કોઇના કહેવા-પર ખીજવાયાથી નુકશાન થવા સાથે વધારે ખીજવે ને ઊંદરની પે-ઠે દુઃખી થાય.

પાઠ ૨૨—હાથમાં પાંચ પાંચ આંગળાં છે. તેના જુદા જુદા વ-ળાંકાથી જૂદું જૂદું કામ થાય છે.

પાઠ ૨૩—ગુરના હુકમમાં રહેવું; રજા આપેથી લડાઈ ટાંટો ન કરનાં પાધરૂં ઘેર જવું.

પાઠ ૨૪—કવિતાની સમજુતી આગળ.

પાઠ ૨૫—૨૬—૨૭—૨૮—મા આપના કહ્યાથી જેમ બકરીનું બ-ચ્ચું આડું ચાલ્યું ને વાઘે ફાડી ખાધું, તેમ મા આપના કહ્યાથી આ-ડું ચાલીએ તો બકરીના બચ્ચાં પેઠે દુઃખી થઇએ.

પાઠ ૨૯—એક છોકરાને રોવાની બહુ ટેવ હતી તેથી તેનાં મોંમાં ઊંદરડી પેશી ગઈ—પછી ઘણીવારે ઓપડ કર્યા ત્યારે સુખ પા-મ્યો તેમ જો કોઇ રોયા કરે તો દુઃખી થાય ને લોકો તેને ગાંડાં છોકરાં કહે.

પાઠ ૩૦—તાંબા પીતળનાં વાસણુ આબાબત પાછળ પાનામાં છે.

પાઠ ૩૧—આમાં જાત જાતનાં લૂગડાંનાં નામ છે. નિશાળે ભણે તે પહેરે.

પાઠ ૩૨—ગાયમાં ઘણો ગુણ છે. તે દૂધ આપે છે તે ખાવથી બ-

હુ આનંદ થવા સાથે જાત જાતનાં જમવાનાં ભોજન થાયછે. ને ગા-
યનો આકાર જણાવ્યો છે.

પાઠ ૩૩ મો-કવિતા આગળ પાને છે.

પાઠ ૩૪ મો દૂધની ખીર; ગાસુદી; દૂધપાક; માવો; પેંડા; ગરશી;
શીખંડ વિગેરે થાય છે. તે ખાવાથી સ્વાદ આપવા સાથે થાક જ
વાથી મનને આનંદ થાય છે, ને ઠંડક થાયછે.

પાઠ ૩૫—૩૬—૩૭—પારકી જણસ તેની રજા વિના લેવી તે
ચોરી કહેવાય. પછીળીકથી જૂઠું બોલવું પડે ને પાપ થાય, ને આ-
ગર જાત ને દુઃખ પડે, કોઈ ભરોસો કરે નહીં, માટે તેમ નહિ ક;
રતાં તેને પૂછી તે કહે તો લેવી.

પાઠ ૩૮ મો કવિતાની સમજુતી આગળ.

પાઠ ૩૯—જંગલ કે આગમાં ઝાડપર જે ખાવાની ચીજ થાય તે
ફળ વિગેરે મેવો કહેવાય.

પાઠ ૪૦—ગાર સગંધી હકીકત પાછળ પાનામાં ખુલાસાથી આ-
પી છે.

પાઠ ૪૧—કાગડો બહુ ચંચળ છે. સાંજે પોતાને માળે આવે છે.
કોઈ કાંકરી લે તે પેહેલાં ઉડી જાય.—તેની ચાંચ બહુ મજબૂત છે
માટે કાગડાના જેવી ઠગાઇ ન રાખવી.

પાઠ ૪૨—કવિતા આગળ પાને દાખલ છે.

પાઠ ૪૩—૪૪—મા ખાપનાં છોકરાં તે સગાં ભાઈ બેન. કાકાનાં
કાકાનાં તે પણ ભાઈ બેન કહેવાય. મામાનાં તે મોળાઈ ભાઈ બેન.

એક મા ને બાપ જૂદા જૂદા તે દૂધ ભાઇ કે આંગળીઆત અથવા ક્રોડા
છ. બાપ એક ને મા જૂદી તે સાવકાં કે એરભાઇ કહેવાય. માનો
ભાઇ તે મામો — બાપનો ભાઇ તે કાકો-માની બેન તે મારી—પ
પત્ની બેન તે ફાઇ. ભાઇની વહુ તે ભાભી. વરનો ભાઇ તે દીએર.
વરની બેન તે નણદ. વરનાં તથા વહુનાં મા બાપ તે એક બીજને
સાસુ સસરા થાય. વહુનો ભાઇ તે સાજો; ને વહુની બેન તે સાળી.
વહુનાં તથા વરનાં મા બાપ તે એક બીજને દેવાઇ વેવાણુ થાય.

પાઠ ૪૫—આપણે જે લૂગડાં પહેરીએ તે બધાં કાપડ ગણાય.

પાઠ ૪૬—૪૭ બાર મહિના પાછળ છે.

પાઠ ૪૮—ઢોલ, નગાર, ત્રાંસા, સરણાઇ, પખાવ, દોકડ, ઝાંઝ, સ-
તાર, સારંગી, એ વિગરે દેશી; અને બીંગલ, રામઢોલ, પડવમ, વા-
જાં ને ઇચ્છે વાજાં છે, તે વીવા તથા દેવજોમાં ઘંટ વિગરેથી વાજ-
તાં શોભા આપે છે.

પાઠ ૪૯—પોતાનો જન્મ જે મહિનાની જે તિથીએ હોય તેજ
મહિનાની તેજ તિથી વરસો વરસ આવે તે જન્મગાંઠ કહેવાય, તે ધ-
ણોજ સારો દિવસ ગણાય, ને તે દિવસે બહુ આનંદમાં રહેવું ને સા-
ર સાર ખાવું ને ઓઢવું પહેરવું.

પાઠ ૫૦—ચોખ્ખાઇ એથી શરીર શોભે છે, મન આનંદમાં રહેછે
તેથી જે કામ કરવા ધારીએ તે કરી શકાય છે. ને પાંચ સારા મા-
ણસોમાં માન મળે; માટે ઘર તથા આંગણું વાળી ચોળી સાફ રા-
ખવું, શરીરે હમેશાં નાહી ચોળી સાફ થવું. મીઠું ઘસી દાતણથી મોન

હું સાફ કરવું: લૂગડાં સાફ ધોએલાં પહેરવાં.

પાઠ ૫૧—ખેડુત લોકો ખેતરમાં અનાજ પકવે છે. તે લઈ દળે ત્યારે લોટ થાય. પછી પાણી નાંખી ચિકવંછે, ત્યારબાદ એ હાથે ઘડે ને તાવડીમાં નાંખી અવળો સવળો ફેરવે ને નીચે તાપ ચુલામાં કરે ત્યારે રોટલો થાય. દૂધ ને રોટલો, દહીં સાથે રાંધેલા ચોખા, લાડવા સાથે વાત્ર, ખાવામાં મારા ભાઈઓ હોય. તો બહુ સ્વાદ લાગે.

પાઠ ૫૨—ઘણું છોકરા ઝાડતળે ડાળી સાથે દોરણાં બાંધી હીંચકતા તેવામાં એક છોકરે બીજા છોકરાને કાણીમારી તેથી બીજા છોકરાએ ને માર ખાનાર પર દયા લાવી, બીજાને ત્યાંથી કાઢી મૂક્યા ને તે છોકરાને ખૂબ હીંચકા ખવરાવ્યા, માટે જેમ પેલા બાલકો છોકરાએ કર્યું તેમ કરવું.

પાઠ ૫૩—ઊંદર ઘરમાં ઘણા રહે છે. તે સૌ જીવે છે, તે સારાં સારાં લૂગડાં કાપી ખાય — દીવાની વાટ લઈ જાય તો ઘર બાળીદે તેને બિલાડી પાળી હોયતો વશ રાખે.

પાઠ ૫૪—કવિતા આગળ દાખલ છે.

પાઠ ૫૫—૫૬—બકરી સૌએ જોઈ છે. તેનું દુધ બહુ હલકું છે. માંદા માણસને ખવરાવવાથી ગુણુ થાય. ધાવણુ બાળકની મા મરી જાય છે તેને પાય છે. બકરા બકરી કરતાં જળરા હોય છે.

પાઠ ૫૭—પાણી, ફૂવા, તળાવ, નદી, ટાંકા, વિગેરેમાં પુસ્કળ હોય છે, તે ચોમાસામાં વરસાદ વરસવાથી ચારે તરફ ખેંચાઈ ભરાય છે. તે પીવાથી પ્રાણુ ટકે છે. દરિયામાં પાણી ખાઈ હોય છે, તેમાં-

થી મીઠું પાકે છે. તે ખાતાં ખાઈ લાગે, પણ રાધિકા અનાજ, શા-
ક, અથાણાં વિગેરેમાં નાંખવામાં આવતાં મીઠાશ આપે છે. તેથી તેનું
નામ મીઠું પડ્યું છે.

પાઠ ૫૮—ઘણીની રજા વિના કપડથી ખીજે કાંઈ જાણુસ લે તે
ચોરી કહેવાય. માટે દસપતે જેમ લખોડી ચોરી તેમ કરવું નહિ. અ-
ને તેના ઘણીને પૂછી તે કહે તો લેવું.

પાઠ ૫૯—કવિતા આગળ દાખલ છે.

પાઠ ૬૦—૬૧—ધરના ભાગ વણુવ્યા છે.

પાઠ ૬૨—કૂકડી પોતાનાં બચ્ચાંને બહુ જાળવે છે. તેમાં કોઈ કૂ-
કડા હોય તેને માથે લાલ માંજર હોય તે સવારે વેહેલાં કૂકડુકૂક
બોલે છે એટલે સૌ માણુસ જીડી પોતાને ધંધે વળગે છે, તેથી સવંને
ફાયદો છે.

પાઠ ૬૧—કોઈ સાપને જરા છોલાણું હોય તો કીડીઓ વળગી
દુઃખ પાડે છે તે સાપને જીવથી મારી નાંખે છે. એવા જળરા સાપ
ને એવી કીણી કીડીઓ મારી નાંખે છે. તે પરથી લેવાની શીખામ-
ણુ જે—નળળા પણ ઝાઝા માણુસ હોય તો તેની સાથે વેર કરવું
નહિ, જીવો નળળી કીડીઓએ જળરા સાપનો જીવ લીધો.

પાઠ ૬૪—૬૫—જમીનપર પાણી પાવાથી જાત જાતના છોડવા
ધાય; નાના તે છોડવા ને મોટાં તે ઝાડ.

પાઠ ૬૬—એક છોકરો બહુ રીસાળ હતો, તે એક વખત જમ-
તાં કાંઈ બાળતમાં રીસાછ ખુણે જઈ બેઠો, ત્યાં વીંછી કરડ્યો, તે-

થી તેણે રીસાવાની ટેવ છોડી દીધી તેમ કોઈએ રીસાવું નહિ.

પાઠ ૬૭ — ચકલી માળા કરે છે. બચ્ચાંને ખોરાક ચાંચ મૂકી ખવરાવે છે. તેમ માણસોએ પણ પોતાનાં બચ્ચાંને બળવી ઊછેરવાં બેધએ.

પાઠ ૬૮ — સૂરજથી સર્વ ઠંડાણે અજવાળું પડે છે, તેથી રાત દિવસ થાય, ધંધા રોજગાર ચાલે છે. તેની ગરમીથી અનાજ વિગેરે પાકે છે. દરિયા, તળાવ, કૂવા વિગેરેનાં પાણી તપી આકાશમાં બધ પાછો વરસાદ વરસે છે.

પાઠ ૬૯ — એક છોકરો સીંગમાં બકરાં ચારતો હતો તેને ખોડી બુમો પાડવાની ટેવ હતી. તેથી વાઘ આવવાનું નામ લઇ બુમો પાડી. તેથી સર્વ લોકો આવ્યા, પણ તે ખોડું ઠર્યું; પછી બ્યારે ખરે ખરો વાઘ આવ્યો ત્યારે તેણે બુમો પાડી પણ કોઇ ન આવ્યું; તેથી તે વાઘે કેટલાંક બકરાં ફાડી ખાધાં, બૂંઓ બૂંડું બોલે તેના પર કોઇ ભરેંસો ન રાખે ને તેની પેઠે દુઃખી થાય.

પાઠ ૭૦ — બે કૂતરા ભાઈબંધ, એક ગરીબ ને એક લડવાયો. એ બંને બીજે ગામ ગયા ત્યાં તે ગામના બધા કૂતરાં સામાં થયાં તેમાં લડવાયો તે લડ્યો પણ તેને લીધે ગરીબે પણ માર ખાધો. માટે બૂંડાં છોકરાંની સોજત કરવી નહિ.

પાઠ ૭૧ — ભાઇ બેને હેત રાખવું સંખીને રહેવું. જે ચીજ હાય તે વહેંચી ખાવી. તેથી તમારા પર માળાપનું હેત વધે. ને શુભ રહે.

પાઠ ૭૨—આ બધી દુનિયાં, તેમાંની બધી ચીજો, પાણી પર્વતો સૂરજ, ચંદ્ર, આકાશ, તારા, અને આપણુ સર્વને ધ્રુવે બનાવ્યાછે. તેથી બહુ લાભ છે, તો તેનો ઉપકાર માની તેની ભક્તી કરવી.

પાઠ ૭૩—કવિતા આગળ દાખલ છે.

પાઠ ૭૪—હરીઓ નિશાળે પાટીપર બણુતો. તે હુશિઆર થવાથી રસ્તેપર લખવા લાગ્યો. નિશાળપર તથા બણવાપર પ્રિતિ રાખી મે-હેતાજીનો ઉપદેશ લેવો.

પાઠ ૭૫—પાટીપર ખડીથી માંજી લખવા વિષે.

પાઠ ૭૬—આસો મહિનાના અંધારીઆમાં તેરસ તે ધનતેરસ કહેવાયછે. તે દીવસે સોના રૂપાનાં જ્વત જ્વતનાં ઘરેણાં તૈયાર કર્યા.

પાઠ ૭૭—સોનાનાં ઘરેણાં થાય તે તવંગરજ કરી શકે તે કંઈ ફાયદો કરતા નથી. સોઢાનાં તમામ ખેતીનાં આબર થાય તેથી અનાજ પાકે ને સર્વને ગુણુ થાય. વળી તે મજબુત ને ધણું નિકળે તેથી સસ્તું, તેથી સોના કરતાં સોઢું ચઢીઆતું છે.

પાઠ ૭૮—આપણા શરીરમાં ડોકું ને ઘડ એવાં બે વાનાં મુખ્ય છે. ડોકું ખભાતી ઉપર છે. ડોકામાં, આંખ, કાન, નાક મોંદુ, જીભ, દાંત કપાળ, ને તે ઉપર વાળ છે. તે માથું કહેવાયછે.

પાઠ ૭૯—ડોકાની નીચેનો ભાગ ઘડ છે; તેમાં છાતી, હાથ, પેટ, પગ તેમાં ઢીંચણુ આંગળા વિગરે છે. તે બહુ ઉપયોગી છે.

પાઠ ૮૦—જેઠો ને હરીઓ એવા બે ખરાબ છોકરા હતા, એક વખત એક બહા છોકરા દુક્કભને સાથે લઈ એક આંખવાડીઆમાં ગયા; ત્યાં દુક્કભ તો એક કોરે ઉભો હતો તેવામાં તેનોરખવાળ આ-

વવાથી ત્રણેને માર્યા. માટે નઠારાની સોજત કરવી નહિ, કરેતો દુઃખ-
બની પેટે થાય.

પાઠ ૮૧—કવિતા આગળ દાખલ છે.

પાઠ ૮૨—ખાંડ શેરડીની થાયછે.

પાઠ ૮૩—ધણીના ધરમાંથી ચોર ખાતર પાડી ધન લઇ ગયા, તે
ધણીનો પાળેલો એક કૂતરો હતો તે પછવાડે જમનજર રાખી, પછી
સવારે ધણીને પિછોડી તાણી ઇશારત કરી ત્યાં લઇ જઇ ધન ખતા-
વ્યું તે તે ધણીએ કાઢ્યું. જુઓ કૂતરાં ધણીને આવા ગુણુ કરે ત્યા-
રે માણસે પણ તે કરતાં વિશેષ બદલો વાળવો.

પાઠ ૮૪—સાકર શેરડીમાંથી થાયછે. તે બહુ મોંઘી હોયછે. તેથી
ફક્ત તવંગરજ ઉપયોગ કરેછે, અને કેરી તો આંખાના ઝાડનું ફળ
છે, તે બહુ થાયછે. તેથી સસ્તી મળેછે. માટે ગરીબ વિગેરેના વા-
પરવામાં વધારે આવે.

પાઠ ૮૫—એક સમડી ચકલીના બચ્ચાંને મારવા ગઇ. તેવામાં વા-
ધરીની જાળમાં ફસાઇ ગઇ. તેથી વાધરીએ તેને મારી નાંખી. મા-
ટે આપણે કોઇને દુઃખ દઇએ તો આપણું પણ તેમજ થાય. ને તે-
વું દુઃખ સર્વને લાગતુ હોય.

પાઠ ૮૬—એક બળદને સીમમાં ચરતાં જોઇને દેડકાએ ઘેર જઇ પો-
તાની મા આગળ તેવું કદ કરવા માંડ્યું તેથી દેડકું શરી ગયું ને મ-
રણ પામ્યું. માટે આપણે જાણની બરાબરી કરવા જઇએ તો દેડકા-
ની પેઠે ખુવાર થઇ મરણ પામીએ.

પાઠ ૮૭—એક ચોર ધણીના ધરમાં ચોરી કરતો તેવામાં તે ધ-

હીનો કૂતરો બસવા મંડ્યો, તેવામાં ધણી જગી ઉઠ્યો ને ચોરને પ.
કડ્યો. માટે બધા ચાકરોએ પણ ધણીનો ગુણ કરવો.

પાઠ ૮૮—કોઈ તેહેવારપર ધણાં માણસો એકઠાં થઈ આનંદ ક-
રે તે મેળો ગણાય. તેમાં ધંધાદારીઓ, વેપારીઓ પોતપોતાનો મા-
લ લાવે.

પાઠ ૮૯—અનાજ જમીનપર ખેતરમાં ખેડૂત પકવે છે તેને સૂર-
જના તાપ તથા પાણીની જરૂર હોયછે, તેથી પાકે છે, તેમાંનાં જાત
જાતનાં અનાજ થાયછે. કઠોળ થાય તે દાળ થાય. કેટલાક રાંધીને
અને કેટલાક બારીને ખાવામાં આવેછે.

પાઠ ૯૦—તલ, એરંડી, સરસવ, ડોળ, લીંબોળી, બીઆં, કણુઝા,
વિગરેને ધાંચી ધાણીમાં પીસે છે. ત્યારે તેમાંથી તેલ નિકળેછે. તેલ
કાઢતાં બાકી રહે તે બોળ કહેવાય. તે ઢોરને ખવરાવેછે. કણુઝીઉં તેલ
ફાલ્લા બપર ચોપડાય. એ બધાં તેલ હીવે બાળવાના કામમાં આવે.

પાઠ ૯૧—આસો મહિનાનો છેલ્લો-૩૦ મો અમાસનો દિવસ તે દી-
વાળી અને તેને આગલે દિવસે કાળીચઉદસને પાછલે દિવસે ખેસતું વર્ષ
આ બધા તહેવાર દીવાળીના ગણાય છે. ત્યારથી ચોમાસુ બંધ થઈ
શિઆળો ખેસે છે. લોકો તે તારે ધરને સાફ કરે છે. લૂગડાં સાફ;
નવાં પહેરે છે. ધરેણાં ધાલેછે ને સાફ સાફ જમવાનું કરી જમેછે.
ને સર્વ રૈયત આનંદમાં રહે છે.



ગુજરાતી ત્રીજોપડીના પાઠોની સમજૂતી.

પાઠ ૧.-૨.—આજસુ છોકરો આજસથી બહુ ઠોઠ રહેતો તેથી તેનું નામ મૂરખો ઠર્યું. પછી ચાનક ચડતાં સુધર્યો, એટલે તેના પર મહેતાજી રાજ થયા ને મૂરખો ફેરવીને ડાહ્યાભાઈ ઠરાવ્યું માટે છોકરાએ મૂરખાના જેવી આજસ ન કરવી.

પાઠ ૪.—ભેંસ બહુ મોટું જનવર છે, તે દુધ આપેછે. પણ ગાયના કરતાં વધારે તેમાં ગુણુ છે.

પાઠ ૫—એક રાજાના કુંવરને કોઈ ગરીબના છોકરાએ ગાળો દીધી; તે રાજાને ખબર પડતાં પોતાની કચેરીના સર્વે માણસોને પૂછ્યું જે આને શું શીક્ષા કરવી. તે પરથી જેનો જેવો સ્વભાવ તે પ્રમાણે સૌએ જવાબ આપ્યો, પછી રાજાએ દયા લાવી શીખામણ આપી માફ કરી રમત આપી. માટે ગાળો દેવાની ટેવ રાખવી નહિ.

પાઠ ૭.—જૂદા જૂદા દેશમાં જૂદી જૂદી રીતભાત હોયછે. લૂગડાં પહેરવાનો પણ ચાલ જૂદો જૂદો હોયછે. કોઈની ચામડી લાલ, કોઈની કાળી, ને કોઈની ઘોળી હોયછે.

પાઠ ૮—ધાસ, અનાજ, વિગેરે સંધરવું જેથી દુકાળના નઠારા વખતમાં કામ આવે. કીડીઓ પણ જનાવર છે તોપણ દરમાં દાણા સંધરેછે, તે સર્વ સાથે સંપી રહેછે.

પાઠ ૯—વડતું ઝાડ ખીખ ઝાડ કરતાં વધારે ફેલાએલું ને ઊંચુ છે, ઊનાળામાં તેની છાયા આનંદકરતા છે. મુસાફરો તે તળે બે-

સેછે. તેનું લાકડું ઈમારત બાંધવામાં આવેછે.

પાઠ ૧૦—વિંછી નાના હોય તે પીળાને મોટા ને કાળા હોય છે. તેઓને આઠ પગ, બે ચિપીઆ ને એક પૂછડી હોયછે. પૂછડી ને છેડે ઝેરી ડાંખ હોયછે તે કરડે ત્યારે મોઢામાં ગરમી ન હોય તો ચૂસી થુંકી નાંખવું તે ભીંતે કે ઝાડ અથવા ગંદવાડામાં, કે પથ્થર તળે રહેછે.

પાઠ ૧૧.—છોડીઓને ભણવું તે ઉત્તમ છે, વિકાસતના લોકો આ પ્રગણે છોડીઓને ભણાવવાથી દેશ ઉંચે દરજ્જે ચડ્યો છે. તેથી વહેમ દૂર થાયછે, તેથી છોકરાઓ પણ તે આધારે માવડીઆ નહિ થતાં સુધારાના કામમાં આગેવાન થઇ દેશને દીપાવેછે. આપણા મુલકમાં પણ ઇંગ્રેજ સરકારે છોડીઓની નિશાળો દાખલ કરી છે. પ્રથમ ભણવા ન મોકલતા પરંતુ હવે તો અહુ હોંશ પેદા થઇછે. માટે પોતાની બેનો દીકરીઓને ભણાવવા પૂરી કાળજી રાખવી.

પાઠ ૧૨—પોપટ રંગે લીલો હોયછે તેને બે પગને પાંખો છે. તેને જેવું બોલતાં શીખવીએ તેવું આવડે છે, પણ શું બોલ્યો એમ તરત પૂછીએ તો ખબર મળે નહીં. આપણામાં પણ ભણેલાને બોલ્યા પછી જેને ન આવડે તેને પોપટ જેવો કહેછે. માટે તેમ પોપટ જેવું પક્ષી ન કહેવાતાં હુશીઆર થઇ માણસમાં ગણાવું તે સમજીને લાયક છે.

પાઠ ૧૪—એક વાધરીએ પોપટના બે બચ્ચાં લઈને એક સારા માણસને અને એક નઠારા માણસને વેચાતાં આપ્યાં. તેથી જોવા તે લોકો તેવાં થયાં; માટે આપણે પણ જો સારાની સોખત કરી.

એ તો તેવા થઈએ. “સોયત તેવી અસર.”

પાઠ ૧૫—એક કણખીને ત્રણ દિકરા હતા, તે તન દઇ કામ કરતા નહીં, તેથી કણખી મરવા પડતાં બોલ્યો જે માફ બધું ધન ખેતરમાં છે, તેથી તે મરી ગયા પછી ત્રણે જણે ખેતર ખૂબ ખોદ્યું તો તેમાંથી ધન ન નિકળ્યું; પણ જમીન જાડી ખોદાવાથી કસ થવાથી બપોળ ખુબ આવી. માટે મહેનત તેજ ધન બાણવું, ને મહેનત કરવી.

પાઠ ૧૬—આખી દુનિયાં તેમાંના તમામ પદાર્થો આકાશ મંડળ, સૂરજ, ચંદ્ર, પાણી, પર્વત, ધાસ, ઝાડ, નદી તથા પશુ, પંખી તથા આપણને ઇશ્વરે પેદા કર્યા છે, તેણે આપણને જે જોઈએ તે આપેલું છે. આપણે જેને કરીએ તે તથા બોલીએ તે સર્વ તે બાણે છે; અયોગ્ય કરીએ તો શિક્ષા કરે છે ને સાફ કરીએ તો રખવાળી કરે છે, તેની આપણાપર મેહેરબાની છે, અને તેને આપણી શીકર છે, તેટલી ખીજાને નથી. માટે રીતસર વર્તિ તેનું સમરણ કરવું તો આપણું તે સાફ કરશે. તે સર્વ ઠેકાણે રહેલો છે.

પાઠ ૧૭—જેમાં થોડી અને મૂલ મળૂરી તથા ખેડૂતની વસ્તી હોય તે ગામડું કહેવાય, જેમાં સારા સારા ધનવાન, આબરૂદાર ને વેપારી તથા ધણી વસ્તી તે શહેર ગણાય.

પાઠ ૧૮—આપણા શરીરમાં પાંચ ઈંદ્રીઓ છે, તે જુદા જુદા કામ કરવા પરથી સમજી શકાય. જોવાની તે આંખ, સ્પર્શવાની તે હાથ, સંકલ્પવાને નાક, સાંભળવાને કાન, ચામડીથી મહત્ત્વજનું બાણવામાં આવે.

પાઠ ૧૯—પોતાનું શરીર જેમ સાફ રાખવું તેમ ધર તથા આંગણું પણ ચોખ્ખું રાખવું. તેમ ન કરીએ તો મચ્છર, માંકડ, ચાંચડ, માખ, સાપ, વિંછી, કાનખજુરા વિગેરે થાય ને આપણને દુઃખી કરે, તથા વખતે જીવ પણ જાય. માટે ચોખ્ખાઈ રાખવી.

પાઠ ૨૧—ઘોડાને ચારપગ, પગમાં ડખો, એ સીમમાં ગાયો ભેગો ચરેછે, ને પુખારે છે. તે ઉપર ચડી મુસાફરી વિગેરે કરવાના કામમાં આવેછે.

પાઠ ૨૨—આમલીનું ઝાડ મોટું ને મજબુત થાયછે, તે પાતરાં ખટાશદાર તથા ખાટી આમલી થાયછે, તે હરેક ચીજમાં ખટાશ નાં ખરાના ઉપયોગમાં આવેછે. તેનું લાકડુ બહુ મજબુત છે. તે તમામ કામમાં આવેછે.

પાઠ ૨૪—આંખ છે નાની પણ તેથી મોટી મોટી જણસો દેખાયછે. જેને એક આંખે ન દેખાય તે કાણો, એ આંખે ન દેખે તે આંધળો, અને રાતે જેને સૂએ નહિ તે રતાંધળો કહેવાય. જ્યારે આપણે બહુ જોઈ શકીએ છીએ ત્યારે પરમેશ્વરનો મોટો ઉપકાર માનવો.

પાઠ ૨૫—મહેનત તેજ મુડી ને મહેનત તેજ ધન માટે મહેનત કરવાથી બધા સુખની પ્રાપ્તી થાય. “ કહેવત છે કે ” ચાકરી વિના બાખરી નહિ.”

પાઠ ૨૬—છાણુનો એકઠો ઢગસો કરી રાખ્યો હોય તો ગંધાય પણ પાતળું પાતળું લિંપીએ તો ફાયદો થાય તેમ ધનને સારે મારગે વાપરીએ તો ખીજને સુખ થએથી દાન ગણાય, ને ઇશ્વર આપણું કલ્યાણ કરે, માટે જૂએ મરતાં, જેનાથી રળવા જવાતું ન હોય, એટ-

લે જેના હાથ પગ અટક્યા હોય ને રોગી હોય તેવાને આપવું, તે સાફ છે.

પાઠ ૨૯—૩૦—લલ્લુએ પાધડી ફાટેલી તે માની જવાથી તેના મા આપને સાચું બોલ્યો જાણી બહુ હેત થયું. માટે સાચા બોલાં છોકરાં સર્વને વહાલાં લાગે છે.

પાઠ ૩૨—ઘેટાં બહુ કામનાં છે. તેના પર ઉન છે તેથી તેને ટાંઠ વાતી નથી. તેનું ઉન ઉનાળામાં કાતરી લેવાથી તેના ધણીને પૈસા ઉપજે છે, તેનાં લૂગડાં થાય છે. તેથી તેનું શરીર હલકું થવાથી તેને સુખ થાય છે. તેનું દૂધ ખાવાના કામમાં આવે છે, તેનું ચામડું કામમાં આવે છે તે આપડાં ગરીબ એવાં છે કે કોઈને દુઃખ દેતાં નથી. માટે આપણે પણ એવા ગરીબ થવું કે બીજાને નડીએ નહીં.

પાઠ ૩૩—લીમડાનું ઝાડ મોટું ને જખડું થાય છે. તેનો છાંયો ઘણો સારોને ઉપયોગી હોય છે રોગી માણસને તેની છાલ વિગેરે પીવાથી રોગ મટે છે. મીઠા લીમડાના પાનની કઢી થાય છે, તે ઓષડના કામમાં આવે છે તેનું લાકડું બહુ મજબૂત છે તે ઘણાં કામમાં આવે છે તેમાં કડવાશ હોય છે.

પાઠ ૩૪—ધાન્યનું બીજું નામ અનાજ; તે આપણા ખાવાના કામમાં આવે છે તેથી આપણુ જીવન ટકી રહ્યું છે તેના સાંઠા, રાડાં થાય છે તે દોરના ખાધામાં આવે છે.

પાઠ ૩૬—૩૭—જમીન એજ ધરતી તેમાં જોજો જોઈએ તે અંદર તથા ઉપર છે; તેથી આપણને પુણું લાભ સાર્યે આનંદ છે. ધરતી ઊપર નદી, પર્વત, ઝાડ, વનસ્પતી, વિગેરે છે તે આપણા લા-

બ સારજ ઇશ્વરે આપ્યાંછે માટે ઈશ્વરનો પાડ માનવો ને તેને સ્મરવો.

પાઠ ૩૮—આપણો જન્મ મા આપથી થયો. આપણે નાના હતા ત્યારે તેમણે ધણું ધણું સંકટ વેઠી ઉછેરી આપણને મોટા કર્યા. સિવાય જેને જેઈએ તે પુરૂં પાડયું. માટે આપણે તેનો બદલો વાળવા સેવા કરવી અને તેના કલ્યાણમાં રહેવું.

પાઠ ૪૦.—આવળનાં ઝાડ કાળી ભોયમાં થાયછે. તેનાં પાંદડાં ઝીણાં ને આછાં તથા તેને કાંટા થાયછે. તેની સોટીઓનાં દાતણુ થાયછે. તેનાં પાંદડાં તથા છાલ મોઢામાં ગરમી થઇ હોયતો મોઢામાં રાખવાથી ફાયદો કરેછે તેનું લાકડું ગાડાનાં પૈડા બનાવવાના કામમાં તથા ચીચોડા, (સેરડી પીલવાના) કામમાં આવેછે. તેની છાલમાં તૂરાશ રહેલીછે; તેથી ઢોરના આળા ચામડા તેના પાણુના કુંડમાં બોળવામાં આવેછે, તેથી ચામડા સાફ થાયછે.

પાઠ ૪૧—શેખસક્ષી એટલે ખોટા વિચાર બાંધનાર; તે નહિ હોય તેમાંથી મોટા મોટા વિચાર બાંધી રાત દિવસ નકામા નિર્ગમન કરેછે, ને બહુ તેમ જરૂરી રાખે તો તેને સનેપાત (ધેલાપણુ)નો રોગ થવાથી ખુવાર થાયછે. જેમ આ શેખસક્ષીના પાઠમાં દાખલો છે તે સર્વેના ધ્યાનમાં હશે. પોતાનું હરેક કામ ખોટી થવા સાથે બગડેછે ને નુકસાન થાયછે.

પાઠ ૪૨—૪૩—શેઠના ઘરમાં જોઈતી સગવડતા કરેલી તે સંબંધી છે.

પાઠ ૪૫—ડોકમાં નાક સ્વાસ ભેવાનું ને ઝુંઘરાનું તથા મોઢું

ખાવાનું ચાખવાનું કામ કરવાથી સર્વદા મનને આનંદ થવા સાથે જીવન ટકી રહી માણસ શોભે છે.

પાઠ ૪૬—રામલો છોકરો બહુ ખીજવાતો, નિશાળેથી ઘેર જતાં રસ્તામાં ચોટલીનું નામદષ્ટ ખીજવવા મંડ્યા તેથી તેણે ખીજવાઇને પગરખી ફેંકી તે ખોલડાપર પડી. પછી પાટી ફેંકી તે કુટી ગઇ, પછી પછવાડે દોડ્યો તેમાં એક ગાય સાથે અથડાઇ ખાખોચીઆમાં પડ્યો ને બહુ વાગ્યું તેનાપર કાદવ કાદવ થઇ રહ્યું તેનાં મા બાપ ઘેર લઇ ગયાં ને ઝોપડ ક્યાં ત્યારે ઘણે રોજે સાંજે થયો. માટે ખીજવાય તેના આવા હાલ થાય, માટે કોઇના ખીજવાયાથી ખીજવાનું નહીં.

પાઠ ૪૭—કૂતરાના બચ્ચાંને ફૂરકુરીઆં કહેછે, તે નાનાં હોય ત્યારે બહુ વહાલાં લાગેછે. મોટાં થએબહુ ગુણુ કરેછે રાજમાં હોય ત્યારે પૂછડી હલાવે, ખીએ ત્યારે પગમાં ધાસે.

પાઠ ૪૮—૪૯—કોઈ ખી વાગ્યાથી થોડા રોજમાં મોટું થાય, તેમાંથી ફૂલ થઇ ફળ થાયછે.

પાઠ ૫૦—એક કાડી તરશી થવાથી પાણી પીવા ગઈ તેમાંથી વેહેળામાં તણાવા લાગી તે એક કબુતરે ઝાડનું પાંદડું તોડી પાણીમાં નાંખ્યું, તે પર કાડી ચડી બહાર નીકળી. એક વખત કબુતર પર વાઘરી જળ નાંખતો હતો, તેવામાં પેલી કાડીએ જઇ તેને પગે ચટકા લીધો એટલે તે ઉડી ગયું એટલે બચી ગયું. જીઓ જનાવર તે પશુ બદલો આપવાને ચૂકતાં નથી તો માણસે તો બદલો વાળવોજ જોઇએ તો તેથી આપણી દુનીઆમાં આજર વધે. આપ-

હું સાથે થાય, પરમેશ્વર રાજી રહેછે

પાઠ ૫૧—ડાંગરને ચોખ્ખા ફાતરાં કાઢવાથી કહેછે, રાંધેલા ચોખ્ખા તે ભાત તેનો તર એક સાથે ફાતરાંવાળી ડાંગરથી વાવી ખી કરે તે તર ચોખ્ખા ખેતરના જૂદા જૂદા ક્યારામાં રોપી દે ને પાણી પી-ડાંગર પેદા થાયછે. આ અર્થુ ઇશ્વરની મરજીથી થાયછે માટે આપણે ઇશ્વરનો મોટો પાઠ માનવો જોઈએ.

પાઠ ૫૨—ખિલાડાં ધણો ગુણ કરેછે. ધરમાં જોઈરનું દુઃખ થવા દેતાં નથી. પોતાનાં અચ્ચાંને એક ઠેકાણેથી ખીજે ઠેકાણે મોઢામાં ધાલી લઈ જાયછે; ત્યારે જરાએ દાંત એસવા નહિ દેતાં બહુ જાળવેછે, તેમ પોતાનાં અચ્ચાંને માણસે જાળવવાં.

પાઠ ૫૩—ખીકણ છોકરો અધાથી ડરે. એક વખત કુરકુરીઈ તેની પછવાડે પડ્યું તેથી ડરી નાસતાં કાઢવામાં પડ્યો તેથી બગડ્યો ને ચોંટી બેઠો. માણસોએ તેને કાઢ્યો તે દિવસથી તેણે રોવાની ટેવ છોડી દીધી.

પાઠ ૫૪—દરિયાના ખારા પાણીમાંથી મીઠું પાકેછે, તે પાણીને બહાર ક્યારડા કરી તેમાં સૂરજના તાપે પાણીબરી સૂકાઈ જતાં બાકી પડ અધાઈ રહે તે ભેગા કરી ઢગલા કરે તે મીઠાના રાશ કહેવાયછે. મીઠાની જગા તે અગર, ને પકવનાર તે અગરી કહેવાયછે. મીઠાના રાશ પાણીથી ધોવાઈ ન જાય તે માટે તેપર મટોડી ઢાંકે, અથવા ખડ પાથરી બાળે છે તેથી પડ અધાઈ જાયછે.

પાઠ ૫૫—થોડે ખોદવાથી કૂવો થાય; કાંકરે કાંકરે પાળ બાંધાય; ડીપે ડીપે સરોવર બરાય; સુંડને સુંડને ધઉનું ગાડું બરાય; એ

ક એક ઈંટ મૂકવાથી ઘર બંધાય છે. તેવીજ રીતે થોડે થોડે ભણી-એ તો પડિત થવાય, માટે એક એક પાઠ હમેશ ભણવો.

પાઠ ૫૭-૫૮—આ પાઠોની ધાતુની વિગત પાછળ દાખલ થઈ ગઈ છે.

પાઠ ૫૯—ઘણી લાકડી ભેળી કરી ભાંગવા આપવાથી ભાંગે નહિ, પણ એક એક છુટી કરી ભાંગે તો તરત બધી લાકડી ભાંગી જાય, તેમ બધા સંપ કરીએ તો હુશ્મનનું કાંઈ આસે નહિ, પણ એક એક સંપ છોડી નોખા થઈએ તો લાકડીની પેઠે નાશ થાય.

પાઠ ૬૦—બધાં જંગલ ને ઝાડી વિશેષ ત્યાં વાંદરાં બહુ થાય, તેમાંનાં કેટલાંકનાં મોં રાતાં ને કેટલાંકનાં કાળાં હોય છે, રાતામોંનાં માંકડાં કહેવાય છે. રાતા મોંનાં ખારીલાં હોય છે; તેને બે હાથ બે પગ, ને પૂછડી, તથા માણસના જેવું મોં હોય છે, તે બહુ અટક્યાળાં હોય છે. છોકરાં જે અટક્યાળાં થાય તે વાંદરાં જેવાં ગણાય.

પાઠ ૬૧—એક છોકરાના બે માલિક થવાથી કજીઓ થતાં સરકારમાં જતાં તે છોકરાના બે કડકા કરવા ફરમાવ્યું, તેથી ખરી માને ઘણીજ દયા આવી ને કડકા કરવા ના પાડી, પણ બીજીને કાંઈ પણ દયા ન આવી. આ પરથી પેલી ખરી માને તે છોકરો સ્વાધિન કરતાં પેલી બીજીને શિક્ષા કરી ગામ બહાર કાઢી મૂકી. જે કોઈ બીજીનો ખોટો માલિક થાય તેના આવા હાલ થાય.

પાઠ ૬૨-૬૩—પાછળ પાને વિસ્તારથી લખવામાં છે.

પાઠ ૬૪—વા તમામ જગામાં છે, તેથી તમામ ચીજ તથા જીવની ઉત્પત્તિ છે. કોઈ કામ જાંધું વાળીએ તોપણ વા જતો રહેતો

નથી. પાણી જેમ જેમ ભરાય તેમ તેમ તે દૂર ખસે. વાથી આપ-
ણે જીવીએ છીએ; નાક મોઢું બંધ કરી બેસીએતો તરત મરણ પા-
મીએ માટે વા તેવો તથા તેટલો ઉપયોગી છે. વા ધીમો પડે ત્યારે બ-
કારો થાય તે બકારો પંખો હલાવવાથી બંધ થાય.

ખાંડ ૬૫—પાણીમાં પથ્થરો નાંખવાથી કુંડાળાં થાયછે તે લ-
હેશે ગણાય તે પવનથીજ નગારાપર ડાંડી મારવાથી ચામડાનો થ-
ડકારો થઈ તે પ્રવાહી વા હલતાં આપણા કાન માંહેલા વા સાથે થ-
ડકારો મિશ્ર થઈ કાન માંહેના પાતળા પડ સાથે અથડાતાં જેવો અ-
વાજ થાય તેવોજ માલમ પડેછે, તેથી આપણે સાંભળીએ છીએ.

ખાંડ ૬૬.—શણનાં તથા ચીંચરાં જે શરીરોમાં રખડતાં મા-
લમ પડેછે તેને લઈ ઘોઈ ચુનાના પાણીમાં થોડા રોજ બોળી સડ-
વા દઈ કાઢી ખાંડી ભૂકો કરી વાળાની ચાળણીમાં ગાળી કાઢે છે,
તેથી માવો જામી જતાં કાગળ બંધાયછે, તે લખાય તેવા થતા ન-
થી. ધર્જાની બેળને ફટકડીના પાણીમાં બોળી કાઢેછે તે આ કાગળ,
જૂના કાગળોને પલાળી ઘોવાથી માવો થતાં ઉપર પ્રમાણે કાગળ
બને છે. સૌથી સારા કાગળ તે સાહેબખાની કહેવાયછે. કાગળ બેચ-
નાર કાગદી ગણાય. ચોવીશ તાવનો એક ધા ને વીશ ધાનું એકરી-
મ ગણાયછે.

ખાંડ ૬૭.—એક ભણ્યા વગરનો મૂરખ સારાં લૂગડાં પહેરીને
રસ્તામાં જતાં માલમ પડવાથી કોઈ સ્ત્રી પરદેશથી આવેલા પોતા-
ના ધણીનો પત્ર વંચાવા ગઈ પણ તે મૂરખ કાગળ જોઈ રોવા લા-
ગતાં તે સ્ત્રીને પણ શ્રાવણ પડી જે કાંઈ માડી ખબર હશે. પછી ર-

ડવાનું કારણ પૂછતાં મૂરખે કહ્યું જે હું બણ્યો નહિ તેથી મારી મૂ-
રખાઇને રડું છું. માટે ન બણે તેને પ્રજ્ઞેતો થતાં લાજ મરવું પડે;
અને પરતાવો થઇ આવા હાલ થાય.

૫૧૪ ૬૯.—ગધેડાંને ચાર પગ તે પાતળા ને ડાખો જાડો છે,
તેથી તે સીધી ટેકરીપર ચડી શકેછે, તે ધીમાં હોયછે, તે ભૂકે છે,
વધારે ચાલે ને બોળે ખેંચી જાય. આપણા મૂલકમાં કોઇ ગધેડે બે-
સે તો લાજ, પણ સિંધ દેશમાં મોટા મોટા અમીર પણ ગધેડે બે-
સેછે. ગધેડાં ઉકરડા કે રાખમાં આજોટે છે; તેવારે જ્યાં ડોક આવે
ત્યાં સાફ ને સરખું કરેછે. તેના કાન લાંબા છે, ગધેડીનું દૂધ માંદા-
ને પાય તો ગુણ થાયછે.

૫૧૪ ૭૦.—ગધેડાંને ભત્રીજે ગુણ કરવાથી કાકાને ઘેર કાકો
મરી જતાં, ત્યાં લઇ જઈ બાંધતાં; તે ઠેકાણે પગ ઠપકારતાં, તે જ-
ગાએ ખોદવાથી ધનનો ચર જડયો. જુઓ ગધેડાં પણ સાચવવાનો
ગુણ ભૂલતાં નથી; તો માણસે પણ ગુણ કરનારનો બદલો વાળવો
જોઈએ છીએ.

૫૧૪ ૭૧.—રેશમના કીડા શેતૂરનાં ઝાડનાં પાંદડાં ખાઈ જાય
છે, તે ગરમ મુલકમાં પેદા થાયછે. તે કોશેટા કરેછે, તે કરતાં તુરત ક-
રડી મરી જાયછે; પણ તે અગાઉ કોશેટા લઇ લેઇ તેનું રેશમ શી-
રડીપર લેઇ લેતો, તે પ્રથમ પીળા રંગનું હોયછે; તેનાં જાત જાતનાં
રેશમી લૂગડાં થાયછે. તેને જેવો રંગ જોઈએ તેવો ચડાવેછે, ને લૂ-
ગડાં બનાવેછે.

૫૧૪ ૭૨.—પાછળ પ્રમાણે મચ્છર જીત મેળવતાં, બહુ અ-

હંકાર થવાથી તે પૂલાનો હતો, તેવામાં કરોળીઆના જાળામાં ફસાઈ જતાં નીકળવાનું કરતો જાય, તેમ તેમ વધારે અટવાણો, ને કરોળીએ આવી આવી મારી નાંખ્યો. માદ રાખતું જે બહુ બેહેકી જતાં શેરને માથે સવાશેર હોયજ- ને તેવી મૂરખાઈપર સજ્જ કરનાર મળેજ.

પાઠ ૭૪—ખીસકોલીને બે હાથ, બે પગ, બે કાન, ને એક પૂછડી હોયછે, તેના પર રૂવાં છે, તેપર ઘોળા લીસોટા છે. તે બહુ ચંચળ, રમુજ, ને નાનુક છે. તે આડપર ને જીતપર ચડેછે, તે દાણા ખાયછે.

પાઠ ૭૫—એક છોકરો નાતમાં તેની મા જોડે જમવા ગયો ત્યાં તેની માએ થોડું જમવા કહ્યું, પણ તેણે તો ખીજો જરા વધારાનો લાડુ સંતાડી ખાવા વિચાર્યું; જુઓ આ છોકરે કડકા લાડુ સાં રૂ તેની માને છેતરી તેથી તે નારાજ થઈ ને પરમેશ્વર પણ નારાજ થયો, તેથી તેને સજ્જ કર્યા વિના છોડવાનો નહિ. આ ઉપરથી માદ રાખતું જે છેતરતું એ મોટું પાપ છે ને ધર્મ સજ્જ કરે છે.

પાઠ ૭૬—આ ઘડી, પળ વગેરેની વધારે હકીકત પાછળ દાખલ કરેલી છે.

પાઠ ૭૭—સોના રૂપા સંબંધી પાછળ દાખલ કરેલી છે.

પાઠ ૭૮-૭૯—આખી દુનિઆમાં જીવના પ્રકાર બે પડે. એક તો જેને અંગજ્ઞાન છે તે, ને ખીજો તર્કશક્તિ તથા અંગજ્ઞાન છે તે. આવા પહેલા ભાગમાં તમામ જવજંતુ, પશુ, પંખી, વિગેરે; અને ખીજામાં ફક્ત માણસજ. બધાં જીવોના શરીરના માટા જુલજુલ-

દા છે. જેમાંના કેટલાંક આકાશમાં, કેટલાંક પાણીમાં, કેટલાંક જમીનપરજ રહેનારાં હોયછે.

તેમનો ખોરાક તેમને લગતો જૂદો જૂદોછે; પણ માણસ તો જમીન ઉપરજ રહેછે, અનાજ ખાયછે. તેને બે પગ, બે હાથ, મોઢું, એક નાક, બે આંખો ને બે કાન છે, તથા અક્કલ છે તેથી આપણે આપણા તથા જીવનનો બચાવ સાથે ગુજરાન ચલાવવા ઉદ્યોગ કરીએ છીએ. આ કારણથી આપણામાં ઇશ્વરની ભક્તિ કરવાની સક્તિછે, એ ખાસ કહી શકાયછે; માટે દુનિયામાં સર્વ જનવરોનું તથા ગરીબ ગરબાનું તથા બચ્ચાં, રોગી વિગેરેનું પાલન કરી ઉદ્યોગ કરી ગુજરાન ચલાવવું, ને સર્વનું સાફ ઇચ્છી ઇશ્વરની ભક્તિ કરવી; આ આપણું કામછે.

પાઠ ૮૦—ભાઈનું બેન ઉપર ને બેનનું ભાઈ ઉપર અરસ પરસ હેત હોયજ તે સ્વાભાવિકજ છે જુઓ લડુ ને લખીનો દાખલો. તે કેવાં ડાહ્યાં ! તમારે પણ એવું હેત રાખવું.

પાઠ ૮૨—પાણીની ધણી જરૂર છે, વાની જેવી જરૂર તેવીજ પાણીની પણ જરૂર ગણાય; દરિયા તથા જમીનપરનું પાણી સૂરજની ગરમીથી ઊંચે ચડી વરસાદ, કરા, આકળ, ઓસ, બરફ, ધૂમર ને વરાળ રૂપે જમીનપર પાછું પડેછે, પાણી ન હોયતો આપણે જીવીએ નહિ; તેમજ અનાજ, ઝાડ વિગેરે પાણીથીજ ઉત્પન્ન થાયછે. આ પણ પરમેશ્વરનોજ પાઠ માનવો.

પાઠ ૮૩—સાપ તમે સર્વે જણે જોયોછે. તેને બહાર પગ નથી; પણ પાંસળાઓના ટેકાવતી ચાલેછે તે બહુ ઝેરીછે, તે કરડ

તો તુરત થોડે છોટ જોરથી ખાટો બાંધવો, પછીતુરત કોઈ ડાહ્યા માણસ પાસે લઈ જવો ને ઉપાય કરવા. આપણામાં કોઈ શત્રુ, અગર ખરાબ માણસ હોય તેને સાથ જેવો કહેછે, માટે એમ લોકો કહે તેમ નહિ થતાં સર્વનું સાઈ ચઢાવું.

પાઠ ૮૪—૮૫—એક વખત સિંહના શરીર ઉપર કેટલાક ઊંદરો દોડા દોડ કરવા મંડ્યા, તેવામાં એક ઊંદર સિંહના ઝપાટામાં આવ્યો તે કરગરવા મંડ્યો તેથી સિંહે છોડ્યો—ત્યારબાદ એક વખત એક જાળમાં સિંહ પ્રસાદ ગયો, તેને પેલા ઊંદરે જાળ કાતરી બદલો વાળ્યો ને તે જાળમાંથી મુક્ત કર્યો. જુઓ જનવર પછી વખત આવ્યે બદલો વાળવા ચૂકતાં નથી, ત્યારે આપણે શુશુ કરનારનો વખત આવે બદલો વાળવો.

પાઠ ૮૬.—શણુના છોડ માણસ જેવડા થાયછે, તે પાકયાબાદ લાવી પાણીમાં પલાળી તેનાપરથી રેસા કાઢી તેને ઘોષ સાધ કરી તેની સૂતળી વણેછે, ને બોયાંની દીવાસળી કરેછે.

પાઠ ૮૭.—શિઆળ કૂતરાના જેવડું હોયછે, તે જંગલમાં રહેછે, મૂએલાં જનવરોને શીડી ખાયછે. તે બહુ બીકણુછે દિવસે તો બહાર નીકળેજ નહી, તેનો રંગ મેલો પીળો છે રાતે બહાર નીકળે ને ટાંકમાં બહુ જુઓ પાડેછે. તે ખડેર કે બોલ બોદી રહેછે. શેરડીના વાંઢમાં પેશી બહુ નુકશાત કરેછે. તેની લૂચ્યાઇની ઘણી વાતો છે.

પાઠ ૮૮—૮૯—પહેલે દિવસે એક સોમીઆને ભેરથી એક ધૂતારો પોતાને ભેર જમણુવાર સળખથી તપેલાં લઈ ગયો; તેમાં બીજા નાનાં (બચ્ચાં) તપેલાં મૂકી વિઆણુનું નામ ઇઈ પાછાં મૂકી ગ-

મો. ખીજો દિવસે પાછો તેનેજ ઘેરથી તપેલાં લઈ ગયો ને તપેલાં મરી ગયાં ઠરાવી પાછાં આખ્યાં નહિં. આ ઉપરથી લોભીઆએ કમ્પૂલ કર્યુંકે જન્મે તે મરે; તેથી ચૂપ થઇ ગયો કહેવત છે કે “ જ્યાં લોભીઆ વસતા હોય ત્યાં ધૂતારા ભૂખે ન મરે ”

પાઠ ૯૦ બીંડીના છોડ માણસ જેવડા ઊંચા થાયછે. તે પાક્યા બાદ લાવી પાણીમાં નાંખેછે. પછી પાણીમાંથી કાઢી તેની છાલ કાઢી તેના દોરડા વણી ખાટલા, વરત, દોર, વિગેરે કરેછે તેનાં બોયાંની દીવાસળી થાયછે. તેનો રંગ ઘોળો હોયછે, ને તે બહુ ટકાઉ છે. .

પાઠ ૯૧.—ઉંટ ઉંચાને લાંબા છે. તે અઢારે ઠેકાણે વળેલાં હોયછે તેના બરડા વચ્ચેવચ્ચ ખુંધ છે. તેના નોગ માણસોએ કાઠા પણુ બનાવ્યાછે. ઉંટ રેતીવાળી જમીનમાં મુસાફરી કરવાના કામમાં આવેછે તે બહુઝડપથી ચાલેછે. ઊંટને ઘણા દીવસ ખાવાતું ન મળે. તેની ખુંધ નાની થતી જાયછે ને તે ખુંધથી પોષણુ થાયછે. તેના પેટના એક ભાગમાં ચોખ્ખું પાણી હોયછે. તેથી વખતે જીવ બચાવેછે.

પાઠ ૯૨—૯૩.—કેટલાકનાં પૂલ, કેટલાકનાં ૧૧, ને કેટલાંકનાં બીઆં આપણા ખાવામાં આવે છે.

પાઠ ૯૪.—વાહાણુ લાકડાનાં થાય છે તેને તળીએ તાંબાનું પંતરૂં જડેલું હોય છે. તથા ખીલા પણુ તાંબાના જડેલા હોય છે. કારણુ કે દરિઆમાં કેટલેટ ઠેકાણુ લોહસુંબકનાં ખડક આવે તો વાહાણુ તૂટી જાય. તે પ્રાણીમાં તરે છે. દરિઆની મુસાફરી, કે લાકડાના કામમાં બહુ આવે છે. નાનાં વાહાણુ તે હોડીઆં કહેવાય છે. જેમાં પ્રરાણયંત્ર તે આગબોટ કહેવાયછે.

પાઠ ૬૫-૯૧.—રૈંછ જંગલમાં રહે છે. જમીન પર આલે છે, ઝડપથી દોડે છે. તેમાંનાં કેટલાંક જૂરાં ને કેટલાંએક ઘોળાં હોય છે રૈંછને વાળ બહુ હોય છે. ચાર પગે ચાલે છે. તેને માણસો પાળી કે લીએકે રમતો શીખવે છે. તે ફળ, કંદ, માંસ, માંસ કે મધ ખાય છે.

પાઠ ૯૭-૯૮.—આ વિષે પાછળ કેટલું લખાઈ ગયેલું છે.

પાઠ ૯૯-૧૦૦-૧૦૧.—આ વિષે પાછળ કેટલું લખાઈ ગયું છે.

પાઠ ૧૦૨.—હાથી તમે જોયો હશે. તે બહુ જખર જાનવર છે. તે બે માણસ ઉપરા ઉપરી ઉભાં રહે તેટલો ઉંચો, અને સાત માણસ લાંબા હાથ કરી એક પીનનાં આંગળાં પકડી ફરતાં ઉભાં રહે તેટલો ઘેરાવામાં હોય છે. તેના પ્રમાણમાં પૂછડી બહુ નાની હોય છે તેને એક સુંઠ છે. તે વતી ગાંઠ છોડે તથા ખાવાનું પીવાનું કામ કરે છે. તેના મોઢામાં ચાવવાના દાંત હોય છે, ને બહાર બે મોઢા દેખાડવાના છે, તે દુશ્મનને મારે છે. આપણામાં કોઈ લુચ્ચો હોય તેને તે દાંતની કહેવત કહેવાય છે. મારે તેવી લુચ્ચાઈ ન રાખવી. તે દાંતના ચૂડા, હાથા વિગેરે ચીજો થાય છે.

પાઠ ૧૦૩.—જ્યાં પથરાની છત હોય ત્યાં પથરાનાં ધર બાંધે છે; અને પીળે ચીકણી માટીમાં ગોતર, રાખ મેળવી લાકડાના ચોકઠામાં ગોઠવી છંટા પાડી તેને પકવી ધર બાંધે છે. પીતળના સંચાથી છંટા પાડે તો ધણો લાભ થાય છે.

પાઠ ૧૦૪.—ભીંતનો પાયો જમીન ખોદીને ઉંડો નાંખે છે, કારણ કે સ્થિર રહે. તેમાં કોલ પાથરી તેપર છંટા મૂકે; જ્યાં ચૂ-

તાનો કાલ પાચરી ઇટા મૂકે આ જમાણે કરતાં ભીંત થાય.

પાઠ ૧૦૩.—જીનો તૈયાર થયાબાદ મુતાર આવી લાકડાથી માળા લેછે તેપર નળાંમાં પાચરેછે, ત્યાર બાદ ભીંતના વચ્ચલા બા-
જમાં કેટલાક માળ પણ બાંધે છે.

પાઠ ૧૦૬.—લોહા વિષે આગળ લખવામાં આવ્યું છે.

પાઠ ૧૦૭—૧૦૮.—બકરાં સૌએ જોયાં છે.

પાઠ ૧૦૯.—કપાસિઆ ખેતરમાં વાવે, તેમાંથી કપાસ થાય, તેને પીસે તેમાંથી ર થાય, તેનાં પહેરવાનાં જાત જાતનાં લૂગડાં થાયછે.

પાઠ ૧૧૦.—સૂરજ વિષે પાછળ કહેવામાં આવ્યું છે.

પાઠ ૧૧૧.—ચંદ્ર એ સૂરજ કરતાં પૃથ્વી નજીક છે. ચંદ્ર-
મા પુનેમને દહાડે જોળ દેખાયછે. એમ અધારીઆના પંદરે દિવસ દરરોજ નાનો થતો જાય ને બમે ઘડી મોટો ઉગે છે. એમ કરતાં કરતાં છેક નાનો થતો જાયછે. સવારે ઉગતો દેખાય છે. અન્નવાળી-
આમાં ખીજથી દેખાવો શરૂ થઈ હમેશાં જરા જરા વહેલો અને મોટો થતો જતાં પુનમે આખો દેખાયછે. તે પૃથ્વીની આસપાસ ફરેછે. તે એક ગ્રહ છે. પણ તેમાં વાતાવરણ નથી તેથી તેમાં જીવની ઉત્પત્તિ નથી. તે પોતે પ્રકાશમાન નથી પણ દર્પણ ઉપર સૂરજ-
નું તેજ પડી પાછુ આપણી બધી આવેછે,

પાઠ ૧૧૨.—કલાકનેમિનિટ વિષે પાછળ ખોલવામાં આવ્યું છે.

પાઠ ૧૧૩.—તારા આકાશમાં ઘણા ઉંચા ને મોટા છે એક દોહતો ઘોડો તે બધી દોડાવીએ તો આપણા માયામાં વાળ છે તે-
થી પણ વધારે વરસે ત્યાં મહોંએ નહિ એટલા દૂર છે તેથી નાના લા-

જે છે. તારા ઝોક ચળકતા ને ખીખર સ્થિર છે. જેનું તેજ ચળકતું હા-
ભતું ને ઘોળું દેખાય તે તારા અને જેનું તેજ સ્થિર ને લાલાસપદ્મ
દેખાય તે આપણી પૃથ્વીની પેઠે શુદ્ધ છે, તે અંધારી રાતે દેખાય
છે. ને હીરાની માફક ચળકે છે. તે ચંદ્રની પેઠે દ્રવ્ય કરે છે. ગગનમાં
કાંઈ વખત પૂછડીઆ તારા દેખાય છે. તે શૂરખ લોકો ખપ્પર નહિ
તેથી વરસમાં નવા જૂનું યવાની દહેશતમાં પડે છે. તે કેવળ શૂરખ-
પ્ર સમજવી.

ખાંડ ૧૧૪.—૧૧૫.—વરસાદ વિષે પાછળ બોલવામાં આ-
વ્યું છે.

ખાંડ ૧૧૭—આપણી આસપાસ; જીએ નીચે શરીરમાં, બ-
નવરમાં; ઝાડમાં અને વનસ્પતિ એમ સર્વ જગોએ પરમેશ્વર છે (પ-
રમ=મોટા+ઈશ્વર=ધણી;=મોટા ધણી; પવનને જેમ આપણે દેખતા
નથી પણ તેનાં કામ પાંદડા હાલવા ઉપરથી કહીએ છીએ જે પવ-
ન છે, તમે આ બધી દુનિઆં, તેમાંના પદાર્થો તથા આપણને બ-
નાવ્યા તથા જે જે જોઈએ તે પણ સરળ્યું તેથી તેનો કર્મ કામ
ઉપરથી જરૂર જાણવું જે પરમેશ્વર છે. પણ તે પવનની પેઠે દેખા-
તો નથી

ખાંડ ૧૧૯—૧૨૦—જેનું નામ પાડેલું હોય, જે નજરે જોવા-
માં આવે જેના કામપરથી જણાય, જે નજરે જોવામાં આવે, જેના
કામપરથી જણાય, જે અથડાવાથી સુધવાથી, કે અવાજથી આપણ
ને માલમ પડે જે તે છે; તે બધાને વ્યાકરણમાં “નામ” એમ સં-
જ્ઞ કરે છે.

ખાઠ ૧૨૧—૧૨૨—૧૨૩—મંથુ ને ધનુ એ બે છોકરાનો બાપ
 ગરીબ ને આંધળો હતો, તેથી તેની મા દળણું દળી સર્વનું પેટ ભરતી
 પછી બંને બાપ એક શેઠને ત્યાં બાણેતર રહ્યા, એક વખત ગંચુને
 લેણુ લેવા મોકલ્યો, અને ધનુને વેણીરામ પંડ્યાને ત્યાં પીતાંબર આ-
 પવા મોકલ્યો. તે બંને કામ ઝડપથી કરવાનાં હતાં, તેમાં ગંચુએ તો તેમ
 કર્યું; પણ ધનુ રસ્તામાં રમકડાં જોવાને લેવા તથા મદારીની રમત
 જોવા વિગેરે કારણથી રોકાયો ને રસ્તામાં રસળ્યો તેથી વેણીરામ
 તાણુવાસી ચાલ્યા ગયેલા; તેથી પાછો આવતા શેઠ કંઈકો દબ રખા
 આપી તેથી તે રોવા લાગ્યો, પણ શેઠ ફરી રાખતા નહોતા, તેવામાં
 વેણીરામ પંડ્યા આવવાથી ને ધનુ પર દયા આવવાથી શેઠ પાસેથી
 પીતાંબર લીધું ને તેની વતી કાલાવાલા કરી ધનુ પાસે માફ મંગાવી
 ને છાખલ કરાવ્યો. આ ઉપરથી યાદ રાખતું જે જેના હાથમાં અ-
 ગર કામમાં હોય એ ને અધવચ રસળીએ તો ધનુની પેઠે પસ્તાવો થઈ,
 રેવાનો વખત આવે.

ખાઠ ૧૨૪—એક અક્ષર અથવા વધારે અક્ષરોનો પણ અર્થ
 સમજાય ત્યારે શબ્દ ગણાય.

સ્વર અગર વ્યંજન હોય તોપણ અ,આ, વિગેરે સ્વર અક્ષર,
 તે સ્વર; અને ક, ખ, વિગેરે કકાના અક્ષર તે વ્યંજન સમજવા.
 સ્વરનો ઉચ્ચાર તેની મેળે થાય, પણ વ્યંજનનો તેમ થતો નથી. તે-
 નો ઉચ્ચાર સ્વરની મદદથીજ થાયછે; જેમ કે તે અ મળે ત્યારે ક વ્યં-
 જનનો પૂરો ઉચ્ચાર ગણાય. એમજ વ્યંજન સાથે સ્વર મળે, ત્યાં
 રે બાર અક્ષરની બારાક્ષરી કહેવાય. બે અથવા વધારે વ્યંજન એક-

હા થાય અને તેને છેડે સ્વર જોડાય; ત્યારે જોડાક્ષર થાય, જેમ પ,ર, ને આ સ્વર મળે ત્યારે પ્રા જોડાક્ષર થાયછે. જ્યેવો અક્ષર લખ્યો હોય તેવો ઉચ્ચાર કરવો. કોઈ રામ, એવા શબ્દને રામ, એવો ખોટો ઉચ્ચાર કરે તે ઠીક નહિ. કેટલાક ડને ઠંકાણું ર ખોલેછે જેમ ગાડીને બદલે ગારી તે ખરું નથી. કેટલાક તોતડાં માણસ ટ, ઠ, ડ, ઢ, ણ, અક્ષરને ત, થ, ઢ, ધ, ન, ની પેઠે ખોલેછે; જેમ ટોપીને તોપી; ઠીકરૂંને થીકરૂં, ડોશીને દોશી; ઢારને ધોર પણુને પન કહેછે. તો તે કેવું ચતકું લાગેછે. તેમ કોઈ મોતીને મોટી, કે તાળુને ટાળુ કહેછે, તે પણુ તેવુંજ લાગેછે.

પાઠ ૧૨૫.—દાંતવડે અગર હોઠવડે બોલવાનું જ્ઞાન પણુ રાખતા નથી. જો બરાબર ધ્યાન આપે તો તેમ થાય નહિ. કેટલાક ગળામાંથી, તાલબ્ય, મહાપ્રાણ, અનુનાસિક, હોઠસ્થાની, દંતોષ્ઠ, દંતસ્થાની, એમ જેવા અક્ષરો તેવાજ તે જગોએ શુદ્ધથી ધ્યાન આપી બોલવા જોઈએ. તેમજ કેટલાક છોકરા એકકા અક્ષર અગર શબ્દને બંધે વખત બોલે છે તે પણુ બહુ ગેરવ્યાજબી છે. પણુ જેમ એક વખત હોય તેમજ બોલવો જોઈએ.

પાઠ ૧૨૬.—વાંચવામાં ખીજી કાળજી એ રાખવાની કે ખોલ એક ખીજમાં બરાઈ ન જાય. કેટલાક તો એક શબ્દ કે વાક્યનો અરથો ભાગ ખીજા શબ્દ કે વાક્યના ઢપના રૂપમાં મેળવી ખોલેછે એ ઠીક નથી. તેમજ કોઈ અક્ષરો રહી પણુ જવા નહિ જોઈએ. તે બધાની સમજીતી તથા શબ્દ કે વાક્યનો અર્થ બરાબર સમજવા માટે ચિન્હ રૂપી નિશાનીઓ નીચે જણાવી છે; તે પ્રમાણે લખવું

તથા વાંચવા બોલવામાં પણ તેમજ અટકવું. (,) જરાવાર ચોખવું, તેણું નામ અદ્ય વિરામ ચિન્હ છે. (;) લેણું નામ અર્ધ વિરામ ઉપલક્ષ કરતાં જરા વધારે વાર ચોખવું. (:) આણું નામ પૂર્ણ અર્ધ વિરામ છે ત્યાં તે કરતાં પણ વધારે વાર અટકવું. (.) પૂર્ણ વિરામ કહેવાયછે ત્યાં ઘણીજ વાર અટકવું. આ જગેએ વાક્ય સંપૂર્ણ થયું અણુજ, તેથી તે વાક્યનો બાવાર્થ પણ આવી બયો એમ સમજવું. (?) પ્રશ્નાર્થ કોઇને સવાલ પૂછતાં વપરાયછે. (!) ઉદગાર છે તે નવાજ વાપરતાં લખવું ને બોલવું. (" ") અવતરણ છે તે પારકા શબ્દ, અક્ષર કે વાક્ય લઇ લખતાં તેની આસપાસ મૂકાય છે. () કૌંસ તે કોઈ અક્ષર; શબ્દ કે વાક્યનો અર્થ ગૃહીતો હોય અમર આગળના વાક્યના પેટામાં સંબંધ રાખતો હોય ત્યાં વપરાયછે.

ઉપર પ્રમાણે બ્યાં ચિન્હોની નીશાનીઓ નથી હોતી ત્યાં ઉલટો અર્થ થાયછે. એક ચોરના મુચરકામાં નીચે પ્રમાણે બન્યું જે “હુ ચોરી ક રૂં નહીં, કરૂંતો સરકારનો ગુન્હેગાર થાઉ” એમાં નહિ શબ્દ પછી અદ્ય વિરામ કરવું જોઇએ ત્યાં ન થવાથી, તેમજ કરે શબ્દ પછી ચિન્હ ની નિશાની થવાથી તે ચોર છુટી ગયો. કમકે એથી એવો અર્થ થયો જે “ મારે ચોરી કરવી જે ન કરૂંતો ગુન્હેગાર થાઉ.”

પાઠ ૧૨૭.—આપણે ઘરમાં જેમ કાંઈ આવ્યા મામતા હોઇએ અગર વાત કરતા હોઈએ તેમજ વાંચવાની જરૂર છે. તથા ધી-મે ધીમે વાંચવું કે સૌ સાંભળે. ત્યારબાદ શબ્દ ઉપાડતા જતાં ઉતાવળથી વાંચવાની ટેવ પડશે. “સાર્ને શુદ્ધ બોલતાં, નિશાનીઓ આગળ અટકતાં, અને ખરા શબ્દ પર બાર મૂકતાં આવડે તોજ સાફ

ખાંચતાં આવડ્યું એમ કહેવાય.

પાઠ ૧૨૮.—તમે ત્રણ ચોપડીઓ શીખ્યા તે ગૂજરાતી લિપિમાં છે; પણ હિંદુ ધર્મનાં પુસ્તકો તથા વારતા વિગેરેની ચોપડીઓ ખીજી તરેહની લખેલી છે; તેને બ્રાહ્મણી કે બાળભોધ લિપિ કહે છે. જેને ગૂજરાતી લિપિ આવડે છે તે જરા વધારે મહેનત લઈ શિખે તો થોડી વારમાં આવડે. કારણ કે તે ગૂજરાતીને મળતી છે; ફક્ત ફેર એટલેજ કે ગૂજરાતીને માથે લીટી દોરી હોય અગર લીટી ખીજી લકુલ દોરી ન પણ હોય. પરંતુ બાળભોધ અક્ષર ફેરકને માથે જુદી જુદી લીટીથી માથુ બાંધ્યું હોય છે.

આ ચોપડીમાં ધણી પાઠ નિતિ સંબંધી છે. તે પાઠ શિખવતી વખતે તેનો સાર બરાબર છોકરાના મનમાં ઉતારવો જોઈએ. નિતીના પાઠ સઘળા જોડી કાઢેલા છે. તેમાંના ફેટલાક પાઠની વાત સંબંધીત હોય છે, જેમ કે ચક્રાની વાતમાં જે ખીના લખી છે તે પ્રમાણે ચક્રા કરી શકેજ નહિ; ત્યારે તે પાઠ લખવાનો હેતુ શો છે; તે બરાબર છોકરાના મનમાં ઉતારવો.

ખીજી તથા ત્રીજી ચોપડીમાં જુદા જુદા છંદમાં ગવાતી કવિતા તેના તાળના માપ સાથે નીચે મુજબ. કોઈ અક્ષર માથે (i) પાણુ ઉભી જેવી નિશાની હોય તે તાળ પાડવા માટે છે. જે કવિતા બોલવી તે ધીમાશ, ઢબસર, ને તાળ પાડી રાગમાં બોલવા ધ્યાનમાં રાખવું.

બીજ ચોપડી.

પાઠ ૨—ચોપડી વિષે કવિતા—ચોપાદ. સારી ચોપડીઓ શોભાય,
હેલેલે દેખી હરખાય; પણ વિંગતેથી ને વંચાય, તો તેમાંથી કારજ થાય.
આ ચોપાદ છે તેમાં ચાર ચરણ ને દરેક ચરણમાં જણાવ્યા પ્રમાણે
ચાર ચાર તાળ હોય છે. આ ધોરણમાં અર્થની જરૂર નથી, તેથી
સમજીતી દાખલ કરી નથી.

પાઠ ૮૧—સંગત—છપો—જેને જેવો સંગ, રંગ જલુ તે-
વો ખેસે; જેને જેવો સંગ, પ્રેમ પણ તેવો પેસે. જેને જેવો સંગ કા-
મ તેવાંતે કરશે; જેને જેવો સંગ, કામ તેવે જઈ ઠરશે. રૂડે સંગે
રૂડો થશે, ખૂરે સંગે ખૂરો બને; સારા મહેતાના સંગથી ભાવ્યશાળી
વિદ્યા ભણે. આ છપો છે તેમાં છ પદ ને દરેક પદમાં છછ તાળ છે.

ત્રીજ ચોપડી.

પાઠ ૪૪.—ધર વિષે—ભુજંગીછંદ—છંદનાં નળીઆં
માળીઆં ખૂબ છંદે, રૂડાં બારીએ બારણાંતો બિરાંજે; ધડયાં પાણીઆ
રાં રસોડાંં રૂપાળાં, અણ્યાં છટથી ને દોસે છે ચૂનાળાં. આ ભુજંગીછંદ-
છે તેમાં ચાર હારોને ચાર તાળ છે.



કડીન શબ્દાર્થ.

(તે ડિક્શન માટે પણ સમજવા.)

બીજી તથા ત્રીજીના.

ક.

કાષ્ટક—સાંકળીઉં; શરમ; પત્રક.
કલોલ—કળાહોળ, કકળાટ, આ-
નંદ.કચ્છ—કાચખો; કાઠિઆવાડની ઉ-
ત્તરે પ્રાંત છે.કકોત્રી—વધામણી-ઐચ્છવ આ
નંદનો પત્ર.

કર્ચુ—ખનાવ્યું, ગોઠવ્યું.

કજ્જુ—આજથી ધણાંક વરસ પર
હારકામાં રાજ થયો તે.કચુકા—આંબલીના ફળીઆ; બી-
જ.

કપણ—કંજુસ, લોભી.

કાંતવું—ફની પુણીમાંથી તાંતણું
કાઢવો.કુંભાર—માટીનાં ઠામ કરનાર (ધ-
ડો કરનાર.)

કહ્નું—કીધું.

કાઢયો—નીકાઢ્યો, ખેંચ્યો.

કવિતા—કાવપણું=વિષય કાવ્ય.

કોડિઆં—માટીનાં દીવો કરવાનાં
નાનાં વાસણ.કાશી—હિરંદુતાનમાં ગંગા કાંઠે
શેહેર છે તથા માણસનું નામ
પણ હોય છે.

કડછી—રાંધવાનું હથિઆર.

કણ્ઝીઉં—કણ્ઝામાંનું તેલ.

કૂદાવતી—ઠેકાવતી.

કોદાળી—જમીન ખોદવાનું સાક-
ડાના હાથમાં નાંખેલુ લોદાનું
ઐગ્ગર.

કાઠી—ખેંચી.

કદી—કોઇ દિવસ.

કાન્તુ—મગફળીનાં બીજ.

કૂદતાં—ઠેકતાં.

કૂવો—પાણી નીકળે તેવો ઉંઠો
ખાડો.

કુંડાળું—ગોળ ચક્કર.

કાચુકોફું—રાંધ્યા વિનાનું; શેકેલું.

કઢી—છાશ, કોકમ વિગેરેને મ-
શાલો ચણુનો લોટ નાંખી ઉ-
કાળવું તે.

કલેદું—કપરોટ, લોટ મસળવાનું

કોણી—હાથની વચ્ચેનો સાંધો,
ભાગ.

ફૂતરો—એક જાતનું જાનવર.
 કિંમત—મુલ્ય.
 કિનખાખ—રેશમી, મશરૂ, ખુદા-
 વાળું.
 કંદોષ—હલવડ, સુખડીઓ.
 કાંટા—બાધડીઓને નાકે પેરવાનું
 ધરેલું, શળ,
 કોડ—સો લાખ.
 કબુસલું—કુંકું દાણાવાળું (જી-
 વારનું.)
 કિલ્લો—પથ્થરગઢ, કોટ; વાડહદ.
 કુંડ—પાણીનો બાંધેલો ઉડો ખા-
 ડો.
 કીડી—એક જાતની ઝીણી જા-
 નાવર.
 કોશેટો—રેશમનો કીડો.
 કરોળીઓ—કરા સાથે માળણ વિ
 ગેરેમાં રહેનાર તથા જાળબાં-
 ધનાર જીવડો.
 કાંચળી—કાપડી; છાતીમાં પહેર-
 વાનું કપડું.
 કાંસુ—તાંબુ ને કલધ મળીને થએ
 લી ધાતુ.
 કબેશ—કબૂઓ; ટંટો; દિસાદ; કં-
 કાસ
 કાંતી—પૂણીમાંથી સૂતરનો તાંત.
 લો કાઢી.
 કાન્તિ—તેજ; ડોળ. ચમકાટ,

કુંપળ—કુંપળું—નવી ફણસ.
 કપાસિચ્છ—કપાસમાંથી નીકળ-
 તો તેના ખી.
 કૂડી—નઠારી, ખરાબ.
 કબૂલત—મંજુરી કરાર માન્ય ક-
 રેલું.
 કલ્પાંત—રોવું, કકળવું, પરતાવો,
 ખેદ.
 કૂકડી—મરઘી.
 સ્વ.
 ખલાસી—વાહાણુનો હાંકનાર ખા-
 રવો.
 ખોંખારેછે—હણહણવું.
 ખાળવું—ઘટકાવવું; બંધ કરવું.
 ખીજવવું—ધખવવું; ગુસ્સે કરવું.
 ખજૂર—ખજૂરી ઝાડનાં ફળરૂ-
 પી મેવો.
 ખસેડયા—દૂરકર્તા; ખેસવ્યા.
 ખૂબ—ધણું; ઝાઝું; બહુ.
 ખૂલે ખોચરે—ઓખે; જોખલે,
 આસપાસ.
 ખાસા—મજનાં; સારાં; નવાં.
 ખારું—ખારવાળું.
 ખંખેરી—ઝાપડી, ઝીંઝીટી. હ
 ડાડી.
 ખુંધ—ખરડા વચ્ચેનો ઢેકા. ટે-
 કરો.
 ખારાશ—ખારવાળું.

ગ.

ગર્જના—અવાજ, નાદ, સાદ,
 ગુચ્છો—રીસ; જથ્થો થોક.
 મક્કા—ખડખ; ગાંઠો,
 ગંદવાડ—એઠવાડવાળું, દુર્ગંધ.
 ગેર—ધૂળ રાતી, રાખ,
 ગોરસ—દહીં.
 ગુર—મેહેતાજી; શિક્ષક, વિદ્યાધર્મ વિગેરે રસ્તો સારો દેખાડનાર.
 ગાંધી—ગંધીઆણું તથા ઓસડ વેચનાર.
 ગણપતિચોથ—ગણેશ ચોથ. વૈશાક સુદ ૪
 ગુણ—પાડ; આભાર.
 ગુમડાં—શરીરમાં પાકેલાં ગડ.
 ગરીબ—ક્ષાત્યાર; કંગાળ.
 ગળચવો—ગળે પહેરવાનું સોનાનું ધરેણું.
 ગાંસડી—પોઠકડી. ગાંઠડી.
 ગળજી—શક્તિ.
 ગુણપાડ—આભાર.
 મખો—પસંદ પડ્યો; ભાળ્યો.
 ગધેડું—ખચચર.
 મહ—દરતાં પૃથ્વીનાં સ્થાનકો.
 મહસ્થ—ધરણી, આખરદાર.
 ગુજરાતી—ગુજરાતની.
 ગોતર—ખાતર,

ગળે પડુ—વળગી પડતું હકવગર માલિક થવું.

ઘ.

ઘેળરીઓ—ઘેળર જેવો મીઠો
 ધૂમટો—ભાજ, મો ઢાંકવું, સજ્જ
 ઠા.
 ધસવા—મસળવા.
 ધાસ—ખડ.
 ધૂરકવું—વાડકાં કરવાં, સામાયવું,
 ધોરવું.
 ધુંટવું—વાટવું.
 ધૂધરા—એકગતની ધૂધરાના આકારની એક ચીજ.

ચ.

ચિત્ર—છબી; ડોળ; નકશો; આકાર, ફોટોગ્રાફ.
 ચપ્પુ—ચાકું; છરી.
 ચંદ્ર—આકાશમાં એક મહાછે.
 ચંદી—જોગાણુ, ઘોડાને જે દાણા ખવરાવે છે તે.
 ચિપિઆ—ચિપટી વાળેલી લોઢાની પાટી જેવાં;
 ચૂસવું—ધાવવું, ખેંચવું.
 ચાંદી મોઢામાં થએલું ચાકું.
 ચીકણું—ચીકણવાળું, તૂટેનહીં તેવું
 ચિચોડા—આખલીના ખી.
 ચોખંડા—ચોરસ.
 ચાટલું—દંપણ; અરીસો; પાંચણ

પરનો ભાગ.
 ચિત્ત—મન; ધ્યાન,
 ચારણો—સુરવાળ, કમરથી ની-
 ચેનો પહેરવાનો લૂગડાનો શી-
 વેસો હોય છે.
 ચોકી-ચોકસી, રોન, પેહેરો.
 ચોપડયાં-અડાડયાં; વળગાડયાં,
 ભુસ્યાં.
 ચળકતાં-ઝળકતાં, ઓષતાં.
 ચચાર-ચાર ચાર.
 ચાકું-બળર, દુકાનનો ચોક.
 ચોમાસુ-વરસાદના ચાર મહિના.
 ચાહત-બહેરાત, ચડે ધોડે, ઉ-
 ધાડે છોગે
 ચીજ-વસ્તુ, ચીજ, જણસ.
 ચોકડાં-કાને પહેરવાનાં ચોરસ
 સોનામાં તગત.
 ચોટલો-માથાના લાંબા બાળનો
 જથ્થો.
 ચાકરડી—દાસી. ચાકરી કરનારી.
 ચચળ—ચપળ. તીવ્ર,
 ચરખી—હાડકાં પરનો ગર
 ચૂડા—બલૈયાં, તે હાથીના દાંત
 નાં થાય છે.
 ચતુરાઈ—દાનાઈ ડાહ્યાપણ.
 છ.
 છત્રી...છત્ર; ચોમાસા બિનાળામાં
 માથે ઓઢવાનું ચત્ર.

છપો-છપદનો છંદ.
 છાજલી-છાજી,
 છૂટું—મોકળું, અલગ.
 છોકરાં—બાળક (છોકરાંને છાડી-
 ઓ મળીને.)
 છાતું—માથું છવથું.
 છાપડું—ખોરડું, ધર, ઝુંપડું.
 છીડી—બારી, બાકું.
 છોલાણું—ચારમેર ચુનો દીધેલું.
 છાંટવું...છાંટકોરવું; ઉડાવવું, ફે .
 કવું
 છવીટીઆં—કરડા; વેઢ; વીટીઓ.
 છાતી—હૈયું; મન; ગામ નીચેનો
 આગળનો ભાગ.
 છછુંદરા—દારનાં કાગળનાં ભરે-
 લાં ખોળા.
 છાંચડો—શીળો, છાંચો, ઓળો.
 છૂપાવવું—સંતાવવું દબાવવું.
 જ.
 જત્ર—તત્ર; એ તરફ તુંબડાં નાં-
 ખેલું વાળું.
 જક્કી—જકકરવાળું; મતવાળું.
 જલદ—ચાકરો, તેજદાર,
 જન્મવું—અવતરવું.
 જવલ્લે—કોઈકજ.
 જમદાની—ધોળો બિયો દુભાસ.
 ખેસ.
 જગપતિ—પરમેશ્વર, જગતનો બ-

ણી.

જુઓ—ભાજો, દેખો, સંભાળો.

જંગાલ—લીલો રંગ.

જગતું—જીવતું નહિ તે, સાવચેત રહેવું.

જણસો—ચીજો, વસ્તુઓ.

જવજતું—ઝીણું જવડાં.

જુગિત—કળા; હિકગત, યુક્તિ.

જંડવાં—કપાસનાં કાચાં કાલાં

(૧૧).

જગન્નાથી—ધોળું ઝીણું લૂગડું,
તે અસલ જગન્નાયમાં બનતી

જા.

ઝંખવાણો—ઝંખો; મોજો, શીકો

ઝલાય—પકડાય; ઝાલી લેવાય.

ઝંઝવાં—ઉનાળામાં છેટથી પાણી

જેવું જે દેખાય છે તે.

ઝંપ—જળ.

ઝંપો—ભાગાળ, ગામનો રસ્તો.

ઝંઝ—કાંસીઆં.

ટ.

ટાટ—સણનાં લૂગડાં.

ટદું—વછેર, નાનું ધોડું.

ટકોટક—છલોછલ. મોં સુધી.

ટાપલી—સુંડલી,

ટાં—છો દીધેલાં વરસાદનાં પા-

ણી ભરેલાં.

ટપેયો—મોલાવ્યાં; ચેતાવ્યાં.

ડંપીઆ—ગજો પેહેરવાનાં સોના
નાં ધરેણાં.

ઢ.

ઠીકરાનાં—માટીનાં.

ઠોકયો—માયો.

ઠાર—ઠેકાણું; સ્થાનકે.

ઠુંકવાવું—સજ્જડ થવું.

ઢ.

ડાળીઉં—ડાળીઆનું તેલ.

ડંખ—ડંશ.

ડાલો—સુત; ચતુર,

ડામ—લોહાનો ખીલો તપાવી શ-
રીરને ચાંપવો.

ડૂળી—ખૂડી; ડૂંચકીમારી.

ડોવીદેછે—મોળી દેછે.

ઢ.

ઢીમણું—ઢેકો; ગડ, ગુમડું.

ઢીંચણું—પગમાં જાંગની નીચેનો
ભાગ.

ત.

તાસક—તાંબાનું થાળી જેવું પહો-

ળું વાસણ,

તાંબાકુંડી—તાંબાની કુંડી.

તર—નાના છોડ, ધર, રોપા.

તૂટી—ભાગી; કટકાકરી

તૈયાર—તત્પર; ઝટ; તાકીદે, એ-
કદમ.

તુસીપાટીઆં—સ્રીની કોટનું ધરેણું.

તૂરંગ—મનના તોર; વિચાર.
 ટુચ્છ—હલકો.
 તરખૂચ—એકજાતનું વેલાનું ફળ.
 તેજનો—જાલજળ; જાવંત્રી; તજ,
 લગ્નંગ, વિગેરેનો ગરમ મશા-
 લો.

દ.

દૂધબાઈ—એક દૂધે ધાવેલા.
 દુસ્લબ—માણસનું નામ છે. કવ-
 ચીતજ મોધું.

દુસ્મન—શત્રુ.
 દર્પણ—અરીસો.
 દક્ષિણી—દક્ષિણ દેશનાં
 દુકાળ—નકારો વખત.
 દેડકાં—નાનાં જનાવર.
 દુકાન—હાટ.

દિવસ—દહાડો.

દીન—ગરીબ.

દોશીવાણિયા—કાપડ વેચનાર
 વેપારી.

દીવાળી—આસો વદ અમાસ આ-
 નંદનો દિવસ. દીવાવાળી.

દેશાવર—ખીજેદેશ, પરદેશ.

દાટવું—દાખવું.

દિવેલ—દીવે આળવાનું તેલ.

દારખાનું—દારનું ઠેકાણું. આત-
 સખાળ.

દોંગાર્ધ—લગ્નઆધ.

દાદર—સીડી; નીસરણી.

ધ.

ધ્યાન—મન; ચિત્ત.

ધર્મ—પુણ્ય; દયા.

ધોળી—લૂગડાં ધોનાર.

ધાન્ય—અનાજ; દાણા.

ધૂળ—માટી.

ધડ—શરીરને ડોકા નીચેનો ભાગ.

ધરતી—જમીન, પૃથ્વી.

ધીરજ—શાન્ત ધીમાસ.

ધુણાવ્યું—હલાવ્યું; ડગાવ્યું.

ધાતુ—મની; સોનું; રૂપું; તાંબું;
 સિસું; જસત; કલધ લોહું; વિ-
 ગેરે.

ધૂતારા—ઠગારા; ઢોંગી.

ધર્મપુસ્તક—ધર્મનાં પુસ્તક.

ન.

નરી—એકલી.

નક્કર—મજબૂત; પોહુંનહિ તે, ક-
 ઠણ.

નાગલી—એક જાતનું અનાજ.

નિદંય—દયા વિનાનું. ધાતકી.

નેત્ર—આંખ, ડોળો.

નીવડવું—સુધરવું, પેદા થવું.

નીસરી—નીકળી.

તીરે—નાંખે.

નિર્યે—હર્ષેશાં દરસેજ.

નળીયાં—મટીનાં બનાવેલાં ઘર.

છાવા માટે તે પર નાંખે છે તે.
 નહોર—નખ.
 નદીઓ—નહેરો, વહેણા.
 નિશાળ—સ્કૂલ, પાઠશાળા, મકત-
 બ.
 નકુચા—આરણ્યની સાંકળ રાખ-
 વાના ખીલા.
 નવરાશ—કૂરસદ; કામ વગર.
 નિરાંત—સાંતતાથી રહેવું.
 નિશાની—ઠેકાણું; એધાણ.
 ના ખુશ—નારાજ; દીનગીરી.
 નિરાશ—આશાભંગ, ઉદાસ.
 નાડી—રગ; નાડ.
 નીતિ—ન્યાય; સાચાઈ; હકસર.
 નાદ—સાદ; અવાજ.
 નાઇડી—પૈડામાં આરા નાંખવાનું
 વચ્ચું માણું.

પ.

પોષ—તેનાં પાંદડાંનાં બહુઆંચા-
 મ, વેલો રાતો હોય.
 પસ્તાવો—પશ્ચાતાપ, ફિકર
 પ્રવાહી—રેલો ચાલે તે.
 પ્રેમ—પ્રિતી; હર્ષ, હેત.
 પ્રમાણે—અદલે; અરાબર; ધનસાફે;
 સરખે.
 પૂછવું—સવાલવું, સવાલકર્મો, ત-
 જવીજ કીધી.
 પુણ્ય—ધર્મ.

પ્રસાદ—જમવાનું; ખાવાનું.
 પ્રધાન—કારભારી; દીવાન; કામ-
 દાર.
 પ્રાણી—પંચ તત્ત્વનો જીવ. પ્રા-
 ણ વાળું.
 પશ્ચિમ—આયમણી દિશા.
 પાંજરું—જનાવરને રાખવાનું ચો-
 કડું.
 પુંજ—મીલકત; ધન, નાણું.
 પશુ પંખી—ચાર પગાં તથા પાં-
 ખવાળાં જીવ.
 પડવું—આપડવું, લયડવું.
 પ્રખ્યાત—જાણીતો, વીખ્યાત.
 પોપચું—ડોળાનું ઢાકણ.
 પોપણુ—પોપચાના ડોળા ઉપર-
 ના વાળ.
 પેસાશે—જવાશે; ગરાશે.
 પાડું—ભેંસનું બચ્ચું.
 પીતળ—તાંબાને જસતની મેળ-
 વણીની મિશ્રધાતુ.
 પિછોડી—પછેડી.
 પશુ—ચોપણું જાનવર.
 પંખી—પાંખવાળાં જાનવર.
 પસ્તાવો—પશ્ચાતાપ; ફિકર.
 પ્રણામ—નમવું; પગે લાગવું.
 પેડા—સાકરની અગર ખાંડની
 ચાસણીમાં આવે નાંખી વા-
 જેલી ગોળીઓ.

પકવાસા—ખપેડા; વળી સાથે જ-
 ડેલી લાકડાની ચીપો.
 પૂરા—સામટા; બધા.
 પચુસણુ—છૂટકછૂટક; નોખુંનોખું.
 પહેરાચ્યાં—નાંખ્યાં; ઘોઢાડયાં; ચ-
 ડાવ્યાં.
 પાનસોપારી—પાન સાથેની સો-
 પારી.
 પખવાડીઉં—પંદરવારીઉં (પંદર
 દિવસ).
 પાંદડાં—પત્તાં; પાત્રાં.
 પાણી—જળ, નીર.
 પસ્તાય—પાછળથી ફિકરયાય, ચિં-
 તાય.
 પાછળથી—પછવાડેથી; વાસેથી;
 પછીથી.
 પરશાળ—ઝોશરી.
 પાણીઆર—પાણી રાખવાની જ-
 ગો.
 પીછાં—પક્ષીનાં પીસોળીયાં.
 પૂણે—નડે, અડચણ કરે.
 પૃથ્વી—જમીન, ધરતી.
 પરમેશ્વર—પરમ=મોટો+ઇશ્વર=
 ધણી=મોટો ધણી.
 પોતીઆ—ધોતીઆં.
 પાટી—સ્લેટ.
 પોંચી—કાંડે પેહેરવાનું સોનાનું
 ધરેણું.

પિતાંબર—પિત=પીળું+અંબર=
 લૂગડું, રેશમી પીળું લૂગડું; મૂ-
 ગટો.
 પાવડો—ધુળ એકઠી કરવાનું લો-
 ઢાતું ઝોબર.
 પેડુ—પેટ નીચેનો ભાગ.
 પહેાંચો—પુગેચો; પાસે આંચો.
 પ્રેમ—હેત; પ્રિત.
 પતાસાં—ખાંડની ચાસણીના કુ-
 લેલા ચકતા.
 પાલખી—મ્યાનો ખુલ્લો.
 પંચરાત્રી—પાંચભતની; પાંચવા-
 નાની.
 પાલવવું—પરવડવું.
 પરવડવું—પાલવવું.
 પાંગર—જનાવર રાખવાનું. લા-
 કડાનું ઝોખડું.
 પડવું—દડવું; આખડવું.
 પાંપણુ—પાંપચાંના ડોળા ઉપરનાં
 વાળ.
 પૂળા—ધાસનો જથ્થો; નાનોખાં
 ઘેલો.
 પૈસાદાર—પૈસાવાળા, ધનવાન.
 પુઠીઆં—પૈડામાં આરાના બહાર
 ના ભાગ નાંખવાના ફરતા પા-
 ટલા (ચક્રર,)
 પ્રમાણુ—બરાબર; ઈનસાફ; સ-
 રખે.

પ્રવાહી—રેલો ચાલે તેવું.
પતંગીઊં—કુદકું; જીવકું.
પીચર—માવતરે.
પણા—ઝીણી રેતી.
પડપૂછ—પૂછગાછ.
પાષણુ—રક્ષણુ; સોસાવું, પચા-
વવું.

પૂર—ધણું પાણી; જોર; પૂરું.
પતિ—ધણિ; માલિક.
પ્રરૂપ—નર; આદમી; જણ; મા-
ઈડો.
પ્રિતી—હેત; સ્નેહી; પ્યાર.
પ્રમઃ—ડાહ્યા; સુર.
પ્રાર્થના—સ્મરણ; સ્તુતિ, ભજનું.
પ્રભુ—પરમેશ્વર; ઇશ્વર.

ફ.

ફાઈ—ટીપું; છાંટો.
ફાવ્યો—લાગ આવ્યો.
ફજેતી—ચરચા; અપકિર્તિ.
ફડાવ્યું—તોડાવ્યું; કપાવ્યું.
ફૂલ—ફળ; પુષ્પ.
ફળ—મેવો.
ફિકર—ચિંતા; દીલગીરી.
ફૂલકરણી—દારની કાગળની ફૂ-
લ પડે તેવી વસ્તુ.
ફૂમવું—આવળનું ફૂલ,
ફૂ.

ફુદિ—અક્ષલ.

બૂદા—રેશમી મશરૂનું બુદાવાળું
લૂગડું.

બચ્યાં—બાળ; બાળક; નાનાં.
બનાવ્યું—ગોઠવ્યું; પેદાકર્યું.
બૂમે બૂમ—ચીસે ચીસ; રાડેરાડ.
બોઈડીઓ—ઓરતો; સ્ત્રીઓ.
બરશી—ખાંડની ચાસણીમાં મા-
વો નાખેલા ચોસલાં.

બુરું—ધોએલી ખાંડ.

બીકણુ—ડરકણુ; ભડકણુ.

બાળુબંધ—હાથની ટ્રાણી જીપર
બાંધવાનું સોનાનું ધરણું.

બાબરી—નાનીચોટલી નાનાવાળ.

બુધ—એક ગ્રહછે. મંગળવાર પ
છાતો વાર.

બંદર—દરિયા કાંઠેનું શહેર વા-
હાણ ચોખે તે.

બઢક—દાર ગોળી ભરી ફેડવાનું
હથિયાર.

ગિબ—કિરણુ.

બાહણી—બાહણની; બાળબોધી.

બોલી—ભાષા; લિપિ.

બાસ્તો—ખાદીનું ઝીણું લૂગડું.

બુઘો—બુધવાર; જાણું અપહું.

બેરખી—બાઈડીઓને કાંડે પહેર-
વાનું ધરણું.

મ.

માત—રાંધેલા ચોખા.

ભક્તિ—મજવું; સ્તુતિ.
 ભાંડવું—ગજવું; મનઘાયું બોલવું.
 બઢી—દેવતાનો ઢગલો.
 બો—ખીક; ભય; ડર.
 ભીંત—પછીત; વંડી.
 ભોં—જમીન; ધરતી.
 ભીંતરડી—વંડી; પછીત; ભીંત.
 ભારોટીઆં—પાટડા.
 ભત્રિજો—ભાઈનો છોકરો.
 બૂલ—ખોડ; ખાંપણ; ચૂક.
 મ.

મહેતાજી—માસ્તર; ગુરુ; શિક્ષક.
 મિત્ર—સ્નેહી; હેતુ; દોસ્ત; ભાઈ-
 બંધ.

માસ્તર—મહેતાજી; ઉપરી; ગુરુ.
 માંજેલાં—ઉજળેલાં; ઉટકેલાં.
 મનાવ્યું—મનવ્યું; કપ્પલ કરાવ્યું.
 મહિના—૩૦ દિવસ; ચાર અઠ-
 વાડીઆં.

મગણી—કાળુની શીંગો; માંડવી.
 મની—ધાત; નાણું; બિલાડી.
 મોળું—શિકું; મીઠો વગરનું.
 મેડી—માળ; મેડો; ખીજભોં.
 માંજર—મેર તથા ફૂકડાને માથે
 ને ટોપી હોય તે.

મજલ—એક દિવસનો પંથ.
 મચ્છર—એક જાતના જીવજંતુ.
 ખાણેક—લાલ રંગનો કીમતી પ-

થર.

માર્ગ—રસ્તો; વાટ.

મનુષ્ય—માણસ.

મુદ્દલ—જરાએ.

મધ્યમ—સાધારણ; બરાબર; વ-
 ચલું.

મધપૂડો—મધનું પોડું.

માટલું—માટીનો ઘડો; ગોળો.

માન્યું—કપ્પલ કર્યું.

મોતી—પથ્થરનો દાણો કાણાવાળો.

મજૂર—મહેનત કરનાર; મજૂરી
 કરનાર.

મોખરો—મોરો; મો આગળ.

મોઘું—કિમતી; આકર્ષ.

મિઠાઈ—સ્વાદવાળું; ખાવાનું સુ-
 ખડું.

મરડવું—વાળવું.

મસુર—એકજાતનું કઠોળ.

મૂરખાઈ—ખેવફૂફાઈ.

મૂરખો—ખેવફૂફ.

મણા—ખામી; ખોડ.

મધ્યમ—સાધારણ, બરાબર, વ-
 ચલું.

મઝ્યાં—લાઝ્યાં; વળઝ્યાં.

માલિક—ધણી; મુખ્યત્વાર ઉપરી.

મંગળ—એક ગ્રહ. સોમવાર પ-
 છીનો વાર.

મૂગટા—પિતાંબર; અમોટીઆં.

શિશર—રેશમ તથા સુતરનું બ-
નેલ તે.

મોસાળ—માનાભાષ તરફનું; મા-
મા તરફનું.

મિનિટ—કલાકનો સાઠમો ભાગ.
મુક્તિ—મોક્ષ.

મુડદું—સખ; જીવ વિનાનું શરીર.

મફરી—ખેલ કરનાર; ખાજગર.

મુચરકો—ધનસાચી કબુલત; ખ-
ત; દસ્તાબેજ.

મૂળાક્ષર—મૂળના અક્ષર. (સ્વર
વ્યંજન.)

મોઢું—મોં.

મહિપતિ—પૃથ્વીપતિ; રાજા, ધણી.

ય,

યુક્તિ—જીવિત; કળા; હિકમત.

ર.

રાજકુંવર—રાજાનો છોકરો; ગાદી-
ના હકવાળો કુંવર.

રીતભાત—રહેણી; કરણી; ચાલ
ચલગત; વર્તણૂક.

રૈયત—પ્રજા.

રજિઆમણું—શોભીતુ; રૂપાળુ.

રતાંધળો—રાતે આંધળો.

રડી—સારી; રૂપાળી.

રસોડું—રસોધખાનું.

રીસાળ—કોપી ગુસ્સો કરનાર.

રમુજી—રમતિઆળ, આનંદી

રસ્તો—માર્ગ.

રસળવું—રઝળવું.

રેસા—છાલ; તાંતણા.

લ.

લાગલું—હમેશાં; એકદમ; પુરતજ.

લાંગ—લંગર; શીંગ.

લાંઠ—મસ્કરી; ઠગ.

લસ્કર—ફાજ; લડાઈના સિપાઈ-
નું ઢોળું.

લિપિ—ભાષા; ખેલી.

લૂચ્યાઈ—દોંગાઈ; ઠગાઈ.

લૂગડાં—કપડાં.

લોઢી—લોઢાની તવી; તાવડી.

લોઢું—એ એક કઠણ ધાતુ છે.

લટકતાં—ટીંગતાં; વળગી રહેતાં.

લાગટ—જીવ, હમેશાં.

વ.

વચ્ચે—મધ્યે; માંહે.

વિધ—તુકશાન.

વિદ્યા—જાણવાપણું.

વાંક—ગુન્હો; આળ.

વિદ્વાન—વિદ્યાવાળો; માહિતગાર;
પંડીત.

વિચ્છી—વિખવાળું જીવડું.

વિખ—ઝેર.

વિલાયત—પોતાનો દેશ; (ઝેટ

ખીટન)

વિખ્યાત—પ્રખ્યાત; જાહેરાત.

વણુવું—કાંતવું; લૂગડું કરવું.
વિગતેથી—હારખંધ; વિગતખંધ;
અનુક્રમ.

વાંસે—પછવાડે; પાછળ; પછીથી.

વાહરડું—ગાયનું ખચ્યું.

વિષે—વાસ્તે; માંહે.

વસ્તુ—ચીજ; જણસ.

વિશ્વાસ—ભરોસો.

વિચાવાની—જણવાની.

વિચાર્યું—ધાર્યું; મનસુખો કર્યો.

વાસણુ—ઠામ.

વસંત—તે ઋતુ છે; (તે માહા
ફાગણુમાં હોય છે.

વિશ્વ—જગત; દુનિયા.

વિજળી—વરસાદનો સખાકો.

વસમો—આકરો.

વૈધ—વૈદું જાણનાર.

વરસ ગાંઠ—જન્મગાંઠ; જન્મ દિ-
વસ.

જા.

શુદ્ધ—સાફ; ચોખ્ખું.

શ્વરાતન—ખાહાદ્દરપણું; જોસ.

શરીર—અંગ; ડીલ.

સકિત—બળ; જોર.

સ

સંજોરી—મુધરા.

સુરવાળ—ચોરણું; પાથ જામો.

સિંદુર—સીસાના કાટનું યાચ છે,

તેનો રંગ લાલ છે; તે ઝેરી
પદાર્થ છે.

હ

હીરાકંઠી—હીરાકણીના જેવા ચ-
ળકતા ઝીણા નક્કર દાણાની
જે ગાંઠેલી કંઠી તે.

હીરો—ધોળા રંગનો કિંમતી પ-
થ્થર.

ક્ષ

ક્ષત્રી—લડવૈયા; રજપૂતો.

ક્ષમા—માફ; દર ગુજર.

ક્ષણુ—જરાવાર; પળ.

જ્ઞ

જ્ઞાતિ—જાતિ.

જ્ઞાન—ડહાપણુ; શાણપણુ.

અ

આધરક—જમાવે; મેળવે.

અદ્યા—પોતાથી નાના તથા
લાડથી ખોલાવવાની રીત.

ઓરમાઈ—ખીજ માનો.

આંગળીઆત—ખીજે ધણીત્યાં-
થી સાથે છોકરું લાવી હોયતે.

અકોટી—સોપારીના જેવું કાને પ-
હેરવાનું ભોળીકું.

આળું—સાફ કર્યા વિનાનું.

અરે—દયા.

અગથીઓ—એક જાતના પુલની
કઢી કરમા જેવું ઝાડ.

અળાથો—હોળાથો; અર્ધ ગોળા
કારપાણુ.

૬

ધશ્વર—પરમેશ્વર; ધણી; પ્રભુ.
ધરાદો—વિચાર; ઈચ્છા; મુરદ.

ધપા—અદેખાધ

૭

ઉત્પન—પેદાયવું; જન્મ.

ઉદાસ—દીલગીર; બેહોંસ.

ઉજળુ—ગરમ; તપાવેલું; ઊનું.

કાઠિઆવાડ ઇલાકાની ભૂગોળ.

નકશાની દિશાનું વર્ણન—નકશા સામું મોં કરી. ઉભા રહેવું; તેમાં માથા બણી ઉત્તર; પગ તરફ દક્ષિણ; જમણા હાથ તરફ પૂર્વ; નેડાળા હાથ તરફ પશ્ચિમ. જમણા હાથનો ઉંચેનો ખુણો તે ઇશાન; નીચે અગ્નિ; ડાળા હાથનો ઉંચેનો ખુણો તે વાયવ્ય; નીચે નૈરત્ય.

જમીનપરની દિશાનું વર્ણન—સૂર્ય ઉગેછે તે પૂર્વ અથવા ઉગમણુ દિશા છે; હવે સવારમાં અગર ગમેતે વખતે તે પૂર્વ દિશા સામું મોં કરી ઉભા રહેવું; તેમાં વાંસા તરફ આથમણી કે પશ્ચિમ દિશા, જમણા હાથ તરફ દક્ષિણ; ડાળા હાથ તરફ ઉત્તર. જમણા હાથથી પૂર્વ તરફનો તે અગ્નિ; અને તે હાથથી પશ્ચિમ તરફનો ખુણો તે નૈરત્ય. ડાળા હાથ તરફથી પૂર્વ તરફનો ખુણો તે ઇશાન ને તે હાથથી પશ્ચિમ તરફનો ખુણો તે વાયવ્ય સમજવો.

વાખ્યાઓ—૧ દ્વીપકલ્પ—જમીનના ત્રણે ભાગ તરફ પાણીને એક તરફ જમીન તે.

૨. ખેટ—જમીનની ચારે તરફ પાણી તે. ૩ સરોવર—ચારે તરફ જમીનને વચમાં પાણી તે.

૪ અખાત—પાણીની અણી લાંબી થઇને જમીનમાં ગઇ હોય તે.

૫ મહાસાગર—ખારા પાણીનો મોટો સમુદ્ર તે.

૬ સમુદ્ર—ખારા પાણીનો જે નાનો ભાગતે.

૭ ધાર—જમીન થોડી ઉંચી થઇ લાઈન નીકળે ત્યારે તે ધાર કહેવાય છે.

૮ ડુંગર—જમીનનો જે ભાગ થોડો ઊંચો હોય તે.

૯ પર્વત—ડુંગરા કરતાં વધારે ઉંચી જમીન ઊપસેલી તે.

૧૦ મેદાન—સરખીને સપાટ એકી સાથેની જમીન તે.

૧૧ નદી—મીઠા પાણીનો પ્રવાહ પર્વત અગર; સરોવરમાંથી નીકળી ઢળતી જગ્યામાં થઇ સમુદ્રને મળેછે તે.

૧૨ ખાડી—નદી સમુદ્રને મળતાં પહેલાં તે થડમાં ઝુળ પહોળું હોય તે.

૧૩ બંદર—દરિયા કિનારાનું ગામ ત્યાં વાહાણોથી માલ ચડતો ઇતરતો હોય તે.

૧૪ સ્ટેશન—રેલ્વે જતી હોય પણ જ્યાં માલ, માણસ વિગેરેની ચડ ઇતર થતી હોય તે.

૧૫ ગામ—ગરીબ ખેડૂત વિગેરે લોકો રહેતા હોય તથા વસ્તી ને ઘર થોડાં ને સાદાં હોય તે.

૧૬ શહેર—હારણધ ચુનાનાં ઘરો તથા દુકાનો અને મોભાં દાર માણસો ધણા રહેતા હોય તે.

૧૭ તાલુકો—જેમાં નાનાં ગામ ને કસબા આવેલા હોય તે રાજ્ય.

૧૮ પ્રાંત—જેમાં કેટલાક તાલુકા ને શહેરો આવેલાં હોય તે.

૧૯ સંસ્થાન—દેશનોજ રાજ્ય જ્યાં રાજ્ય કરતો હોય તે. ને તેનો ધણી તે રાજ્ય.

૨૦ ઇલાકો—જે ધણાં સંસ્થાનો જે પોલીટિકલ એજન્ટના તાબામાં હોય તે.

૨૧ પોલિટિકલ એજન્ટ—ઈલાકાનો જે ઉપરી અધિકારી. (સરકારનો મારફતીઓ)

૨૨ નકશો—કોઇ પણ જગ્યા; દેશ; પ્રાંત; ઇલાકા અને શહેર વિગેરેનો નમુનો.

૨૩ રણુ—જ્યાં ધણા ગાંધી સુધી ઝાડ પાણી વગર નરદમ રેતી લાગત હોય તે.

૨૪ મુળ—નદી નીકળે તે જગ્યા+ ૨૫ મુખ—નદી દરીઆ ને મળેછે તે જગ્યા.

૨૬ સામુદ્રકુની—જે મોટા પાણીના ભાગને સાંધનારો નાનો પાણીનો ભાગ તે.

૨૩ સયોગોભુમી—એ મોટા જમીનના ભાગને સાંધનારો નાનો જમીનનો ભાગ તે.

૨૮ ઉપસાગર—પાણીનો પહેળો ભાગ જમીનમાં ગએલો હોય તે.

૨૯ ભુશિર—જમીનની અણી લાંબી થઇ ને સમુદ્રમાં ગ-એલી હોય તે

વાર્ણન—કાઠિઆવાડ મુઘાઇ ધણાકાના ઉત્તર પ્રાંતના મધ્યથી પ-શ્ચિમમાં છે. તેનું મુખ્ય શહેર રાજકોટ તેમાં પોલિટિકલ એજન્ટ ર-હે છે.

દિશા—ઉત્તરે કચ્છનું રણ; ને કચ્છી અખાત. પૂર્વે અમદા-વાદ જીલ્લો ને અખાતનો અખાત. દક્ષિણ ને અગ્નિ ખૂણમાં અર-બી સમુદ્ર; પશ્ચિમ ને વાયવ્યખૂણામાં અરબી સમુદ્ર ને કચ્છી અખા-ત છે. કાઠિઆવાડ દ્વીપકલ્પ છે. કેમકે ક્રૂંત એકજ અમદાવાદ જી-લ્લા તરફ જમીન ને બીજી તરફ અરબી સમુદ્ર છે. તેનું કા-ઠિ આવ્યાં પહેલાં સૌરાષ્ટ્રનામ હતું તેના મુખ્ય ચાર વિભાગ ને રા-જ્યની જાત પ્રમાણે દશ પ્રાંત છે.

પોલિટીકલ એજન્ટ તથા આસિસ્ટન્ટ પોલિટીકલ એજન્ટની જાણણીઓ:—

ઝાલાવાદની (પૂર્વમાં) વઢવાણ. ગોહિલવાડની (પૂર્વમાં) સોનગઢ. સોરઠની (ઉત્તરમાં) જેતલસર. હાલારની (પૂર્વમાં)રાજકોટ.

દશ પ્રાંતનાં નામ,

૧ ઝાલાવાડ—ઝા પ્રાંતના ઝુમણાં વખણાય છે. ઝાલો ર-
જપૂત થઇ ગયો તેનાં નામપરથી..

૨ ગોહિલવાડ—ગોહિલ જાતના રજપૂતોના નામ પરથી.

૩ ઉંડ સરવૈયાવાડ—સરવૈયા રજપૂતોના નામ પરથી.

૪ બાબરીયાવાડ—બાબરીયા જાતના કાકિના રાજ્ય પરથી.

૫ કાઠિયાવાડ—કાઠિઓનું રાજ્ય તથા કાઠિને તાબે છે તે-
થી, કાંબીઓ વખણાય છે.

૬ સોરઠ—સૌરાષ્ટ્ર પરથી.

૭ બડો—બડો પર્વતને ક્ષીધે.

૮ હાલાર—જડેજનો મૂળ પુરૂષ હાલાજી થઇ ગયો તેના પરથી.

૯ મચ્છુ કાંઠો—મચ્છુ નદીના કાંઠા પરનો ભાગ.—સખળ
મચ્છુ નદી સોંસરી વહે છે તેથી.

૧૦ ઝોખા મંડળ—ઝોખા રજપૂતના નામ પરથી.

ઝખાત—કચ્છનો ને ખંખાતનો સમુદ્ર ચરખીતરણ કચ્છનું.

ખેટ—દીવ; ખીરમ; શિયાળ; સકોદર. સરોવર—નળ.

ઉપજ—ઝાખા ઇલાકામાં ઘણું કરી એક સરખીજ પેદાશ
છે; ફક્ત ભાલમાં ઘઉંને ખીડ; થેક ને પીલુડી યાયછે બાકીના બધા
ભાગમાં ઘઉં; ચણા; જુવાર; બાજરી; શેરડી; મગ; મઠ; અડદ; ઘો-
ળા; કપાસ; કળથી; વાલ; ડાંગર; તલ સિવાય બંદર કાંઠે ખમારતી
લાંકડુ તથા ગીર વિગરે ઝાડીમાં ખાખરા, સાગ; વિગરે છે.

ખનીજ—ખચર; ભોદુ; ખારસ તથા તાંબા પીતલનાં વાસણ
સાથુ; રેશમી કાપડ, મોતી, સૂતરાઉ કાપડ; એ બને તથા નીપજેછે.

(૧૮)

પર્વતો.

| પર્વતનું નામ. | કયાં છે. | તેનીઉંચાઇ | શા માટે પ્રખ્યાત છે. |
|----------------------------|--|---------------------|---|
| ૧ શેત્રુઘ્ન્ય. | ગોહિલવાડમાં | ૧૫૦૦ ફુટ | તેના ઉપર આવક લોકોન દેરાં છે. |
| ૨ વાત્રાકગી- ૨કે મોરધાર | ગોહિલવાડમાં | ઝાઝી ઉં- ચાઇ નથી | ૦ |
| ૩ લાંબેધાર. | ગોહિલવાડમાં | " | ૦ |
| ૪ ચોટીલો | પાંચમાં કાઠિયા- વાડ તથા ઝાલા- વાડમાં | " | ચાવંડ માતાનું દેવળ છે. |
| ૫ નાંદીલો | આખરીઆવાડમાં | " | ગુફાઓ તથા ભીમની ચો- રી જોવા લાયક છે. |
| ૬ શાંભો. | આખરીઆવાડમાં | " | સદર |
| ૭ માંગડો | આખરીઆવાડમાં | " | સદર |
| ૮ ઠાંગો | ઝાલાવાડ પ્રાંતમાં | " | ધાસ, અખતુસ, ખેર, સા ગ ને આખરા વિગરે ઉ- પયોગી ઝાડો ધણાં છે. |
| ૯ ગીર | સોરઠ પ્રાંતમાં | " | ધાસ, અખતુસ; ખેર, સા ગ; ને આખરા વિગરે ઉ પયોગી ઝાડો છે. તુળશી શ્યામ ત્યાં ફુંડ છે. |
| ૧૦ ગીરનાર. | સોરઠ પ્રાંતમાં | ૩૫૦૦ ફુટ | તેની સાત ટુંકો છે સર્વ થીઉંચો છે. હવા ખાવા તથા તીથેનું ઠેકાણું. તે- ના ચડમાં દાતાર છે. |
| ૧૧ બડો | બડોપ્રાંતમાં તથા હાલારમાં. | ૨૦૦૦ ફુટ | પથ્થર; ઝાડી બહુ છે. |

નદીઓ.

| નદીનું નામ. | કયાંથી નીકળી | કોને મળે છે | કયા પ્રાંતમાં થયેને | કયું કુદૃશ માં | તે ઉપરનાં શહેરો. |
|-------------------|-------------------------|----------------|-------------------------------|-------------------|---|
| લીંબડીનો બોગાંબો. | ચોટીલા પર્વત માંથી | ખંભાતના અખાતને | ઝાલાવાડમાં થયેને | પશ્ચિમથી પૂર્વ | વડોદ્ર, લીંબડી; ઉપખંડી; ચોકી; ઉપખંડુ; ખંબલા; પાણુ કીણા. |
| વઢવાણનો બોગાંબો. | ચોટીલા પર્વત માંથી | નળ સરોવર માં | ઝાલાવાડમાં | પશ્ચિમથી પૂર્વ | શિયાણા; વઢવાણ; જામુ, મુળી. |
| મચ્છુ. | ચોટીલા પર્વત માંથી | કચ્છના રણને | મચ્છુકાંઠામાં | અગ્નીથી વાનસ્પત્ય | ખામણ; બોર; મહિકા; વાંકાનેર; મોરબી માલીઉં |
| દેસે | ચોટીલાના મધ્ય વન માંથી. | ખંભાતના અખાતને | ગોહિલવાડમાં | વાયવ્યથી અગ્નિ | અડલી; ગંદરા; લાખણકા; વળા. |
| જેતુંજી | ગીર પર્વત માંથી | ખંભાતના અખાતને | સોરઠ કાઠિયાવાડ ને ગોહિલવાડમાં | પશ્ચિમથી પૂર્વ | ધારી, ચોક; પાલીતાણા, તળાખ. |
| ધાતરવડી. | ગીર પર્વત માંથી | આરબી સમુદ્રને | ખાખરીઆવાડમાં | વાયવ્યથી અગ્નિ | અ-રાજુલા. |

| | | | | | |
|----------|----------------------------|---------------------|---------------------------------|-------------------|---|
| ભાદર | ચોટીલાના મઢા વન ફુગરમાંથી. | અરથી સમુદ્ર ને | કાઠિઆવાડને સોરઠમાંથઈને | પશાનથી નેશ ત્ય | જસદણુ; આટકોટ; જો તપૂર; ધોરાજી; ઉ પલેટા; કુતીઆણું; ગણોદ, નવી અ- દરથી ઉપલેટા સુ ધી. |
| સુક ભાદર | સદર | અખાતના અખાતને ખાતને | અખાતના અખાતવાડને અલાવાડમાં થઈને | પશ્ચિમથી પૂર્વ | રાણપુર; નાગનેશ. |
| આજી | સરધાર પાસે ફુગરમાંથી | કચ્છના અખાતને તને | હાલારમાં થઈને | અગ્નિથી વા-યન્ય | સરધાર; રાજકોટ; આ લંબુ. |
| રામાવતી | અલેચકુગર ત્યાં બડીમાંથી | કચ્છના અખાતને ખાતને | હાલારમાં થઈને | દક્ષિણથી ઉત્તર | હાલાપુર; છીકાડી; નવા નગર; |
| ઉડ | બડી પર્વતમાંથી | કચ્છના અખાતને ખાતને | હાલારમાં થઈને | દક્ષિણથી ઉત્તર | જોડીઆ. |
| ફલકુજ | ડાંગ પર્વતમાંથી | કચ્છના રણને ખાતને | હાલાવાડમાં થઈને | નૈરુત્વથી વાય-વ્ય | વારીયાણા, આવલી, ધાંગધા. |
| માંસર. | લીમડીના ભોગા વા માંથી. | ભાલમાં | હાલાવાડમાં થઈને | પશ્ચિમથી પૂર્વ | સુગ; ભડકવા; મોજદા; ભાઈકા. |
| કૈમઈ | ચોટીલામાંથી | કચ્છના રણને | હાલાવાડમાં થઈને | નૈરુત્વથી ઈ-શાન | સીયા; સરવાળ. |

| | | | | |
|-------------------|----------------------|--------------------|-----------------|----------------------------------|
| કંકાવટી | ચોટીલામાંથી. | કચ્છના રણુને | ઝાલાવાડ. | અગ્નિથી વાયા ^૧ કાંઠે. |
| ખાંભણુ | ચોટીલામાંથી. | કચ્છના રણુને | ઝાલાવાડ. | અગ્નિથી વાય- યવ્ય |
| ભાવનગર ની ખાડી | મદાવન હુંગર માંથી | ખંખાતના અ ખાતને | ગોહિલવાડ | પશ્ચિમથી પૂર્વ ભાવનગર. |
| કેરી | મદાવન હુંગર માંથી | ખંખાતના અ ખાતને | ગોહિલવાડ | વાયવ્યથી અ નીંગાળું. |
| ખગડ | શેત્રુંજીમાંથી. | અરબી સમુ- દ્રને | હંડસરવૈયા | વાયવ્યથી અ દાડા. |
| માલાણુ | મારે ધારમાંથી | અરબી સમુ- દ્રને | ગોહિલવાડ | વાયવ્યથી અ ખટવંકું. મહુવા. |
| રાણડી. | ગીરપર્વતમાંથી | અરબી સમુ- દ્રને | ખાખરીઆવા ડું | ગિન હિમરથી દક્ષિણ |
| રપેણુ | સદર | સદર | સદર | સામતેર, સનખડારા જપુર. |
| ધોલાદ્રી | સદર | સદર | સદર | વાયવ્યથી અ ગિન |
| રાવલ | સદર | સદર | સદર | સદર |
| જેલાપરી | સદર | સદર | સદર | જેલાપરીઓકાંઠે (મુ લક) |

| | | | | | |
|---------------|--------------------|---------------------------------|------------------------------------|--|--|
| ગોમા નીભણી | ચોટીલામાંથી સદર | ભાદરવે લીંમડીના ભો ગાવાને | કાઠિયાવાડ કાઠિયાવાડને આલાવાડ | નૈરત્યગ્રીષ્ઠશા- સદર ધશાનથી નૈર ત્ય | રાણપુર સુદામડું |
| પુષ્પી | ઓસમ પર્વત | ભાદરવે | સોરઠ | ઈશાનથી નૈર ત્ય | કોટડું; બેલા; રામેશ- ર; વડાણું; આણું- દુર અગડું; નાગ ડી; મેદરડા માધદો |
| ઔઝત. | ગીરમાંથી | ભાદરવે. | સોરઠ | " | સાસણ; પાટણ |
| કાંબ | ગીર પર્વત માંથી | ખાંભવને | સોરઠમાં | " | ઘાંટવડ, કોડીનાર |
| હીરણ. | ગીરમાંથી | અરબી સમુ- દ્રને | સોરઠમાં | " | વેરાવળ |
| સામન | ગીરમાંથી | " | સોરઠમાં | " | બેસાણ, રાણપુર મં |
| સીંગવડો | ગીરમાંથી | " | સોરઠમાં | " | ઝવેડી, વંથેલી. |
| છંગવડો | ગીરમાંથી | ઓઝતને | સોરઠમાં | " | માધવપુર. |
| ઉમેણુ | ગીરમાંથી | અરબી સમુ- દ્રને | સોરઠમાં | " | ચેરવાડ. |
| સાબળી | ગીરમાંથી | " | સોરઠમાં | " | કુતરથીદક્ષિણ ગોંડલ. |
| ખાભવ | ગીરમાંથી | ભાદરવે | સોરઠમાં | " | |
| ગોંડલી | ખડામાંથી | | હાલારમાં | | |

| આપા | ઝૂંડેમાંથી | કચ્છના અ- ખાતે | હાલારમાં | દક્ષિણથી ઉ- તર |
|---------|-------------|---------------------|-----------------|-------------------------------|
| ધી | સદર | સદર | હાલારમાં | સદર |
| વર્તુ | સદર | સદર | સદર | સદર |
| દોડાદોઈ | ગોડીલામાંથી | કચ્છના રણને | મચ્છુકાંશમાં | અગ્નિથી વા- વરદુસર; બેતપુર |
| ગોમતી | ઓખામાંથી | ચારબી સમુ- દ્રને | ઓખામંડળ- માં | યવ્ય પૂર્વથી પશ્ચિમ દારકા. |

વળે વસુધ કરેવા, રૈયતના જન માલનું રક્ષણ કરવું, ઇનસાફ કરેવા, રૈયતને સુ-
ધારવી તથા હરેક રીતે સુખ આપવું તે રાજની પ્રરજ છે. રાજ રૈયતપરની પ્રરજ આદા
કરેછ કે નહિ તેનો તુમાસ રાખેવા ને ઇનસાફ કરેવા તે પોલીટીક્સ ઓળટનું કામ છે.

હાઇ સ્કૂલો—જૂનાગઢ; વહવાણ; ભાવનગર; નગર; રાજકોટ તથા રાજકોટમાં
ટ્રાન્સકોલેજ; હુતરસાળા; ટ્રેનિંગ કોલેજ ગુજરાતી વિગરે ભણનારા છોકરાની નિશાળો
૮૦૦ છે. તેમાં નિશાળીઆ, કન્યાશાળા, તેમાં છોકરીઓ છે.

૪૨૦૦૦ ૬૦ ૩૦૦૦

છાપખાનાં—રાજકોટ; જૂનાગઢ; વહવાણ નગર; ભાવનગર; મોરબી; ગોંડળ;
ધાંગધા.

કપાસ લોહવાના સંઘા—જેતપર; લાહી; અમરેલી; જસદણ ધાંગધા; વહવાણ.
રેલવેસમઘી હુડીકત—ભાવનગર; ગોંડળ; જૂનાગઢ; મોરબી; ધામેવ. લખતર.

શહેરો.

શહેરનું નામ. જાણવાલાયક પ્રાંત. વર્ગ. રાજ્યની જાત. તાલુકો. બંદર. તીર્થની જગ્યા.

| ૧ | ૨ | ૩ | ૪ | ૫ | ૬ | ૭ | ૮ |
|--------------|-------------------|----------------|---------|--------|-----------|---|---|
| ૧ ધાંગધા. | પથરાધંટી | જાલા-પહેલો વાડ | જાલા રજ | ધાંગધા | ૦ | ૦ | |
| ૨ હળવદ | ધણાપ્રાહણો. | " | ૦ | " | " | ૦ | ૦ |
| ૬ ચરાડવું. | ૦ | " | ૦ | " | " | ૦ | ૦ |
| ૪ વઢવાણ. | સાથુ પ્રાં. આ. પો | " | ખીજો. | " | વઢવાણ. | ૦ | ૦ |
| ૫ લીંબડી. | સાડલા, સુડી | " | " | " | લીંબડી. | ૦ | ૦ |
| ૬ શિઆણી. | સ્વા. ધર્મ | " | ૦ | " | " | ૦ | ૦ |
| ૭ ભેરધકા | થાણદાર. | " | ૦ | " | " | ૦ | ૦ |
| ૭ જાંથુ. | વોહોરા | " | ૦ | " | " | ૦ | ૦ |
| ૯ વડોદ | ૦ | " | ૦ | " | વઢવાણ. | ૦ | ૦ |
| ૧૦ થાન | માઠીનાંવાસણ | " | ત્રીજો. | " | લખતર. | ૦ | ૦ |
| ૧૧ મુળી. | સ્વા. મંદીર | " | ચોથો. | પરમાર | મુળી. | ૦ | ૦ |
| ૧૨ સુડા. | ઝાડ | " | ત્રીજો. | જાલા | સુડા. | ૦ | ૦ |
| ૧૩ વાંકાનેર. | જડેશ્વરમહા-દેવ | " | ખીજો. | " | વાંકાનેર. | ૦ | ૦ |
| ૧૪ સાયલા. | લાલોભગત. | " | ત્રીજો. | " | સાયલા. | ૦ | ૦ |

| હવા રેલવે ખાવા સ્ટેશન | રાજકોટ ટર્મીનલ દિશા. | તળની સ્તી. | વ. તાલુકાની વસ્તી. | જિલ્લાના નામો. | તે અખત્યાર. | કંઈ ન દીધેર |
|--------------------------|----------------------------|---------------|-----------------------|-------------------|-----------------------------|----------------|
| ૯ | ૧૦ | ૧૧ | ૧૨ | ૧૩ | ૧૪ | ૧૫ ૧૬ ૧૭ |
| ૦ | ૦ | ધશાન | ૧૩૦૦૦ | ૯૯૬૮૬ | આલા દી. ફો. કુલ. | ૦ ૫૬૬ |
| ૦ | ૦ | ઉત્તર | ૯૦૦૦ | ૦ | ” | ૦ ૫૦૦ |
| ૦ | ૦ | ” | ૨૨૦૦ | ૦ | ” | ૦ ૦ |
| ૦ | ૦ | સ્ટેશન ધશાન | ૧૭૦૦૦ | ૪૨૫૦૦ | ” કુલ. સરકારની પરવાનગીથી | ૦ ૫૦૦ |
| ૦ | ” | ” | ૧૭૦૦૦ | ૪૩૦૬૩ | ” | ૦ ૦ |
| ૦ | ૦ | ” | ૩૦૦૦ | ૦ | ” | ૦ ૦ |
| ૦ | ૦ | ” | ૨૩૦૦ | ૦ | ” | ૦ ૦ |
| ૦ | ૦ | ” | ૨૦૦૦ | ૦ | ” | ૦ ૦ |
| ૦ | ૦ | ” | ૧૬૦૦ | ૦ | ” | ૦ ૦ |
| ૦ | ૦ | ” | ૦ | ૦ | ” | ૦ ૦ |
| ૦ | ૦ | ” | ૦ | ૧૯૮૩૨ | ” ફો. ૫ વર્ષ ૨૦૦૦૦ દંડ | ૦ ૫૦૦ |
| ૦ | ૦ | સ્ટેશન પૂર્વ | ૦ | ૧૩૪૯૬ | ” ફો. ૭ વ ર્ષ ફે દી, | ૦ ૫૦૦ |
| ૦ | ૦ | ઉત્તર | ૧૦૦૦૦ | ૩૦૪૯૧ | ” કુલ. સરકાર- ની મજુરી, | ૦ ૫૦૦ |
| ૦ | ૦ | ધશાન | ૪૦૦૦ | ૧૬૯૯૧ | ” ૭ વ, કે દંડ ૫૦૦૦૦ | ૦ ૦ |

| | | | | | | |
|----------------------------------|-------------|-------|--------|--------|---|---|
| ૧૫ લખતર, મુખ્યત્વાર | જાલા-ત્રીજો | જાલા. | લખતર | ૦ | ૦ | |
| | વાડ | | | | | |
| ૧૬ કીસોલ | ” | ૦ | ” | ૦ | ૦ | |
| ૧૭ બળાળ, મુખ્ય શહેર | ” | એથો | જત | બળાળા | ૦ | ૦ |
| ૧૮ પાટડી. વડાગરૂં મીડું. | ” | ૦ | કાળુખી | પાટડી | ૦ | ૦ |
| ૧૯ સીયા માહાલ | ” | ૦ | જાલા. | ધાંગધા | ૦ | ૦ |
| ૨૦ સરવાલ | ” | ૦ | ” | ” | ૦ | ૦ |
| ૨૧ ઝીંઝવાડા પંચાસર | ” | ૦ | ” | ” | ૦ | ૦ |
| ૨૨ પંચાસર ખડેર રણપા | ” | ૦ | ૦ | ૦ | ૦ | ૦ |
| સે | | | | | | |
| ૨૩ બડકવા મરચા | ” | ૦ | ૦ | ૦ | ૦ | ૦ |
| ૨૪ ખેરવા | ” | ૦ | જત | બળાળા | ૦ | ૦ |
| ૨૫ મોઢવાણા | ” | ૦ | જત | બળાળા | ૦ | ૦ |
| ૨૬ તલસાળા ધર્મી | ” | ૦ | જાલા. | લીંબડી | ૦ | ૦ |
| ૨૭ તામની- | ” | ૦ | ” | લખતર | ૦ | ૦ |
| આ | | | | | | |
| ૨૮ મોઢાડ. | ” | ૦ | ” | લીંબડી | ૦ | ૦ |
| ૨૯ પાણશી-ધર્મી માહાલ. | ” | ૦ | ” | ” | ૦ | ૦ |
| ણા | | | | | | |
| ૩૦ રામપરૂં. માહાલ | ” | ૦ | ” | વઢવાણ | ૦ | ૦ |
| ૩૧ મલિકા | ” | ૦ | ૦ | ૦ | ૦ | ૦ |
| ૩૨ કુવાડડું | ” | ૦ | ૦ | ૦ | ૦ | ૦ |
| ૩૩ મોયક | ” | ૦ | જાલા. | ધાંગધા | ૦ | ૦ |
| ૩૪ ભાવનગર મકાનો કાપડા ગોહિ-પહેસે | ગોહિ-પહેસે | ગોહલ | ભાવનગર | ખંદર | ૦ | ૦ |
| લવાડ | | | | | | |
| ૩૫ શિહોર. પથરવાસણ. | ” | ૦ | ” | ” | ૦ | ૦ |

(૬૭)

| | | | | | | | |
|-------|----------|-------|-------|--------|-------------------|------|---------------|
| ૦ | રે.સ્ટે. | ઈશાન | ૫૦૦૦ | ૨૩૨૦૮ | ઝાલા-૭ વ. કે. દા. | ૦ | ૦ |
| | | | | | વાડ. ૫૦૦૦૦ | | |
| હ.ખા. | ૦ | " | ૦ | ૦ | " | ૦ | ૦ |
| ૦ | ૦ | " | ૨૦૦૦ | ૧૫૮૭૭ | " ૫ વ. કે. દા. | ૦ | ૦ |
| | | | | | ૨૦૦૦૦ | | |
| ૦ | રે.સ્ટે. | " | ૪૫૦૦ | ૦ | " પે. વ. મ્યા. | ૦ | ૦ |
| ૦ | ૦ | " | ૩૦૦૦ | ૦ | " | ૦ | ૦ ઉમૈધ |
| ૦ | ૦ | " | ૦ | ૦ | " | ૦ | ૦ ઉમૈધ |
| ૦ | ૦ | " | ૦ | ૦ | " | ૦ | ૦ |
| ૦ | ૦ | ૦ | ૦ | ૦ | ૦ | ૦ | ૦ |
| ૦ | ૦ | પૂર્વ | ૦ | ૦ | ઝાલા- | ૦ | ૦ વાંસર |
| | | | | | વાડ | | |
| ૦ | ૦ | ઈશાન | ૦ | ૦ | " | ૦ | ૦ |
| ૦ | ૦ | " | ૦ | ૦ | " | ૦ | ૦ |
| ૦ | ૦ | " | ૦ | ૦ | " | ૦ | ૦ |
| ૦ | ૦ | " | ૦ | ૦ | " | ૦ | ૦ |
| ૦ | ૦ | " | ૦ | ૦ | " | ૦ | ૦ વાંસર |
| ૦ | ૦ | " | ૨૫૦૦ | ૦ | " | ૦ | ૦ ભોગા- વે |
| ૦ | ૦ | " | ૦ | ૦ | " | ૦ | ૦ " |
| ૦ | ૦ | " | ૦ | ૦ | " | ૦ | ૦ મમ્મુ |
| ૦ | ૦ | " | ૦ | ૦ | " | ૦ | ૦ |
| ૦ | ૦ | ઉત્તર | ૦ | ૦ | " | ૦ | ૦ |
| ૦ | રે.સ્ટે. | અગ્નિ | ૪૦૦૦૦ | ૪૦૦૩૨૩ | ગોહિ- લવાડ | કુલ. | ૦ ખાડી |
| ૦ | " | " | ૦ | ૦ | " | ૦ | ૦ |

| | | | | | | |
|-----------------------|---|--------|---------|--------------|------|-------|
| ૩૬ સોનગઢ. તમાકુ | " | ૦ | " | " | ૦ | ૦ |
| આ. પો. | | | | | | |
| ૩૭ વળા. વસભીપુર | " | ત્રીજો | " | વળા | ૦ | ૦ |
| ૩૮ ઉમરાળા માહાલ | " | ૦ | " | ભાવનગર | ૦ | ૦ |
| ૩૯ ઘોળા રેલ્વે | " | ૦ | " | " | ૦ | ૦ |
| ૪૦ પાલીતા-આ. દેરાં | " | ખીજો | " | પાલીતાણા | ૦ | ૦ |
| ણા | | | | | | |
| ૪૧ ગારીઆ માહાલ | " | ૦ | " | " | ૦ | ૦ |
| ધાર | | | | | | |
| ૪૨ તળાજી માહાલ આ. | " | ૦ | " | ભાવનગર | ૦ | ૦ |
| દેરાં | | | | | | |
| ૪૩ ગોપનાથ | " | ૦ | " | " | ખંદર | તીર્થ |
| ૪૪ મહુવા જંગલપાન | " | ૦ | " | " | " | ૦ |
| ૪૫ પીપાવાવ | " | ૦ | " | " | " | ૦ |
| ૪૬ કુંડલા સો. વાસણધો | " | ૦ | " | " | ૦ | ૦ |
| તીઆં | | | | | | |
| ૪૭ લાંડી રૂનો સકંજો | " | ચોથો | " | લાંડી | ૦ | ૦ |
| ૪૮ ગઢડા સ્વા. મંદીર | " | ૦ | " | ભાવનગર | ૦ | તીર્થ |
| ૪૯ લીલીઆ માહાલ | " | ૦ | " | " | ૦ | ૦ |
| ૫૦ નીંગાળુ | " | ૦ | " | " | ૦ | ૦ |
| ૫૧ ભોટાદ માહાલ | " | ૦ | " | " | ૦ | ૦ |
| ૫૨ દામનગર માહાલ | " | ૦ | ગાયકવાડ | ગાયકવાડ | ૦ | ૦ |
| ૫૩ ગોધા પ્રગળું | " | ૦ | ઈંગ્રેજ | ઈંગ્રેજ ખંદર | ૦ | ૦ |
| ૫૪ કુંડા મીઠું પાકેકે | " | ૦ | ગોહલ | ભાવનગર | ૦ | ૦ |
| ૫૫ મીઠાવડ. | " | ૦ | " | " | ૦ | ૦ |

| | | | | | | | |
|-----------------|---|---|------|-------|----------|-------------|-----------|
| ૦ રે. સ્ટે | ” | ૦ | ૦ | ” | ૦ | ૦ | ૦ |
| ૦ | ૦ | ” | ૦ | ૧૭૦૧૬ | ” | ૭૫.કે.૨૦૦૦૦ | ધેસો |
| ૦ | ૦ | ” | ૦ | ૦ | ” | દા. | ૦ |
| ૦ રે. જા | ” | ૦ | ૦ | ” | ૦ | ૦ | કાલુભા |
| કશન | ” | ૦ | ૦ | ” | ૦ | ૦ | ૦ |
| ૦ | ૦ | ” | ૦ | ૪૬૨૭૧ | ” | કુલ સરકારની | શેત્રુંજી |
| ૦ | ૦ | ” | ૦ | ૦ | ” | મંજુરી | ૦ |
| ૦ | ૦ | ” | ૦ | ૦ | ” | ૦ | ૦ |
| ૦ | ૦ | ” | ૦ | ૦ | ” | ૦ | શેત્રુંજી |
| હ.ખા. | ૦ | ” | ૦ | ૦ | ” | ૦ | ૦ |
| ૦ | ૦ | ” | ૦ | ૦ | ” | ૦ | માલજી |
| ૦ | ૦ | ” | ૦ | ૦ | ” | ૦ | ૦ |
| ૦ | ૦ | ” | ૦ | ૦ | ” | ૦ | નાવલી |
| ૦ રે. સ્ટે | ” | ૦ | ૬૮૦૪ | ” | ૫ વ. કે. | ૦ | ૦ |
| ૦ | ૦ | ” | ૬૫૦૦ | ” | ૧૦૦૦૦ | દા. | ૦ |
| ૦ | ૦ | ” | ૦ | ” | ૦ | ૦ | ધેસો |
| ૦ રે.સ્ટે. | ” | ૦ | ૦ | ” | ૦ | ૦ | ૦ |
| ૦ રે.સ્ટે પૂર્વ | ” | ૦ | ૦ | ” | ૦ | ૦ | કેરી |
| અગિન | ” | ૦ | ૬૭૭૫ | ” | ૦ | ૦ | ઉતાવળી. |
| ૦ | ૦ | ” | ૦ | ” | ૦ | ૦ | ૦ |
| ૦ | ૦ | ” | ૦ | ” | ૦ | ૦ | ૦ |
| હ.ખા. | ૦ | ” | ૦ | ” | ૦ | ૦ | ૦ |
| ૦ | ૦ | ” | ૦ | ” | ૦ | ૦ | ૦ |

| | | | | | | | |
|----------------------------|--------------|---------|---------------|--------------|--------|---|-------|
| ૫૬ માંડવા | ૦ | ” | ૦ | ” | ” | ૦ | ૦ |
| ૫૭ મુગલાણુ | ૦ | ” | ૦ | ” | ” | ૦ | ૦ |
| ૫૮ પછેગામ પ્રેમ્નારા રહેછે | ” | ૦ | ” | ” | ” | ૦ | ૦ |
| ૫૯ લીમડા રાજી રહેછે | ” | ૦ | ” | લીમડા | ૦ | ૦ | |
| ૬૦ પરબડી | ૦ | ” | ૦ | ” | ભાવનગર | ૦ | ૦ |
| ૬૧ ભીમડાદ. | ૦ | ” | ૦ | ” | ” | ૦ | ૦ |
| ૬૨ લોલીઆ. મીનારો છે. | ” | ૦ | ” | ” | ” | ૦ | ૦ |
| ૬૩ ખુંટવડું | ૦ | ” | ૦ | ” | ” | ૦ | ૦ |
| ૬૪ દાઠા રાજી રહે છે | કિડંસર | ૦ | સરવૈયા | સરવૈયા | ૦ | ૦ | |
| | વૈયા | ” | ૦ | ” | ” | ૦ | ૦ |
| ૬૫ ચોક થાણુદાર | ” | ૦ | ” | ” | ૦ | ૦ | |
| ૬૬ મોણુપોર | ૦ | ” | ૦ | ” | ” | ૦ | ૦ |
| ૬૭ ગણુધોળ | ૦ | ” | ૦ | ” | ” | ૦ | ૦ |
| ૬૮ જાકાઆદ રાજ્યસ્થાન | ખાખરી ખીન્ને | હાગશી | જનકરાખાદ ખંદર | ૦ | ૦ | ૦ | |
| | યાવાડ | ” | ૦ | ૦ | ૦ | ૦ | ૦ |
| ૬૯ ખટોશિ-રીંગણુ | આળ | ” | ૦ | ગોહેબ | ભાવનગર | ૦ | ૦ |
| ૭૦ રાજુકા કાળમીડ પથ્ય | ૨ | ” | ૦ | નવાખ | જુનાગઢ | ૦ | તીર્થ |
| ૭૧ તુળશી ઉનાપાણી કુંડ | સ્થામ | ” | ૦ | ૦ | ૦ | ૦ | ૦ |
| ૭૨ કુંગર | ૦ | ” | ૦ | ખાખરીયા તળપદ | ૦ | ૦ | ૦ |
| ૭૩ ડડેણુ | ૦ | ” | ૦ | કાઠી | ૦ | ૦ | ૦ |
| ૭૪ વડાળ | ૦ | ” | ૦ | ૦ | ૦ | ૦ | ૦ |
| ૭૫ અમરેલી પાણીઓ સુ- કાઠિયા | ૦ | ગાયકવાડ | વડોદરા | ૦ | ૦ | ૦ | ૦ |
| ૭૬ | ઓ | વાડ | | | | | |

| | | | | | | |
|------------------------|---|--------|---------|--------|---|---|
| ૭૩ ધારી માહાદ્ધ | " | ૦ | " | " | ૦ | ૦ |
| ૭૭ માણેકપુરા | " | ૦ | કાઠિ | ચીધાર | ૦ | ૦ |
| ૭૮ ચિતલ તાલુકો | " | ૦ | " | જેતપુર | ૦ | ૦ |
| ૭૯ બગસરા ચોકાણો | " | ૦ | " | તળ | ૦ | ૦ |
| ૮૦ જેતપુર રેનો સચો | " | ચોથો | " | " | ૦ | ૦ |
| ૮૧ વડીઆ તાલુકો | " | પાંચમો | " | " | ૦ | ૦ |
| ૮૨ વસાવડ મેમણ | " | છઠ્ઠો | નાગરખા. | " | ૦ | ૦ |
| ૮૩ જસદણ રેનો સચો | " | ત્રીજો | કાઠિ | " | ૦ | ૦ |
| ૮૪ પ્રાણીઆ ભગતતું સ્થા | " | ૦ | " | ૦ | ૦ | ૦ |
| ૮૫ વીંછીઆ રસાલો કિલ્લો | " | ૦ | " | જસદણ | ૦ | ૦ |
| ૮૬ રાણપુર ચીણી | " | ૦ | ૦ | ધંધુકા | ૦ | ૦ |
| ૮૭ નાગનેસ માહાદ્ધ | " | ૦ | ઝાલા | વઢવાણ | ૦ | ૦ |
| ૮૮ ચોટીલા થાણુદાર | " | ૦ | કાઠિ | ૦ | ૦ | ૦ |
| ૮૯ ભીમોરા | " | ૦ | " | ૦ | ૦ | ૦ |
| ૯૦ ભારમડી | " | ૦ | " | ૦ | ૦ | ૦ |
| ૯૧ મેવાસ | " | ૦ | " | ૦ | ૦ | ૦ |
| ૯૨ છનીઆર | " | ૦ | " | ૦ | ૦ | ૦ |
| ૯૩ નાગલપુર | " | ૦ | " | ૦ | ૦ | ૦ |
| ૯૪ જાડલી | " | ૦ | " | તળપદ | ૦ | ૦ |
| ૯૫ ચાણુદ- | " | ૦ | " | ૦ | ૦ | ૦ |

| | | | | | |
|---------------------------------------|---|--------------------|----------------|---|------|
| પુરા. | | | | | |
| ૬૬ નીનાવા. | ૦ | " ૦ " | ૦ | ૦ | ૦ |
| ૭૭ જૂનાગઢ. ઇમારતો; ખા-સોરઠ પહેલો બાળી | ગ | | જુનાગઢ | ૦ | તિથિ |
| ૬૮ ખાટવા. | ૦ | " ત્રીજો " | ખાટવા | ૦ | ૦ |
| ૬૯ બગસરા મણા.ઝેડ; | | " ૦ " | જુનાગઢ | ૦ | ૦ |
| ૧૦૦ કુતીઆ ધાબળા | | " ૦ " | " | ૦ | ૦ |
| ૧૦૧ અમરા તાલુકદાર ૨- | | " ૦ " | અમરાપૂર | ૦ | ૦ |
| પુર હે છે | | | | | |
| ૧૦૨ માળીજી હાટીસોદાર ૨ | | " ૦ " | જુનાગઢ | ૦ | ૦ |
| હે છે | | | | | |
| ૧૦૩ માંગરો | ૦ | " ચોથો શેખ | માંગરોળ બંદર | ૦ | ૦ |
| ળ | | | | | |
| ૧૦૪ ચોરવા નાગરવેલના | | " ૦ બાળી | જુનાગઢ | ૦ | ૦ |
| ડ પાન: | | | | | |
| ૧૦૫ વેરાવળ | ૦ | " ૦ " | " બંદર | ૦ | ૦ |
| ૧૦૬ પદ્મજી લીલ પરણા- | | " ૦ " | " | ૦ | તિથિ |
| વે છે | | | | | |
| ૧૦૭ સુત્રાપા | ૦ | " ૦ " | " | ૦ | " |
| ડા | | | | | |
| ૧૦૮ દીવ. પલંગપોસ; | | " ૦ શીરંગી | દીવ(પોતું-બંદર | ૦ | ૦ |
| હલવો; ઢો | | | ગાલ) | | |
| લીઆ. | | | | | |
| ૧૦૯ ઝાડીનાર | ૦ | " ૦ માયકવાડ વડોદરા | ૦ | ૦ | ૦ |
| ૧૧૦ છિના રાણતું ચલણ | | " ૦ બાળી | જુનાગઢ | ૦ | ૦ |

| | | | | | | |
|---------------------------|--------|-------|-----------|--------|-------|-------|
| ૧૧૧ પ્રાગ યાત્રા | ” | ૦ | ” | ” | ૦ | તિર્થ |
| ૧૧૨ ખીલ- ૦ | ” | ૦ | કાઠિ | જેતપુર | ૦ | ૦ |
| ખા | | | | | | |
| ૧૧૩ વંથલી. વામનસ્થલી | ” | ૦ | ખાખી | જુનાગઢ | ૦ | તિર્થ |
| ૧૧૪ મંઝેવ- ૦ | ” | ૦ | ” | ” | ૦ | ૦ |
| ડી | | | | | | |
| ૧૧૫ મેંદરડું ૦ | ” | ૦ | કાઠિ | જેતપુર | ૦ | ૦ |
| ૧૧૬ પાણી- ૦ | ” | ૦ | ખાખી | જુનાગઢ | ૦ | ૦ |
| કોઠો | | | | | | |
| ૧૧૭ સામતેર ૦ | ” | ૦ | ” | ” | ૦ | ૦ |
| ૧૧૮ સનખડા ૦ | ” | ૦ | ” | ” | ૦ | ૦ |
| ૧૧૯ ધોધલા ૦ | ” | ૦ | ” | ” | ખંદર | ૦ |
| ૧૨૦ બાલા ૦ | ” | ૦ | ” | ” | ૦ | ૦ |
| ગામ | | | | | | |
| ૧૨૧ મૈયારી ૦ | ” | ૦ | ” | ” | ૦ | ૦ |
| ૧૨૨ પોરબં-સદામા પૂરી. ખડો | ત્રીજો | જેઠવા | ૨-પોરબંદર | ખંદર | તિર્થ | |
| દર | | | જપૂત | | | |
| ૧૨૩ માધવ ગેડ કહેવાયછે | ” | ૦ | ” | ” | ” | તિર્થ |
| પુર માધવરાયની- | | | | | | |
| મૂર્તિ | | | | | | |
| ૧૨૪ રાણા- લોદાનીખાણો | ” | ૦ | ” | ” | ” | ૦ |
| વાવ | | | | | | |
| ૧૨૫ નવું બં ૦ | ” | ૦ | ” | ” | ” | ૦ |
| દર | | | | | | |
| ૧૨૬ છાધ્યા ૦ | ” | ૦ | ” | ” | ૦ | ૦ |
| ૧૨૭ મીઆ- ૦ | ” | ૦ | ” | ” | ૦ | ૦ |
| ની | | | | | | |
| ૧૨૮ કંડોરણ ૦ | હાલાર | ૦ | જપૂત. | નગર | ૦ | ૦ |

(૯૭)

| | | | | | | | | |
|---|---|--------|------|-------|-------|-------|------|-------|
| ૦ | ૦ | ” | ૦ | ૦ | ” | ૦ | ૦ | ૦ |
| ૦ | ૦ | ” | ૫૦૦૦ | ૦ | ” | ૦ | ૦ | ૦ |
| ૦ | ૦ | નૈરત્ય | ૭૦૦૦ | ૦ | ” | ૦ | ૦ | ઉમેલુ |
| ૦ | ૦ | ” | ૨૩૦૦ | ૦ | ” | ૦ | ૦ | ઉમેલુ |
| ૦ | ૦ | ” | ૫૦૦૦ | ૦ | ” | ૦ | ૦ | ૦ |
| ૦ | ૦ | દક્ષિણ | ૦ | ૦ | ” | ૦ | ૦ | ૦ |
| ૦ | ૦ | ” | ૦ | ૦ | ” | ૦ | ૦ | ૦ |
| ૦ | ૦ | ” | ૦ | ૦ | ” | ૦ | ૦ | ૦ |
| ૦ | ૦ | ” | ૦ | ૦ | ” | ૦ | ૦ | ૦ |
| ૦ | ૦ | નૈરત્ય | ૦ | ૦ | ” | ૦ | ૦ | ૦ |
| ૦ | ૦ | ” | ૦ | ૦ | ” | ૦ | ૦ | ૦ |
| ૦ | ૦ | ” | ૦ | ૭૧૦૭૨ | ” | ૭૧૦૭૨ | ૮. | ૦ |
| ૦ | ૦ | ” | ૦ | ૦ | ” | ૨૦૦૦ | દંડ. | ૦ |
| ૦ | ૦ | ” | ૦ | ૦ | ” | ૦ | ૦ | ૦ |
| ૦ | ૦ | ” | ૦ | ૦ | ” | ૦ | ૦ | ૦ |
| ૦ | ૦ | ” | ૦ | ૦ | ” | ૦ | ૦ | બાદર |
| ૦ | ૦ | ” | ૦ | ૦ | ” | ૦ | ૦ | ૦ |
| ૦ | ૦ | ” | ૦ | ૦ | ” | ૦ | ૦ | ૦ |
| ૦ | ૦ | ” | ૦ | ૦ | દાહાર | ૦ | ૦ | ૦ |

| | | | | | | |
|--|---|--------|---------------|--------|------|---|
| ૧૨૯ નવાન-કંકુ; મોતી; ગર બાંધણી | " | પહેલો | " | " | બંદર | • |
| ૧૩૦ સલાયા | " | ૦ | " | " | બંદર | ૦ |
| ૧૩૧ અમા-લોદુ નીકમેજી ળીઆ | " | ૦ | " | " | ૦ | ૦ |
| ૧૩૨ લાલપુર | " | ૦ | " | " | ૦ | ૦ |
| ૧૩૩ છીકારી | " | ૦ | " | " | ૦ | • |
| ૧૩૪ બાલાચ ડી | " | ૦ | " | " | બંદર | • |
| ૧૩૫ નેડીઆ | " | ૦ | " | " | બંદર | ૦ |
| ૧૩૬ ધુવાવ. દાળીઆ | " | ૦ | " | " | ૦ | • |
| ૧૩૭ બાલંજી | " | ૦ | " | " | ૦ | ૦ |
| ૧૩૮ સરધાર | " | ૦ | " | રાજકોટ | ૦ | ૦ |
| ૧૩૯ દોલ | " | બીજો | " | મોલ | ૦ | ૦ |
| ૧૪૦ ધાફા થાણુદાર | " | ૦ | ૦ | ૪ | ૦ | ૦ |
| ૧૪૧ રાજકોટ પો. એ. રહેજો ઉતારા બં ગલાબાગ, ફી. દો. દે કો. પુલ. | " | બીજો | નડેન રજપૂત | રાજકોટ | • | ૦ |
| ૧૪૨ ગોંડલ ગોળ | " | પહેલો. | " | ગોંડલ | ૦ | • |
| ૧૪૩ ચોરાજી કપાસનો સકં નો | " | ૦ | " | " | ૦ | • |
| ૧૪૪ કાલાવડ સિતળાનું દેરું | " | ૦ | " | નગર | ૦ | • |
| ૧૪૫ ઠાંક | " | ૦ | " | ગોંડલ | ૦ | • |
| ૧૪૬ પડધરી મેમણ બહુજી- | " | ૦ | " | નગર | ૦ | • |

(૯)

| | | | | | | | | |
|---|---|-------------|-------|--------|---|---------------------------|----|-------------|
| ૦ | ૦ | પશ્ચિમ | ૩૭૦૦૦ | ૧૩૬૧૪૭ | " | કુલ | ૬૦ | રામાવ તી |
| ૦ | ૦ | " | ૦ | ૦ | " | ૦ | ૦ | ૦ |
| ૦ | ૦ | " | ૦ | ૦ | " | ૦ | ૦ | ૦ |
| ૦ | ૦ | " | ૦ | ૦ | " | ૦ | ૦ | રામાવ તી |
| ૦ | ૦ | " | ૦ | ૦ | " | ૦ | ૦ | રામાવ તી |
| ૦ | ૦ | હ.ખા.વાયવ્ય | ૦ | ૦ | " | ૦ | ૦ | ૦ |
| ૦ | ૦ | " | ૦ | ૦ | " | ૦ | ૦ | ૭૬૩ |
| ૦ | ૦ | " | ૦ | ૦ | " | ૦ | ૦ | ૦ |
| ૦ | ૦ | " | ૦ | ૦ | " | ૦ | ૦ | આશ |
| ૦ | ૦ | અગ્નિ | ૦ | ૦ | " | ૦ | ૦ | આશ |
| ૦ | ૦ | વાયવ્ય | ૦ | ૨૧૭૭૬ | " | કુલ. સરકાર- ની મંજુરી, | ૦ | ૦ |
| ૦ | ૦ | નૈરત્ય | ૦ | ૦ | " | ૦ | ૦ | ૦ |
| ૦ | ૦ | ૦ | ૧૮૦૦૦ | ૪૬૫૪૦ | " | કુલ. સરકાર- ની મંજુરી, | ૦ | આશ |
| ૦ | ૦ | દક્ષિણ | ૦ | ૧૩૫૬૦૪ | " | ૦ | ૦ | ગોરેલી |
| ૦ | ૦ | નૈરત્ય | ૦ | ૦ | " | ૦ | ૦ | બાતક |
| ૦ | ૦ | પશ્ચિમ | ૦ | ૦ | " | ૦ | ૦ | ૦ |
| ૦ | ૦ | નૈરત્ય | ૦ | ૦ | " | ૦ | ૦ | ૦ |
| ૦ | ૦ | વાયવ્ય | ૦ | ૦ | " | ૦ | ૦ | ૦ |

| | | | | | | | |
|-------------------------|--------------|---|---|---|---------|------|-------|
| ୧୪୭ ଭଲଶା | ୦ | " | ୦ | " | ନଗର | ୦ | ୦ |
| ଶୁ | | | | | | | |
| ୧୪୮ ମେଢାପୁର | ୦ | " | ୦ | " | " | ୦ | ୦ |
| ୧୪୯ ଆମର | ୦ | " | ୦ | " | " | ୦ | ୦ |
| ଶୁ | | | | | | | |
| ୧୫୦ ନେକନାମ | ୦ | " | ୦ | " | ରାଜକୋଟ | ୦ | ୦ |
| ୧୫୧ ରାଜପୁର | ୦ | " | ୦ | " | " | ୦ | ୦ |
| ୧୫୨ ଆଟକୋ | ୦ | " | ୦ | " | ନଗର | ୦ | ୦ |
| ଟ | | | | | | | |
| ୧୫୩ ଭାଉସା | ୦ | " | ୦ | " | ନଗର | ୦ | ୦ |
| ୧୫୪ ଉପକୋଟ | ୦ | " | ୦ | " | ଗୋଓଳ | ୦ | ୦ |
| ୧୫୫ ଧୀରସ | ୦ | " | ୦ | " | " | ୦ | ୦ |
| ୩ | | | | | | | |
| ୧୫୬ କୋଟଡା. | ୦ | " | ୦ | " | ନଗର | ୦ | ୦ |
| ୧୫୭ ଗୋଧୁଡୁ- | ୦ | " | ୦ | " | " | ୦ | ୦ |
| ୨ | | | | | | | |
| ୧୫୮ ଝାଞ୍ଜିଆ ଆଖିଆ | | " | ୦ | " | , | ୦ | ୦ |
| ଶୁ | | | | | | | |
| ୧୫୯ ଗଞ୍ଜୋଡ଼. | ୦ | " | ୦ | " | ଗୋଓଳ | ୦ | ୦ |
| ୧୬୦ ଗୁଢାଣୀ | ୦ | " | ୦ | " | ନଗର | ୦ | ୦ |
| ୧୬୧ ଝାଉସା ଶଂଘଳନା | | " | ୦ | " | ଗୋଓଳ | ୦ | ୦ |
| ୧୬୨ ଭୋରଣୀ କାନ୍ଥାନାଂବାସ- | | " | ୦ | " | ଭୋରଣୀ | ୦ | ୦ |
| ଶୁ | | | | | | | |
| ୧୬୩ ଭାଞ୍ଜିଆ ମିଆଣା | ଭଞ୍ଜୁ ପଡ଼ିକୋ | " | | " | ଭାଞ୍ଜିଓ | ୦ | ୦ |
| | କାଠି | | | | | | |
| ୧୬୪ ଟଙ୍କାଝି | ୦ | " | ୦ | " | ଭୋରଣୀ | ୦ | ୦ |
| ୧୬୫ ବାଞ୍ଜୁଆ ଗୋପାଟା ୨ | | " | ୦ | " | ୦ | ଆଂଦର | ତୀର୍ଥ |
| ଆ | ହେ ଓ. | | | | | | |

| | | | | | | | | |
|---|---|----------------|---|-------|--------|---|---|------|
| ૦ | ૦ | પશ્ચિમ | ૦ | ૦ | ” | ૦ | ૦ | ૦ |
| ૦ | ૦ | ” | ૦ | ૦ | ” | ૦ | ૦ | ૦ |
| ૦ | ૦ | વાયવ્ય | ૦ | ૦ | ” | ૦ | ૦ | ૦ |
| ૦ | ૦ | ” | ૦ | ૦ | ” | ૦ | ૦ | ૦ |
| ૦ | ૦ | દક્ષિણ | ૦ | ૦ | ” | ૦ | ૦ | ૦ |
| ૦ | ૦ | અગ્નિ | ૦ | ૦ | ” | ૦ | ૦ | ૦ |
| ૦ | ૦ | ” | ૦ | ૦ | ” | ૦ | ૦ | ૦ |
| ૦ | ૦ | નૈરત્ય | ૦ | ૦ | ” | ૦ | ૦ | ૦ |
| ૦ | ૦ | ” | ૦ | ૦ | ” | ૦ | ૦ | ૦ |
| ૦ | ૦ | દક્ષિણ | ૦ | ૦ | ” | ૦ | ૦ | ૦ |
| ૦ | ૦ | વાયવ્ય | ૦ | ૦ | ” | ૦ | ૦ | ૦ |
| ૦ | ૦ | ” | ૦ | ૦ | ” | ૦ | ૦ | ૦ |
| ૦ | ૦ | નૈરત્ય | ૦ | ૦ | ” | ૦ | ૦ | ૦ |
| ૦ | ૦ | ૦ | ૦ | ૦ | ” | ૦ | ૦ | ૦ |
| ૦ | ૦ | અગ્નિ | ૦ | ૦ | ” | ૦ | ૦ | ૦ |
| ૦ | ૦ | રે.સ્ટે. ઉત્તર | ૦ | ૮૯૯૬૪ | ” કુલ. | ૦ | ૦ | મંદુ |
| ૦ | ૦ | ” | ૦ | ૦ | ” | ૦ | ૦ | મંદુ |
| ૦ | ૦ | ” | ૦ | ૦ | ” | ૦ | ૦ | ૦ |
| ૦ | ૦ | ” | ૦ | ૦ | ” | ૦ | ૦ | ૦ |

| | | | | | | |
|--------------------------------------|----------|---|---|-------------------|------|-------|
| ૧૬૬ મોણપો | ૦ | " | ૦ | ગાયકવાડ વડોદરા | ૦ | ૦ |
| ૨ | | | | | | |
| ૧૬૭ દારકાં રણછોડજીની ઓખા મૂર્તિ મંડળ | ૦ | " | ૦ | જાડેજા ૨-જૂન જપૂત | બંદર | તીર્થ |
| ૧૬૮ કચ્છી- | ૦ | " | ૦ | ગાયકવાડ | " | ૦ |
| ગઢ | | | | | | |
| ૧૬૯ આરંભ-છાપ મારે છે. | " | ૦ | " | " | " | ૦ |
| કું | શંખ ચક્ર | | | | | |
| | જડે છે. | | | | | |
| ૧૭૦ રૂપેણુ-માલ ઉતરે છે | " | ૦ | " | " | બંદર | ૦ |
| બંદર | | | | | | |
| ૧૭૧ પોશિત | ૦ | " | ૦ | " | " | ૦ |
| રૂં | | | | | | |
| ૧૭૨ કીણાકી | ૦ | " | ૦ | " | " | ૦ |
| ૧૭૩ મઠી | ૦ | " | ૦ | " | " | ૦ |
| ૧૭૪ ગોરમ- | ૦ | " | ૦ | " | " | ૦ |
| હી | | | | | | |
| ૧૭૫ વરવાળું | ૦ | " | ૦ | " | " | ૦ |
| ૧૭૬ ગુરગઢ | ૦ | " | ૦ | " | " | ૦ |

ગાયકવાડનાં અમરેલીને ઓખા પ્રગણ્યાબાદ કરતાં તેમાં કુલ ૨૦૫૫૯ ચોરસમૈલ જમીન છે. અને ૨૭૪૩૮૯૯ આદમીની વસ્તી છે. આ હીપકલ્પ છે. પૂર્વ પશ્ચિમ ૨૦૦ મૈલને ઉત્તર દક્ષિણ ૧૭૫ મૈલ છે એમાં ૪૧ કસબા અને ૪૧૨૭ ગામ છે. એમાં પહેલા વર્ગની તથા બીજા વર્ગની ૧૩ એંગ્લો વર્નાક્યુલર સ્કુલો છે. આ એન્ગ્લો-સીમાં રાજકોટમાં લાઇબ્રેરી છે તથા તેમાંથી કાઢીઆવાડ એન્ગ્લો-

| | | | | | | | | |
|---|---|--------|---|---|---|---|---|------------|
| ૦ | ૦ | ” | ૦ | ૦ | ” | ૦ | ૦ | ૦ |
| ૦ | ૦ | પશ્ચિમ | ૦ | ૦ | ” | ૦ | ૦ | રંગે તી |
| ૦ | ૦ | ” | ૦ | ૦ | ” | ૦ | ૦ | ૦ |
| ૦ | ૦ | ” | ૦ | ૦ | ” | ૦ | ૦ | ૦ |
| ૦ | ૦ | ” | ૦ | ૦ | ” | ૦ | ૦ | ૦ |
| ૦ | ૦ | ” | ૦ | ૦ | ” | ૦ | ૦ | ૦ |
| ૦ | ૦ | ” | ૦ | ૦ | ” | ૦ | ૦ | ૦ |
| ૦ | ૦ | ” | ૦ | ૦ | ” | ૦ | ૦ | ૦ |
| ૦ | ૦ | ” | ૦ | ૦ | ” | ૦ | ૦ | ૦ |
| ૦ | ૦ | ” | ૦ | ૦ | ” | ૦ | ૦ | ૦ |
| ૦ | ૦ | ” | ૦ | ૦ | ” | ૦ | ૦ | ૦ |

ન્સી ગેજેટ કાઠિઆવાડ સમાચાર; વિજ્ઞાન વિલાસ એમ બે ન્યુસ-પેપર તથા એક ચોપાનીઈ નીકળે છે, તે સિવાય તમામ મુખ્ય શહેરો; કચ્છાઓ અને માહાલો તેમાં એક એક લાઇબ્રેરી (વાંચન શાળા) ઓ છે. તથા જૂનાગઢમાંથી દસ્તુરલ અમલ અને જ્ઞાન-દિપક અને સૌરાષ્ટ્ર દર્પણ દરમાસે નીકળે છે. અને પહેલાને ખીજ વર્ષના તાલુકદારો તરફથી તે રાજ્યનાં ગેજેટો નીકળે છે; વળી લાંબ-

ડીમાંથી માસિક સાર સંગ્રહ; કવિતા વિલાસ; સુગ્રંથ પ્રકાશ એમ ત્રણ ચોપાનીઆં દરમાસે નીકળે છે.

તેમજ નગરમાંથી માનવધર્મ નામનું ચોપાનીઈ દરમાસે નીકળે છે.

ભાવનગર ગોંડલ રેલવેનાં સ્ટેસનો—ભાવનગર; ગઢચી; વર્તેજ; શિહોર; સોનગઢ; સણોસરા; ઘોળાજંકસન; ત્યાંથી ધોરાજી; સુધી;—જળીઆ; દસા; લાઠી; ચીત્તલ; લુણીધાર; કુંકા વાવ; ખાખ રીઆ; વાવડી; જેતપુર; જેતલસર; ને ધોરાજી; ત્યાંથી જૂનાગઢ રેલવેનાં—જેતલસર; ચોટ્ટી; વડાળ; જૂનાગઢ; ઘોળાજંકસનથી વઢવાણ કાંપ સુધીનાં—ઉજળવાવ; નિંગાળુ; જોટાદ; કુંડલી; રાણપુર; ચૂડા; લીંબડી; વઢવાણ; વઢવાણ કાંપ.

હળશીનો મુલક—જદરાઆદ. **ફીરંગીનો મુલક—**દીવ.

ગાયકવાડી મુલક—અમરેલી; દામનગર; કોડિનાર; ધારી; જોખામંડળ.

ખંદર—ભાવ નગર; ધોધા; ગોપનાથ; મહુવા; જદરાઆદ; વેરાવળ; દીવ; માંગરોળ; નવીખંદર; પોરખંદર, દારકાં, રૂપેણખંદર સત્રાયા; જોડીઆ; વવાણીઆ;

ટંકશાળો—નવાનગર; જૂનાગઢ; પોરખંદર;

જલનાં ઠંડાણાં—પાલીતાણા; ગોપનાથ; ગઢડા; મુળી; તર જોતર; વારાણસ; તુળશીસ્થામ; જૂનાગઢ; ગીરનાર; દાતાર; પ્રભાસ-પટ્ટણ; સુત્રાપાડા; પ્રાગ; માધવપૂર; દારકાં.

ખેડ સંખોધાર વર્ગ—પહેલો—જૂનાગઢ; નવાનગર; ભાવનગર; માંગધા; મેરબી; ગોંડળ; બીજો વર્ગ.—વાંકાનેર; લીંબડી; વ-

ઢવાણુ; પાલીતાણા; જામનાબાદ; રાજકોટ; દ્રાવ. ત્રીજો વર્ગ—સા-
મલા; ચૂડા; લખતર; વળા; જસદણુ; ખાટવા; પોરબંદર.

ચોથો વર્ગ.—મુળી; બજણા; લાઠી; ખીલખા; જેતપુર.

પાંચમો વર્ગ.—ખીલખા; જેતપુર; વડિયા; મેંદરડા; હટ્ટો ચિ-
તલ; લુણીધાર; સનાળા

સાતમો વર્ગ—રાજપરા; ભોઇકા; અકેવાળીયા; તલસાણા;
લીમડા.

આ કાઠિયાવાડ ઈલાકાની નોટ માંહેલી હકીકત જોવા માટે
આ સાથે નકશો રાખ્યો છે.

આ નોટમાં આવેલી બાબતોની પરીક્ષાના સવાલો નીચે પ્રમાણે

ધોરણ ખીજના પરીક્ષાના સવાલો.

૧ વાંચન—૧ ખીજનો પાઠ ૨૦ મો વાંચો; તેની મતલબ બોલો તથા
તેમાંથી શીખામણ લેવાની શું છે?

” ૨ ગાગર, સાંકડુ, બોર, મૂઠો, સલવાઇ, શાયદો, તુકશાન, તેનો
અર્થ શું છે?

” ૩ અંદ્ર, સૂર્ય, ધાતુ, રંગ, પૃથ્વી, ઝાડ, અનાજ, વનસ્પતિ મા-
ણસ, પશુ, ધરને ઇશ્વર તે શું છે, ક્યાંછે અને શાશા ઉ-
પયોગી છે તે હુંકામાં કહો?

૨ કવિતા.—૧ પાઠ ૧૩ નો ખીજો હંદ બોલો? ૨ તેના તાળ

” કયા કયા અક્ષરપર ને કેટલા દરેક ચરણમાં આવે છે તે કહો

” ૩ તેનો રાગ કેવો એટલે હંદ કયો છે, તે કહો; ને રાગ

” કાઢો?

૪ ડિક્ટેસન—૧ વિધે, ધાન્ય, વિન્ધી, બુદ્ધી, લક્ષ્મિ, શક્તિ, પૃથ્વી,
 ” પૂજ્ય, કલ્પ, શિક્ષા, અને સ્નેહ, આ શબ્દો મુજરાતીમાં
 ” લખો.

૪ અંક તથા ધાતો—૧ ૨૪×૧૧૧. ૬૬×૨૧૧. ૮૮×૩૧૧. ૧૮×૧૪
 ” ૩૭×૩૭. ૬૬+૬૬. ૮૭×૦૧ ૭૧ રૂપિયાના આના. ૬ આ
 ” નાની પાછ. ૩૦ પાછના આના. ૫૨ આનાના રૂપિયા. ૫
 ” મણના શેર. ૨૫ શેરના મણ. ૮ શેરના રૂપિયા બાર.
 ” ૧૩૦ રૂપિયાબારના શેર લખો.

૫ અંક ગણિત.—૧-૧૦૭૦૫૦૯. ૮૦૪૩૦૯. ૫૮૫૬૧૦ તે પરિ
 ” માણ લખો?
 ” ૨-૫૦૭૪ બાદબાકી કરો? ૩-૭૫૦૮૪૬૪૦૫ ગુણો?
 ” ૩૭૬૬ ૪-૭૬૪૯૮૦+૫૩૧ ભાગો?

ભૂગોળ—૧ ફલક, લીંબડીને ભોગાવો, કાળુબાર, સુકભાદર,
 ઘેસો, બગડ, શેત્રુંજી બાદર, ઓઝત, ઉબેણુ, આજી અને ઉડ એ
 નદીઓ નકશામાં બતાવો? અને તે ઉપરના શહેરો બોલો; તે સિવા-
 ય તે નદીઓ કયાંથી નીકળી કોને મળેછે; કયા કયા પ્રાંતોમાં થઈ
 જાય છે; વળી કઈ કઈ દિશામાં વહે છે તે કહો?

” ૨. ભાવનગર ગોંડલ રેલ્વેનાં સ્ટેસનો બોલોને નકશામાં બતાવો?

” ૩ જાત્રાનાં ઠેકાણાં બોલોને નકશામાં બતાવો?

” ૪ ટંકશાળો, પર્વતો, ઉપજ તથા નિકાસ તે બોલો ને નકશામાં
 બતાવો?

” ૫ વર્ગ કેટલા તેમાંના તાલુકાનાં નામો તેઓનો અર્થત્યાર અને રાજ્ય

” જાત શું છે, તે કહો ને નકશામાં બતાવો?

,,૬ જાલાવાડ ગોહિલવાડ; ઉંડસરવૈયાવાડ; બાબરીઆવાડ; હાલાર
અને મચ્છુકાંઠો તેની નકશામાં હદ બતાવો, અને તે પ્રાં-
તનાં નામ શાથી પડ્યાં છે તે કહો?

,,૭ પરદેશી રાજ્ય એટલે ઇમેજી; દ્વિરંગી; હબસી; તથા ગાયકવાડ
સરકારનાં રાજ્ય ક્યાં ક્યાં છે તે કહો, અને નકશામાં બ-
તાવો?

,,૮ હવાખાવાની જગો; કપાસ પીલવાના સંચા; છાપખાનાં; હા-
ઈસ્કૂલો તથા કુલ વસ્તી ને ગૂજરાતી નિશાળો તથા !દર
બજારનાર છોકરા; વળી ચોપાનીયાં એ કયે કયે ઠેકાણે; ક્યાં
ક્યાં છે; તેનાં નામ તથા તેની સંખ્યા કહો?

,,૯ બંદર, અખાત, સમુદ્ર, સરોવર, મૂળ, મુખ, રણ, ડુંગર, પો-
લીટીકલ, સંસ્થાન, બેટ, અને તાલુકો કોને કહે છે તેની
વ્યાખ્યા આપો; તેનાં નામ કહો; તથા તે નકશામાં બતાવો?

૧૦ કાઠિઆવાડ ઇલાકાની હદ બતાવો ને તેની સિમા મોઢે બોલો?

૧૧ ધ્રાંગધ્રા, ચરાડતું, લીંબડી, પાણીશિણા, વઢવાણ, વળા, ભાવનગર,

” લીલીઆ, લાઠી, ચીતલ, દાઠા, ચોક, ઉના, જૂનાગઢ, જેતપુર,

” મોરબી, માળીઆ, નવાનગર, ગોંડલ, ધોરાજી, રાજકોટ, ધ્રો

” જ, ખંભાળીઆ, જસદણ, પાળીઆદ, નાગનેશ, પોરબંદર,

” રાણાવાવ, વેરાવળ, જેડીઆ, પાલીતાણા, વાંકાનેર, લખતર,

” સીધા, ગઢડા, મુળી, યાન, શિહાણી, સરધાર, બાલાચડી, દા-

” રકા, પ્રભાસપાટણ, ગીરનાર, અને શેત્રુંજે, એ શું છે, ક્યાં

- ” છે, તે નકશામાં બતાવો, વળી તે શાથી પ્રખ્યાત છે તથા તે-
 ” નું શું વખણાય છે તે જાણો અને રાજકોટથી અગર જ્યાં
 ” તમે રહો છો એટલે તમારા પોતાના ગામથી તે કંઈ કંઈ દિ-
 ” શામાં છે, તે અનુક્રમવાર કહો?
 ૧૨ રૈયત ઉપર રાજની શું ફરજ છે, અને રૈયત તથા રાજ ઉપર
 ” ઈંગ્લેન્ડ સરકાર તથા તેમના પોલીટીકલ એજન્ટનું શું શું કાન-
 મ છે તે કહો?

નિશાળીઆને નિશાળના સંબંધની બાર સારી શીખામણો.

- ” ૧ વખતસર અને નિયમીત રીતે દાખર રહેવું.”
 ” ૨ શરીર તથા કપડાં ચોખ્ખાં રાખવાં”+”૩ વિવેકથી ને નરમાસ-
 થી વર્તવું.”
 ” ૪ પોતાના વર્ગમાંજ રહેવું; આમ તેમ ફરતાં ફરવું નહીં. ”
 ” ૫ પાઠ આલતી વેળા વાતચિત કરવી નહિ.”+”૬ દફતર પાસેનું પા-
 સે રાખવું. ”
 ” ૭ જે લખવાનું હોય તે સંભાળીને લખવું. ”
 ” ૮ પાઠ આલતી વખત બનતાં સુધી વર્ગમાંથી જવાની રજા માગ-
 વી નહિ ”
 ” ૯ વગર રજાએ શિક્ષક સાથે કંઈ બોલવું નહિ. ”
 ” ૧૦ જેમ અને તેમ ઉપર નંબર રાખવા મહેનત કરવી. ”
 ” ૧૧ શિક્ષક કહે તે પર ધ્યાન આપવું; અને તેમની મર્યાદા રા-
 ખવી. ”
 ” ૧૨ હમેશ પોતાના પાઠ સારી રીતે સમજીને તૈયાર કરવા. ”
 અમારી તરફથી ગુજરાતી પ્રાયમરી નિશાળોનાં ધોરણ
 નાં શાળાપંચોગી મળવાના પુસ્તકો નીચે પ્રમાણે.

- નંબર પુસ્તકનું નામ. કીમત ટપા. ખર્ચ
 ૧ બાળ વર્ગ સઘળી બાળતોની ખુલાસાવાર નોટ ૦-૧-૬ ૦-૧-૬
 ૨ પહેલા ધોરણની સઘળી શાળાતોની ખુલાસા-
 વાર નોટ ૦-૨-૦ ૦-૦-૬ *

૩ખીજ ધોરણની સઘળી બાબતોની ખુલાસાવારનોટ ૦-૧-૧ ૦-૦-૧
 ૪ ત્રીજા ધોરણની સઘળી બાબતોની ખુલાસાવાર નોટ ૦-૮-૦ ૦-૦-૧
 ૫ ચોથા ધોરણની સઘળી બાબતોની ખુલાસાવારનોટ ૦-૧૪-૦ ૦-૧-૦
 ૬ પાંચમા ધોરણની સઘળી બાબતોની ખુલાસાવાર નોટ ૧-૪-૦ ૦-૧-૦
 ૭ છઠ્ઠા ધોરણની સઘળી બાબતોની ખુલાસાવારનોટ ૧-૧૨-૦ ૦-૨-૦

“ દસ ઉપરાંત ને પંચી અંદર સુધી રાખનારને ટપાલ ખર્ચ મા-
 ૬ તથા સેકડે દશ ટકા કમીશન મળશે. પચાસ કરતાં જાદે મંગાવ*
 નારને તેના હિસાબે પંદર ટકા કમીશન મળશે તથા ટપાલ ખર્ચ મા-
 ૫ થશે. વેદ્યુપેએબલથી પણ મોકલીશું. સિવાય રોકડા નાણાં મો-
 કલનારને પણ મોકલીશું; પરંતુ ઉધાર મંગાવવાની તરફી કાઢીએ
 લેવીજ નહિ, તેમ છતાં જરૂર હોય તો રીપ્લાઈ કાર્ડથી લખશે તેને ખુ-
 લાસો કરીશું અને જરૂર જણાશે તો ખુકો પણ મોકલવામાં આવશે.
 પરંતુ ખુલાસા માટે નોટપેડ પત્ર લેવામાં નહિ આવે. માટે ખુલાસા
 ની જરૂર હોય, તો રીપ્લાઈ કાર્ડથી લખશે તેને મળશે. ખરીદોને ખાત્રી
 કરો. સમજીને લાયક છે; જે આવી સોના જેવી તક જવા નહિ દેશે.
 ઉપરની સઘળી ખુકોનાં કદ કાગળ, પુંકા છપામણી વિગેરે ખર્ચ ત-
 થા રોકાએલા ઘણા વખત સિવાય વિચાર સાથે લીધેલી મહેનતનાં
 એકંદર હિસાબના પ્રમાણમાં તથા તેના ઉપયોગીપણાના પ્રમાણમાં
 કિંમત ખીજ નિશાળનાં ઉપયોગી પુસ્તકો કરતાં આ કેટલાં ઉપયો-
 ગી તથા કિંમતમાં કમી છે. તે લેઈ અનુભવ કરી મુકાબલેથી ખા-
 ત્રી થશે. આમ કમી કિંમત રાખવાનું કારણ એજ કે પરોપકાર
 થે નિશાળનાં બાળકોનાં ઉપયોગનાં પુસ્તકો જાણીનેજ.

સેવક. કુંવરજી ગગજી ભટ્ટ. (પાણ્ડીજીવાળા). સ. વર્ના

કચુલર સ્કુલ ભારતર આદ્ર મોણપુર

આનન્દી વખતમાં અલ્યાસ ફરવાનું વખત પત્રકું.

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|--------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|
| ૬ થી ૭ | ૧૦ થી ૧૦ | ૧૦ થી ૧૦ | ૧૧ થી ૧૧ | ૧૨ થી ૧૨ | ૧૩ થી ૧૩ | ૧૪ થી ૧૪ | ૧૫ થી ૧૫ | ૧૬ થી ૧૬ | ૧૭ થી ૧૭ | ૧૮ થી ૧૮ | ૧૯ થી ૧૯ | ૨૦ થી ૨૦ | ૨૧ થી ૨૧ | ૨૨ થી ૨૨ | ૨૩ થી ૨૩ | ૨૪ થી ૨૪ | ૨૫ થી ૨૫ | ૨૬ થી ૨૬ | ૨૭ થી ૨૭ | ૨૮ થી ૨૮ | ૨૯ થી ૨૯ | ૩૦ થી ૩૦ | ૩૧ થી ૩૧ | ૩૨ થી ૩૨ | ૩૩ થી ૩૩ | ૩૪ થી ૩૪ | ૩૫ થી ૩૫ | ૩૬ થી ૩૬ | ૩૭ થી ૩૭ | ૩૮ થી ૩૮ | ૩૯ થી ૩૯ | ૪૦ થી ૪૦ | ૪૧ થી ૪૧ | ૪૨ થી ૪૨ | ૪૩ થી ૪૩ | ૪૪ થી ૪૪ | ૪૫ થી ૪૫ | ૪૬ થી ૪૬ | ૪૭ થી ૪૭ | ૪૮ થી ૪૮ | ૪૯ થી ૪૯ | ૫૦ થી ૫૦ | ૫૧ થી ૫૧ | ૫૨ થી ૫૨ | ૫૩ થી ૫૩ | ૫૪ થી ૫૪ | ૫૫ થી ૫૫ | ૫૬ થી ૫૬ | ૫૭ થી ૫૭ | ૫૮ થી ૫૮ | ૫૯ થી ૫૯ | ૬૦ થી ૬૦ | ૬૧ થી ૬૧ | ૬૨ થી ૬૨ | ૬૩ થી ૬૩ | ૬૪ થી ૬૪ | ૬૫ થી ૬૫ | ૬૬ થી ૬૬ | ૬૭ થી ૬૭ | ૬૮ થી ૬૮ | ૬૯ થી ૬૯ | ૭૦ થી ૭૦ | ૭૧ થી ૭૧ | ૭૨ થી ૭૨ | ૭૩ થી ૭૩ | ૭૪ થી ૭૪ | ૭૫ થી ૭૫ | ૭૬ થી ૭૬ | ૭૭ થી ૭૭ | ૭૮ થી ૭૮ | ૭૯ થી ૭૯ | ૮૦ થી ૮૦ | ૮૧ થી ૮૧ | ૮૨ થી ૮૨ | ૮૩ થી ૮૩ | ૮૪ થી ૮૪ | ૮૫ થી ૮૫ | ૮૬ થી ૮૬ | ૮૭ થી ૮૭ | ૮૮ થી ૮૮ | ૮૯ થી ૮૯ | ૯૦ થી ૯૦ | ૯૧ થી ૯૧ | ૯૨ થી ૯૨ | ૯૩ થી ૯૩ | ૯૪ થી ૯૪ | ૯૫ થી ૯૫ | ૯૬ થી ૯૬ | ૯૭ થી ૯૭ | ૯૮ થી ૯૮ | ૯૯ થી ૯૯ | ૧૦૦ થી ૧૦૦ | ૧૦૧ થી ૧૦૧ | ૧૦૨ થી ૧૦૨ | ૧૦૩ થી ૧૦૩ | ૧૦૪ થી ૧૦૪ | ૧૦૫ થી ૧૦૫ | ૧૦૬ થી ૧૦૬ | ૧૦૭ થી ૧૦૭ | ૧૦૮ થી ૧૦૮ | ૧૦૯ થી ૧૦૯ | ૧૧૦ થી ૧૧૦ | ૧૧૧ થી ૧૧૧ | ૧૧૨ થી ૧૧૨ | ૧૧૩ થી ૧૧૩ | ૧૧૪ થી ૧૧૪ | ૧૧૫ થી ૧૧૫ | ૧૧૬ થી ૧૧૬ | ૧૧૭ થી ૧૧૭ | ૧૧૮ થી ૧૧૮ | ૧૧૯ થી ૧૧૯ | ૧૨૦ થી ૧૨૦ | ૧૨૧ થી ૧૨૧ | ૧૨૨ થી ૧૨૨ | ૧૨૩ થી ૧૨૩ | ૧૨૪ થી ૧૨૪ | ૧૨૫ થી ૧૨૫ | ૧૨૬ થી ૧૨૬ | ૧૨૭ થી ૧૨૭ | ૧૨૮ થી ૧૨૮ | ૧૨૯ થી ૧૨૯ | ૧૩૦ થી ૧૩૦ | ૧૩૧ થી ૧૩૧ | ૧૩૨ થી ૧૩૨ | ૧૩૩ થી ૧૩૩ | ૧૩૪ થી ૧૩૪ | ૧૩૫ થી ૧૩૫ | ૧૩૬ થી ૧૩૬ | ૧૩૭ થી ૧૩૭ | ૧૩૮ થી ૧૩૮ | ૧૩૯ થી ૧૩૯ | ૧૪૦ થી ૧૪૦ | ૧૪૧ થી ૧૪૧ | ૧૪૨ થી ૧૪૨ | ૧૪૩ થી ૧૪૩ | ૧૪૪ થી ૧૪૪ | ૧૪૫ થી ૧૪૫ | ૧૪૬ થી ૧૪૬ | ૧૪૭ થી ૧૪૭ | ૧૪૮ થી ૧૪૮ | ૧૪૯ થી ૧૪૯ | ૧૫૦ થી ૧૫૦ | ૧૫૧ થી ૧૫૧ | ૧૫૨ થી ૧૫૨ | ૧૫૩ થી ૧૫૩ | ૧૫૪ થી ૧૫૪ | ૧૫૫ થી ૧૫૫ | ૧૫૬ થી ૧૫૬ | ૧૫૭ થી ૧૫૭ | ૧૫૮ થી ૧૫૮ | ૧૫૯ થી ૧૫૯ | ૧૬૦ થી ૧૬૦ | ૧૬૧ થી ૧૬૧ | ૧૬૨ થી ૧૬૨ | ૧૬૩ થી ૧૬૩ | ૧૬૪ થી ૧૬૪ | ૧૬૫ થી ૧૬૫ | ૧૬૬ થી ૧૬૬ | ૧૬૭ થી ૧૬૭ | ૧૬૮ થી ૧૬૮ | ૧૬૯ થી ૧૬૯ | ૧૭૦ થી ૧૭૦ | ૧૭૧ થી ૧૭૧ | ૧૭૨ થી ૧૭૨ | ૧૭૩ થી ૧૭૩ | ૧૭૪ થી ૧૭૪ | ૧૭૫ થી ૧૭૫ | ૧૭૬ થી ૧૭૬ | ૧૭૭ થી ૧૭૭ | ૧૭૮ થી ૧૭૮ | ૧૭૯ થી ૧૭૯ | ૧૮૦ થી ૧૮૦ | ૧૮૧ થી ૧૮૧ | ૧૮૨ થી ૧૮૨ | ૧૮૩ થી ૧૮૩ | ૧૮૪ થી ૧૮૪ | ૧૮૫ થી ૧૮૫ | ૧૮૬ થી ૧૮૬ | ૧૮૭ થી ૧૮૭ | ૧૮૮ થી ૧૮૮ | ૧૮૯ થી ૧૮૯ | ૧૯૦ થી ૧૯૦ | ૧૯૧ થી ૧૯૧ | ૧૯૨ થી ૧૯૨ | ૧૯૩ થી ૧૯૩ | ૧૯૪ થી ૧૯૪ | ૧૯૫ થી ૧૯૫ | ૧૯૬ થી ૧૯૬ | ૧૯૭ થી ૧૯૭ | ૧૯૮ થી ૧૯૮ | ૧૯૯ થી ૧૯૯ | ૨૦૦ થી ૨૦૦ | ૨૦૧ થી ૨૦૧ | ૨૦૨ થી ૨૦૨ | ૨૦૩ થી ૨૦૩ | ૨૦૪ થી ૨૦૪ | ૨૦૫ થી ૨૦૫ | ૨૦૬ થી ૨૦૬ | ૨૦૭ થી ૨૦૭ | ૨૦૮ થી ૨૦૮ | ૨૦૯ થી ૨૦૯ | ૨૧૦ થી ૨૧૦ | ૨૧૧ થી ૨૧૧ | ૨૧૨ થી ૨૧૨ | ૨૧૩ થી ૨૧૩ | ૨૧૪ થી ૨૧૪ | ૨૧૫ થી ૨૧૫ | ૨૧૬ થી ૨૧૬ | ૨૧૭ થી ૨૧૭ | ૨૧૮ થી ૨૧૮ | ૨૧૯ થી ૨૧૯ | ૨૨૦ થી ૨૨૦ | ૨૨૧ થી ૨૨૧ | ૨૨૨ થી ૨૨૨ | ૨૨૩ થી ૨૨૩ | ૨૨૪ થી ૨૨૪ | ૨૨૫ થી ૨૨૫ | ૨૨૬ થી ૨૨૬ | ૨૨૭ થી ૨૨૭ | ૨૨૮ થી ૨૨૮ | ૨૨૯ થી ૨૨૯ | ૨૩૦ થી ૨૩૦ |
|--------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|------------|

निशाणा वपुतमां अत्थास इरेवान् वपुत पलङ्क.

| | | | | | | | |
|--------|--------|---------|--------|--------|--------|-----------|------------|
| ૭ થી ૮ | ૮ થી ૯ | ૯ થી ૧૦ | ૧ થી ૨ | ૩ થી ૪ | ૫ થી ૬ | ૭ થી ૮ | ૯ થી ૧૦ |
| વાંચન. | કવિતા. | સુગોળ. | શબ્દ. | હિસાબ. | આંક. | પક્ષાંખાં | ધાતો. |
| | | | | | | | અઝમમાં ખા- |

